अंतःदृष्टि, प्रेरणा और अनंत पल

योगी महाजन

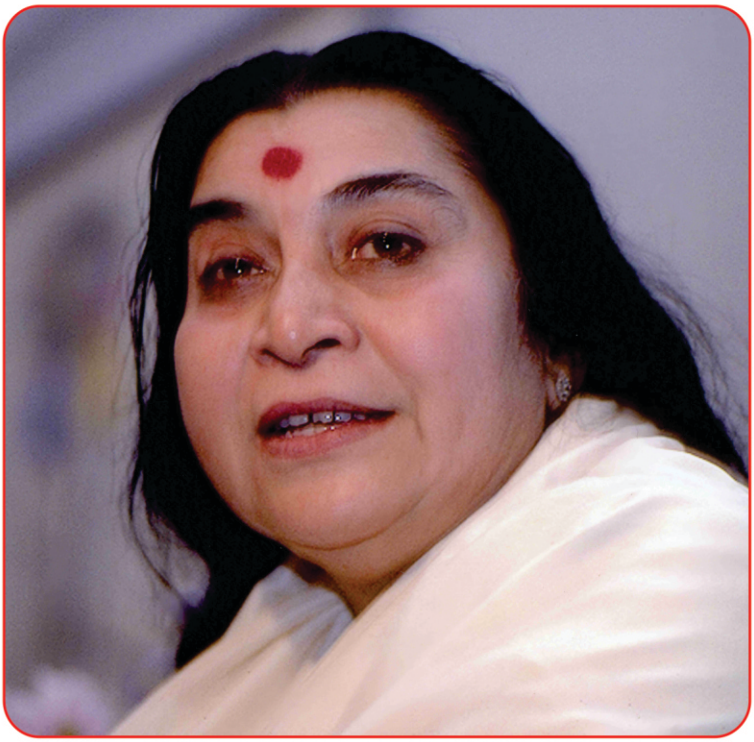

परम पूजनीय श्रीमाताजी
के
चरण कमलों में
समर्पित....

अंतःदृष्टि, प्रेरणा और अनंत पल

योगी महाजन

अंतःदृष्टि, प्रेरणा और
अनंत पल

योगी महाजन

हिन्दी अनुवाद
श्रीमती हेमा गर्ग

अनुक्रमणिका

क्र.	अध्याय	पेज नं.
1.	अध्याय - 1 थोड़ा धीमे चलो...	5
2.	अध्याय - 2 मृत कवि	10
3.	अध्याय - 3 तीन बंदरों वाला सिद्धान्त	13
4.	अध्याय - 4 मातृभूमि 1982 - लोनावाला सेमीनार	15
5.	अध्याय - 5 क्यों डरें, जब वह हमारे हृदय में रहती हैं।	16
6.	अध्याय - 6 आप मेरे मस्तिष्क में हैं।	18
7.	अध्याय - 7 हे देवी, आपने मनुष्य बनने के लिये कितना कुछ सहा है !	20
8.	अध्याय - 8 श्री अन्नपूर्णा	22
9.	अध्याय - 9 बाहर नवीनीकरण व अन्दर की सफाई	24
10.	अध्याय - 10 परम चैतन्य का प्रयोजन	25
11.	अध्याय - 11 समर्पण....	27
12.	अध्याय - 12 जो प्रथम है वही अन्तिम होगा...	29
13.	अध्याय - 13 ऐ पुजारी, तूने यह क्या किया ?	31
14.	अध्याय - 14 आइसक्रीम पर गर्म चॉकलेट...	34
15.	अध्याय - 15 छुपी हुयी ऊर्जा को देखो !	36
16.	अध्याय - 16 वात्सल्य - उनका प्रेम का तरीका	38
17.	अध्याय - 17 "मैं धूल का वह कण बनना चाहता हूँ जो कि खुशबूदार होना चाहता है।"	43
18.	अध्याय - 18 श्री माताजी ने परम चैतन्य का यंत्र बनने का दिया आशीर्वाद	45
19.	अध्याय - 19 मेरे दो नेत्र देवी चमत्कारों को देखने के लिये काफी नहीं।	49
20.	अध्याय - 20 बिखरे हुये दिमाग या एक बिगड़े हुये टर्की को स्थिरता दी।	52
21.	अध्याय - 21 बोलते जाओ....	56
22.	अध्याय - 22 दूर समुद्री किनारों पर गणपति पुले का निर्माण	58
23.	अध्याय - 23 उत्सव के अवसर - सम्मान (अभिनंदन)	62
24.	अध्याय - 24 वह कभी भी हम पर नहीं छोड़ती थीं।	66
25.	अध्याय - 25 A grain of Rice (चावल का दाना)	68
26.	अध्याय - 26 "वरदान माँगो"	72
27.	अध्याय - 27 उनका एक हाथ नहीं जानता था कि दूसरा क्या देता है !	74
28.	अध्याय - 28 सब यहाँ से इधर-उधर चले जाओ !	76
29.	अध्याय - 29 सहजयोग का भविष्य	78
30.	अध्याय - 30 हमें बाहरी चमक-दमक में नहीं खो जाना चाहिये	81
31.	अध्याय - 31 पैसा फ़िजूल खर्च ना करो...	86

क्र.	अध्याय	पेज नं.
32.	अध्याय - 32 यह सब बहुत पहले घटित हुआ था या हुआ ही नहीं हो !	87
33.	अध्याय - 33 श्री गणेश मध्यस्थता करते हैं...	90
34.	अध्याय - 35 एक बदतमीज़ पत्रकार	91
35.	अध्याय - 36 एक पाठ जो बहुत देर से पढ़ा	93
36.	अध्याय - 37 क्यों नहीं सिर्फ़ पके हुये खाने को खाकर आनंद लिया जाय ?	95
37.	अध्याय - 38 लिखते जाओ....	102
38.	अध्याय - 39 कैसा लगता है जब आप अपनी पुस्तक स्वयं पढ़ते हो?	107
39.	अध्याय - 40 "जो मैं हूँ वही तुम हो..."	118
40.	अध्याय - 41 विवाह...	121
41.	अध्याय - 42 सूफी	122
42.	अध्याय - 43 पुनर्जन्म...	125
43.	अध्याय - 44 (Discretion) विवेक	127
44.	अध्याय - 45 वह सिद्धि देने वाली है...	131
45.	अध्याय - 46 मेरी एक ही चिंता	135
46.	अध्याय -47 चिदूविलास	137
47.	अध्याय -48 वैधव्य	139
48.	अध्याय -49 डैडी, वह वहाँ मौजूद थीं	146
49.	अध्याय -50 कौतुक	154
50.	अध्याय -51 अन्तरयामी	157
51.	अध्याय -52 तुम्हारे हृदय की दृष्टि	160
52.	अध्याय -53 आल्हादूदायिनी	163
53.	अध्याय -54 अमेरिकेश्वरी	166
54.	अध्याय -55 श्री योग क्षेम दायिनी	169
55.	अध्याय -56 क्यों परेशान हो ?	176
56.	अध्याय -57 शत्रु को पहचानना	179
57.	अध्याय -58 ईश्वरीय प्रेम की कला को कौन जानता है ?	182
58.	अध्याय -59 निर्विचारिता ही तुम्हारा किला है !	185
59.	अध्याय -60 108 चाइना प्लेट	188
60.	अध्याय -61 रक्षाबंधन	192
61.	अध्याय -62 तुम तत्त्वों में व्याप्त हो जाते हो।	195
62.	अध्याय-63 कबूतरों की सामूहिकता	199
63.	अध्याय-64 पीली पत्रकारिता	201
64.	अध्याय-65 गाड़ी खरीदी गयी	204
65.	अध्याय-66 माताश्री	209

अध्याय - 1

थोड़ा धीमे चलो...

दोपहर के बाद सूर्य की रोशनी किले के सिंहासन कक्ष में फैली हुयी थी, लेकिन उसकी चमक श्री माताजी की दिव्य आँखों की रोशनी के सामने फीकी थी। श्री माताजी के आँखों की चमक अपने बच्चों की कमियों को उजागर नहीं कर रही थी बल्कि उनकी प्रतिभा बढ़ा रही थी। कितना खूबसूरत दृश्य था, कितना भाग्यशाली दिन था।

बच्चे श्री माताजी से प्रार्थना कर रहे थे कि ''हम आपकी उपासना उसी तरह करते हैं जैसे सूर्य देवता आपकी प्रातःकाल में करते हैं। कृपया, हमें सदा ही अपने चरणों में रखिये।

देश-विदेश के प्रतिनिधि आये व श्री माताजी के दरबार में उनके श्री चरणों में नतमस्तक हुये। उनकी प्रतिभाएँ, योग्यता उनके चेहरे की चमक बढ़ा रही थी। श्री माताजी प्रेम के प्रवाह में बोलीं ''मेरे बच्चों, इतने थोड़े समय में तुम इतनी जल्दी कैसे अपने उत्थान को पा गये।''

उनकी आँखें अपने बच्चों पर प्रेम लुटा रही थी ''मुझे आशा है कि बरसात का पानी तुम्हारे शिविरों में नहीं घुसा होगा, जब पिछली रात बहुत बरसात हुयी थी (छोटी गंगा नदी कल रात की बरसात के बाद उफन रही थी 30 जुलाई कबैला 1990 - कृष्ण पूजा)

''नहीं, श्री माताजी, हम सब छोटे बच्चों की तरह आपके प्रेम के बंधन में बंधे सो गये थे।''

''कितने अमरीकी आये हैं ?''

''उनकी संख्या हमारी उम्मीद से ज्यादा हो गयी है।''

श्री माताजी प्रसन्न हुयी।

इटली के मेजबान ने आकर खबर दी ''मेयर ने सवेरे बात की थी और पूजा शिविरों की अनुमति दे दी।''

जय श्री माताजी

मेरे बचपन के सपने बहुत ही मजेदार थे और मुझे अचरज था कि वे कभी सच भी होंगे। मैं पत्थरों को इकट्ठा करती और कहती कि क्या ऐसे लोग भी होंगे जो पत्थर नहीं बल्कि सहृदय होंगे ?

ईश्वर कृपा से मैं आप लोगों से मिली।

आप सभी का सहयोग अपनाने के लिये मैं धन्यवाद देती हूँ।

(श्री माताजी दिवाली पूजा, टिवोली 1985)

उन्होंने पूछा, ''तुम्हें कबैला कैसा लगा ? चैतन्य देखो, ये कश्मीर से भी ज्यादा खूबसूरत है।

सभी बच्चों ने हामी भरी।

उनकी आँखों की चमक बढ़ गयी, ''अब आगे क्या ?''

देश-विदेश के प्रतिनिधियों ने अपनी परेशानी बताई।

उन्होंने (श्री माताजी) चाय मंगवाई।

श्री माताजी के हाथों से तैयार हुआ स्वादिष्ट केक खाते हुये बातचीत धर्मशाला स्कूल पर आकर टिकी। ''श्री माताजी, क्या हम बच्चों के लिये कम्प्यूटर्स का इन्तज़ाम करें ?''

उनकी मुस्कुराहट धीमी हो गयी, ''इतने छोटे बच्चों के लिये कम्प्यूटर्स की क्या आवश्यकता है ?''

''श्री माताजी, हमारे देशों में तो कम्प्यूटर्स बहुत पहले ही पाठशालाओं की प्राथमिक कक्षाओं में चालू कर दिये गये हैं।''

''आपने किसी उम्र में कम्प्यूटर सीखा ?''

''श्री माताजी, जब हम पाठशाला गये थे, तब कम्प्यूटर अस्तित्व में नहीं आये थे।''

''कितना समय लगा आपको कम्प्यूटर सीखने में ?''

श्रीमाताजी - एक महीने सीख लिया।

''और तुमने ?''

''छः महीने।''

श्री माताजी अपनी आँखों के कोनों से मुस्कुरायी, ''तब क्या जल्दी है? सारा ज्ञान बच्चों के अन्दर ही है। जब वह बड़े होंगे, तब जल्दी ही सीख जायेंगे।''

सामूहिकता के प्रकाश की चमक धीमी पड़ गयीं।

उनकी रोशन मुस्कुराहट ने सामूहिकता में नया जोश भर दिया। ''आह ! मैं कुछ चाँदी के श्री गणेश लायी हूँ, आप सबके लिये। वह उपलकुलपति है स्कूल के, सारा ज्ञान जो उनमें है, वे ही सभी को देंगे।

''श्री माताजी, धन्यवाद !''

दृश्य - 2

दो साल के बाद - सहज स्कूल धर्मशाला 1992

इस डर से कि हमारे बच्चे कहीं पीछे ना रह जायें, बच्चों के माता-पिता ने चार कम्प्यूटर्स स्कूल को भेंट किये।

बच्चे बहुत प्रसन्न हुये, लेकिन वे यह नहीं जानते थे कि कम्प्यूटर्स गेम्स को कितना समय देना चाहिये। गेम खेलने में ना तो ऊर्जा, न कोशिश

और न ही प्रतिभा की आवश्यकता होती है। स्टाफ ने सब कुछ संतुलन में लाने की सारी कोशिशें की लेकिन बेकार बच्चों की गेम खेलने की लत लग गई और उनकी अबोधिता, उनकी रचनात्मकता सब में सेंध लगने लगी।

दृश्य - 3

स्कूल के बच्चों ने और खाली समय की माँग बढ़ाई।

क्यों ?

'गेम खेलने के लिये''

सप्ताहान्त में उन्हें बाहर जाने की इजाज़त थी। उनका पहला व महत्त्वपूर्ण कार्य यही था कि भाग कर इन्टरनेट कैफे (डल लेक) पहुँचे व गेम खेलें।

पिछले शनिवार को जब मैं डल लेक की तरफ घूम रहा था तब मेरी नज़र स्कूली बच्चों के झुंड पर पड़ी जो कि साइबर कैफे को घेरे हुये था। वे बड़े मजे से इन्टरनेट पर ऐसे उत्तेजित करने वाले प्रोग्राम सर्च कर रहे थे जो कि मर्यादा से परे थे। मैं चकित था और अपने दिमाग को शान्त करने की कोशिश डल झील की नहरों को देखते हुये करने लगा।

श्री माताजी के शब्द जो उन्होंने शनिवार दोपहर जुलाई 1990 में कहे थे, मेरे जेहन में कोंधे। हमारी प्रेममयी श्री माताजी बहुत ही प्रेम से हमारे बच्चों को बचाने के प्रयत्नों में लगी थी, और हम किस तरह अंजान बन गये कि हमारी सोच वहाँ तक ना पहुँच पाई।

क्या जल्दी थी बच्चों के चित्त की कम्प्यूटर ज्ञान से बोझिल होने की ? हम उन्हें उनकी अबोधिता का आनंद लेने से क्यों रोक रहे थे ? उनकी रचनात्मक बुद्धि को क्यों कुंठित करना चाहते थे ? जब उनकी आत्मा उनके मस्तिष्क में प्रकाशमान होती, तब उनमें सद्विवेक होता कि उन्हें इन्टरनेट को सकारात्मक तरीके से कैसे काम में लेना है। लेकिन अगर यह समय से पूर्व ही बच्चों को मिल गया तो उनके गेम खेलने की लत को कैसे रोका जा सकता है।

दूसरा हमारा चित्त हमारी कुण्डलिनी में निहित है, और उसके वाइब्रेशन ही चित्त को परिपक्व बनाते हैं। एक ही ग्रेड के सभी बच्चों में एक जैसा चित्त का स्तर हो नहीं सकता। कुछ देर से खिलते हैं, अपने माता-पिता के चक्रों की पकड़ के कारण, इत्यादि। जबकि धीरे-धीरे चित्त की भेदन-शक्ति लेज़र की तरह हो जाती है। वही बात है कि एक आत्म साक्षात्कारी बच्चा बहुत जल्दी सीखता है जबकि एक सामान्य बच्चा जो कि आत्म साक्षात्कारी नहीं है सीखने में कई सप्ताह लगा लेता है।

यही नहीं, एक आत्म साक्षात्कारी बच्चे की साक्षी अवस्था उसमें एक आश्चर्यजनक योग्यता देती है जिससे सारा ज्ञान, सारी बातें एक वीडियो की तरह उसके दिमाग में बैठ जाती है और यही बात है कि सारा ज्ञान उन्हीं के अन्दर है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम उन्हें उस मुकाम तक लेकर जायें कि वे (ज्ञान) जागृत हो जाये। ये कार्य उनकी कुण्डलिनी द्वारा ही होता है।

ये बात नहीं है कि कम्प्यूटर बुरी चीज है, लेकिन उसमें महारथ हासिल करें, ऐसी बच्चों को छूट नहीं देनी चाहिये। आइन्सटीन ने भी कुछ ऐसा ही कहा था, ''कि एक प्रतिभावान मस्तिष्क ईश्वर की देन है जबकि एक तुलनात्मक मस्तिष्क एक वफादार नौकर की तरह है।'' हमने एक ऐसा समाज बना लिया है जो नौकर का सम्मान करता है और ईश्वर के उपहार को भूल जाता है।

जब हम इन्टरनेट के संसार में जीते हैं, तब उसके हर एक विचार को हम अकाट्य सच समझ लेते हैं।

इसी में हम अपनी मौलिकता खो देते हैं व मशीनी व्यक्तित्व (रोबोटिक) बन जाते हैं। इससे भी पहले, इससे भी अधिक यदि हमें प्रेम में जीना है तो यह महत्त्वपूर्ण है कि हम देवी माँ के, प्रकृति के जीवित कार्यों से जुड़ें।

***

अध्याय - 2

मृत कवि

''तुम मृत्यु की बातें क्यों करना चाहते हो ?

जबकि मैं अनन्त जीवन के बारे में बताने आयी हूँ'' - श्री माताजी

सहज स्कूल, धर्मशाला 1991 में प्रारम्भ हुआ था। श्री माताजी ने स्कूल के संचालन के लिये जो दिशा-निर्देश दिये थे, वे एक पुस्तिका ''एज्यूकेशन एनलाइटन्ड'' में संलग्न है। उन्होंने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया था कि टीचर्स घड़ी को हाथ कभी नहीं लगाएँगे और उसकी जगह स्टाफ़ को बच्चों को ठीक करने के लिये अपने वाइब्रेशन बढ़ाने होंगे। टीचर्स ने पूरे मन से इसे माना।

शुरूआत में अनुशासन को लेकर कोई मुद्दा नहीं था क्योंकि ज्यादातर बच्चे रोम स्कूल या आस्ट्रेलियन प्री स्कूल से आये थे, लेकिन जैसे ही स्कूल प्रोग्रेस करने लगा, बड़ी क्लासेज़ लगने लगी। तब कुछ बच्चों ने सीधे ही बड़ी क्लासेज़ में प्रवेश लिया, लेकिन उनके वाइब्रेशन संतुलन में नहीं थे। अपने साथ बहुत सारी नकारात्मकता लेकर आये थे। हमने श्री माताजी से पूछा कि क्या हमें उनकी नकारात्मकता को प्रभावहीन करने के लिये हवन करना चाहिये ? उन्होंने कहा कि वे काफी दाँयी तरफ झुके हुये हैं और उनमें भक्ति भी नहीं है। इसलिये अधिक पूजाओं की जरूरत है।

उसके बाद पूजाएँ बराबर होने लगी और हमें आशा थी कि सामूहिक सकारात्मकता (चैतन्य) उनकी नकारात्मकता को समाप्त कर देगा (नये बड़े बच्चों की)। दुर्भाग्य से हुआ इसके विपरीत। पुराने छोटे बच्चे उन नये बच्चों के रंग में रंगने लगे। स्टाफ़ बहुत ही परेशान था कि क्या करें ? उन्हें

बाहर निकाल दें या फिर रहने दें। इस तर्क को सबकी सहमति मिली कि आखिर ये बच्चे कहाँ जाएँगे ? उनका क्या होगा ? हमें उन्हें बचाना है।

बातें बाद में पता लगी कि जाने कब इन बच्चों ने एक गैंग बना लिया और मृत कवियों के बारे में एक फिल्म को देखा (बड़े दुस्साहस से)। उन्होंने एक गुप्त सोसायटी बनाई और आधी रात को जंगलों में गुम हो जाते जहाँ वे मृत कवियों को बुलाते व उनकी नकल करते। तत्पश्चात् उन पर उन्हीं मृत कवियों की आत्माओं ने कब्जा कर लिया। वे बहुत ही गन्दे तरीके से व्यवहार करने लगे।

एक बच्चे के माता-पिता वहाँ आये तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि अचानक ही वहाँ के वाइब्रेशन कैसे खराब हो गये, उन्होंने कारण पता किया। उन्होंने श्री माताजी को कबैला फोन किया और इस संकट की जानकारी दी। श्री माताजी ने प्रिंसीपल को निर्देश दिया कि जल्द से जल्द इन बच्चों को स्कूल से बाहर निकालें, रेस्टीकेट करें। प्रिंसीपल ने याचना की कि ''ये बच्चे कहाँ जाएँगे, इनका क्या होगा ?

श्री माताजी ने कहा कि, ''क्या तुम मुझसे ज्यादा करुणामय हो। नकारात्मकता के साथ कोई सहानुभूति नहीं। मृत लोगों का प्रभाव (Possession) ना केवल फ़िल्मों से बल्कि वीडियो, टीवी, नेट व मोबाइल फोन से भी आता है।''

उनकी असीमित करुणा ने महसूस किया कि एक मुट्ठी भर नकारात्मक बच्चों को सामूहिकता को नुकसान पहुँचाने की छूट नहीं दी जा सकती। एक मछली यदि तालाब को गंदा करती है तो उसे निकाल देना चाहिये। इसके अलावा स्कूल स्टाफ़ को ये अधिकार नहीं दिया गया कि वे इन Possessions को दूर करें और इसलिये बच्चों की सामूहिकता के हित के लिये यही बेहतर

था कि उन्हें सही इलाज के लिये उचित जगह पर भेजना चाहिये। यह भूत बाधित बच्चों की सजा नहीं थी बल्कि उनकी भूत बाधिता को दूर करने के लिये था और उन्हें फिर से संतुलन में लाने की तैयारी थी।

श्री माताजी प्रेम का सागर है, वह कभी किसी को सजा नहीं देती। उनकी करुणा ऐसी है कि उन्हें तब तक चैन नहीं आता जब तक प्रत्येक बच्चा बचा न लिया जाए। किसी भी क्षण बच्चे उनके चित्त से बाहर नहीं थे। उन्होंने बच्चों के माता-पिता को निर्देश दिये कि किस तरह उन्हें अपने बच्चों को बचाना है उनकी भूतबाधिता को कैसे हटा सकते हैं। उनकी प्रत्येक गतिविधियों को बारीकी से देखें जब तक वे बिल्कुल ठीक ना हो जाए।

दवाइयाँ जो पहले कड़वी लगती है वही अक्सर अधिक प्रभावी होती है जैसी कि संभावना थी, विश्वास था -वैसा ही हुआ, सभी भूतबाधित बच्चे विवेकशील हो गये, बड़ी खुशी से रहने लगे। उन्होंने बहुत ही महत्त्वपूर्ण ज्ञान को पा लिया था। आज वे समाज के मजबूत खंभे बने हुये हैं और मानव कल्याण के लिये बिना रूके निरन्तर लगे हुये हैं।

***

अध्याय - 3

तीन बंदरों वाला सिद्धान्त

दिसम्बर 1991 में इण्डिया टूर कोल्हापुर पहुँचा। उन्हें महालक्ष्मी मंदिर के स्वयंभू के दर्शन करवाने के बाद, श्री माताजी मंदिर के सामने वाली चाँदी की दुकान पर रूकी ! शादियों (सहज) के लिये चाँदी के बर्तन खरीदने के लिये। उन्होंने उस दुकान के मालिक एस. गोविन्द को आत्म साक्षात्कार दिया। अगले ही दिन उसने दुकान के ऊपर एक सेन्टर खोल दिया।

आगामी वर्ष उसने इण्डिया टूर वाले सहजियों को अपने घर दिन के भोजन के लिये बुलाया। जिस पल श्री माताजी ने उसके घर में पैर रखा, उसकी माँ को दौरा सा पड़ा और वह चिल्लाने लगी। उनकी आत्मा ने श्री आदिशक्ति को पहचान लिया और अपनी भूत बाधा को दूर फेंकने की कोशिश मैं चिल्लाने लगी। लेकिन उनके अहंकार ने उसे आज्ञा नहीं दी कि वह श्री माताजी को पहचाने। पन्द्रह मिनट तक वह भूतबाधितों की तरह कभी हँसती कभी चिल्लाती रही, आखिर उन्हें वहाँ से हटाना पड़ा। पूरी घटना को वीडियो टीम ने रिकार्ड कर लिया।

कुछ साल बाद औरंगाबाद से आये एक सहज योगी अपनी पत्नी के साथ एस. गोविन्द से मिलने आए, एस. गोविन्द ने उन्हें वह वीडियो दिखाया। जब सहज योगी की पत्नी ने गोविंद जी की माँ का भूतबाधा वाला वीडियो देखा, उसने उस भूत बाधा को अवशोषित कर लिया और उसी तरह चिल्लाने लगी। उसका पति उसे जल्दी से गाड़ी में बिठाकर ले गया, लेकिन उसकी पत्नी चलती गाड़ी में से कूद गयी और अपने कपड़े फाड़ने लगी। यह व्यवहार करीब सात दिन तक चलता रहा। उस योगी ने श्री माताजी को पूना

फोन किया। श्री माताजी ने बताया कि नकारात्मकता उसकी आँखों से उसमें प्रवेश कर गयी है। आँखें नकारात्मकता को टेलीविजन और फिल्म कलाकारों से ग्रहण कर लेती है, अगर हम उन पर ध्यान केन्द्रित करें। नकारात्मकता का भण्डार उनकी आँखों में ट्रांसफर हो जाता है। यही कारण है कि लोग फिल्मी सितारों की नकल करने लगते हैं।

श्री माताजी ने वाइब्रेटेड कुमकुम व जल भेजा। उस जल को पीते ही, कुमकुम को आज्ञा पर लगाते ही बाधा भाग खड़ी हुयी और वह ठीक हो गयी।

इस तरह हम एक दूसरे की राय से भी उनकी नकारात्मकता को ग्रहण कर लेते हैं, खासतौर से इन्टरनेट की। श्री माताजी ने हमें सिखाया है कि हमें प्रतिक्रिया नहीं करनी है बल्कि चैतन्य को देखना है। अगर कुछ सामूहिकता में परेशानी है, तो हमें वाइब्रेशन देखने चाहिये और फिर परम चैतन्य पर छोड़ देना चाहिये। इस काल में श्री कल्कि की शक्ति बहुत ही ताकतवर है लेकिन हमें उनके लिये जगह देनी होगी। अपना दिमाग नहीं लगाना चाहिये।

मेरी पचासवीं सालगिरह पर श्री माताजी ने मुझे तीन बंदरों की मूर्तियों का सेट दिया जिस पर गाँधी जी का सिद्धान्त लिखा हुआ था- बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो।

ध्यान से पहले मैं अपना ही निरीक्षण करता हूँ कि मैंने इस सिद्धान्त को कितना पीछे छोड़ दिया है और तब मैं अपनी प्रेममयी माँ से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे इतनी शक्ति दे कि मैं इन तीन बंदरों वाले सिद्धांत को अपने में उतार सकूँ, उनकी पालना कर सकूँ।

***

अध्याय - 4

मातृभूमि

1982 - लोनावाला सेमीनार

पश्चिमी सहजयोगियों का पूजा जाने का प्रोग्राम था। हर वर्ष पूजा के सहजयोगी उन्हें भिन्न-भिन्न उपहार दिया करते थे। उन्होंने श्री माताजी से उपहार देने के बारे में राय माँगी। पिछले वर्ष उन्होंने अगरबत्ती होल्डर की राय दी थी। इस वर्ष उन्होंने महाराष्ट्र की चैतन्यित मिट्टी देने की राय दी।

उनकी राय के अनुसार हरएक को वही मिट्टी छोटी सुन्दर डिब्बी में खूबसूरती से रख कर दी। आस्ट्रेलिया के कॉ-ऑरडीनेटर ने उन पैकेट्स को शिप से आस्ट्रेलिया भेजने का फैसला किया। जब यह बात परम पूज्य श्री माँ को पता लगी तब उन्होंने प्रश्न किया, ''अगर मैं तुम्हें चाँदी का सिक्का देती, तब क्या तुम उसे जहाज़ से अपने घर भेजते ?''

उन्होंने बताया कि किस तरह दिमाग तोहफों की कीमत को तोलता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि उन्होंने तोहफे में उन्हें यह मिट्टी इसलिये देने की राय दी ताकि वह उसमें पौधा उगा सके, और यह सब तरफ चैतन्य फैलाये। सबसे ज्यादा कीमती ऊर्जा, जीवन्त ऊर्जा है, जब वह बढ़ती है तब रूकी हुयी नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त कर देती है।

मैं स्वयं उन लोगों की भलाई की ज्यादा परवाह करती हूँ जो कि मेरी साधना पूरे चित्त से करते हैं।

जो कोई सबसे ज्यादा साधना करेगा (भले ही वह हारता रहे)
उनके पास जो है वह मैं बढ़ा दूँगा
और मैं वह भी दूँगा, जो उनके पास नहीं है

भगवत् गीता (XI, 22)

अध्याय - 5

क्यों डरें, जब वह हमारे हृदय में रहती हैं।

श्री माता एक साधक पर कार्य कर रही थीं। उस व्यक्ति पर कार्य करने का मेरा पहला अनुभव अच्छा नहीं था, मुझे काफ़ी नकारात्मकता का सामना करना पड़ा था। जब श्री माता ने उस पर कार्य आरंभ किया, मैंने बाहर जाने में ही भलाई जानी। श्री माताजी ने एकदम से मेरी प्रतिक्रिया को देख लिया और मुझे अंदर बुलाया। उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे अपने डर का सामना करना चाहिये और उससे बाहर निकलना चाहिये। जब उन्होंने उस पर कार्य किया तब मुझे भी उसके चक्रों को स्वच्छ करने के लिये कहा। मुझे डर लगा, लेकिन मैंने स्वयं को याद दिलाया कि श्री माताजी ही कर्ता है, बराबर कहता रहा कि श्री माताजी आप ही सब कुछ करती है, मैं कुछ भी नहीं करता।

शुरूआत में मुझे बहुत सारी गर्म हवा महसूस हुयी, लेकिन जैसे-जैसे पकड़ खत्म होती गयी, मैंने ठण्डक महसूस की। वह आनंद से नाच उठा, उसे देखकर मेरे सहस्त्रार में आनंद की लहरें बहने लगी। पहली बार, मेरी कुण्डलिनी ने उठ कर नृत्य किया और मुझ पर आनंद बरसाने लगी। ऐसा अनुभव कई दिनों तक महसूस होता रहा और मैंने पाया कि मेरा सवेरे का ध्यान स्वतः ही बहुत अच्छा होने लगा। मेरे चित्र की निर्विचारिता बढ़ने लगी और आनंद कभी न खत्म होने वाला हो गया।

श्री माताजी ने यह सच्चाई बताई, ''मैं जानती हूँ कि तुम मुझे बहुत प्रेम करते हो, मैं भी तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ, लेकिन मेरे और तुम्हारे बीच में बाकी सभी सहजयोगी है, तुम्हें उन्हें भी प्यार करना है। दूसरों के प्रति

करुणा रखो। तुम्हें पकड़ आती है क्योंकि तुममें करुणा नहीं है। एक माँ को अपने बच्चों की बीमारी कभी नहीं पकड़ती क्योंकि वह उससे प्रेम करती है। अगर तुम अपना हृदय खोल दोगे, बिना डर के, तब तुम्हें कोई भी पकड़ नहीं आएगी।

उन्होंने साधक से पूछा कि तुम्हें इतनी पकड़ कैसे आ गयी। उसने उत्तर दिया, ''क्योंकि मेरा हृदय खुला हुआ है।''

वह बहुत हँसी। एक खुले हृदय को डरने की आवश्यकता नहीं है यह डर ही है जिससे पकड़ आती है।

सौभाग्य की देवी मुस्कुराई !

वह व्यक्ति जो आपके नाम को अपने भीतर रखते हैं

फिर उसे डरने का क्या है ?

***

अध्याय - 6

आप मेरे मस्तिष्क में हैं।

श्री माताजी की कृपा से अस्सी के दशक में सहज योग के कई नये सेन्टर खुले। श्री माताजी ने उनमें लीडर्स चुने जो कि नये सहजयोगियों का ध्यान रख सके। दुर्भाग्य से कुछ लीडर्स में नकारात्मकता आ गयी और उन्हें हटाना पड़ा। उन्होंने बताया कि उनकी नकारात्मकता नये सहजयोगियों में चली जाती है, जिन्हें उन्होंने आत्मसाक्षात्कार दिया था। उन्होंने उन नये योगियों से पूछा कि ''क्या उन्होंने तुम्हें आत्म साक्षात्कार मेरे फोटो के सम्मुख दिया या बिना फोटो के ?''

उन्होंने जवाब दिया कि ''आपके फोटो के सम्मुख''

''तब वह मैं थी, जिसने तुम्हें आत्मसाक्षात्कार दिया, इसलिये कोई कारण नहीं कि तुम उनका एहसान मानो, भूल जाओ उनको।''

नकारात्मक पकड़ चली गयी।

श्री माताजी ने आदेश दिया कि उनके फोटो के सम्मुख ही आत्म साक्षात्कार देना चाहिये तब एक से दूसरे में पकड़ नहीं आएगी इसमें आत्मसाक्षात्कार देने वाले को भी नये साधकों से पकड़ नहीं आएगी।

नये साधक अक्सर यह प्रश्न करते हैं ''क्या श्री माताजी का फोटो सामने रखकर ही ध्यान करना चाहिये, क्या यह जरूरी है।''

वे स्वयं ही इसका जवाब दे सकते हैं अगर वे यह प्रयोग करके देखें।

प्रथम, बिना फोटो के ध्यान करें, जल्दी ही आप भ्रमित हो जाएँगे व आपका चित्त इधर-उधर भागने लगेगा और यह एक आनन्दहीन प्रयोग बनकर रह जाएगा।

ऐसे ध्यान का क्या फायदा अगर उसका अन्त आनन्दहीन हो। दूसरा उनके फोटो को सामने रखकर ध्यान करें, उनके फोटो से बहने वाला चैतन्य आपकी कुण्डलिनी को एकदम से जगा देगा व आप विचारहीन अवस्था में आ जाएँगे। आपके हृदय का अन्दरूनी कोना देवी माँ की उपस्थिति के आनंद से रोमांचित हो जाएगा। अगर देवी प्रसन्न हो गयी तो उनका आनंद आपके सहस्त्रार को प्रेम व करुणा से भरकर विशाल कर देगा।

उन्होंने निम्नलिखित प्रार्थनाएँ हमारे ध्यान की गहराई को बढ़ाने के लिये बताई।

(1) श्री माताजी, आप ही मेरी रक्षा करती है जब मैं अपने जीवन की चुनौतियों का सामना करता हूँ।

(2) श्री माताजी, आपकी कृपा से मैं अपने उत्थान मार्ग की सभी बाधाओं पर विजय पाऊँगा।

(3) श्री माताजी, कृपा कर मेरे मस्तिष्क में पधारिये।

***

अध्याय - 7

हे देवी, आपने मनुष्य बनने के लिये कितना कुछ सहा है !

1989 में अन्ध श्रद्धा निर्मूलन ग्रुप के लोगों ने श्री माताजी पर, एक पब्लिक प्रोग्राम में, अंगापुर (ब्रह्मपुरी के पास) में पत्थर फेंके। श्री माताजी को बचाने के लिये (पत्थरों से) मैं उनके आगे आता, लेकिन हर बार वह मुझे हटा देती। परेशान होकर मैंने उन्हीं से प्रार्थना करनी शुरू कीं। मेरी प्रार्थनाओं के जवाब में उन्होंने मुझे ज्योर्तिमय परम चैतन्य की दीवार दिखायी जो उनकी रक्षा किये हुये थी। उसमें सभी देवी देवता विराजमान थे।

मैं आर्य समाजी था, मेरी धारणा के अनुसार मैं एक ही निराकार ईश्वर में विश्वास रखता था, देवी-देवताओं में मेरा विश्वास नहीं था। इसलिये यह दृश्य मेरे जीवन को बदलने वाला बन गया। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। मैंने समझ लिया कि ऐसा सिर्फ इसलिये हुआ कि संकट की इस घड़ी में ही देवी माँ ने अपनी शक्तियाँ दिखायी हैं। बिल्कुल वैसे ही जैसे श्रीकृष्ण ने अर्जुन को रणभूमि में अपना विराट स्वरूप दिखाया था।

किस तरह परमेश्वरी माँ ने मेरे विश्वास को गहरा किया और उसे ज्योर्तिमय विश्वास में परिवर्तित कर दिया जिसे निर्विकल्प समाधि कहते हैं। पहले मैं अपने चक्रों की शारीरिक स्थिति पर ध्यान करता था लेकिन अब मेरा चित्त देवी-देवताओं की प्रार्थनाओं पर चला गया। पहली बार मैंने समझा कि श्री माताजी का क्या तात्पर्य था, ''कि सहजयोग एक जीवन्त क्रिया है।''

हाँ, देवी देवता जीवन्त है और जब उन्हें प्रसन्न किया जाता है, तब श्री माताजी जो कि सहस्त्रार की देवी है, प्रसन्न होती है और तब इसका दरवाजा एकदम से खुल जाता है, किसी प्रयत्न की हमें जरूरत नहीं होती।

सैकड़ों पत्थर उन पर फेंके गये पर कोई भी परम चैतन्य की दीवार को पार नहीं कर पाया, जबकि 18 योगी जो कि स्टेज पर थे, जख्मी हो गये।

श्री माताजी ने देखा कि एक व्यक्ति, जिसका नाम परांजपे था, वह नेशनल टेलीविजन चैनल से था, उस घटना की रिकॉर्डिंग कर रहा था और उसे उसी ग्रुप का आदमी समझा गया। श्री माताजी को दिल्ली में गृहमंत्री से मिलकर इस घटना की जानकारी देनी थी, उन्होंने इस आदमी का नाम भी लिस्ट में शामिल कर दिया। जैसे ही वह मंत्री के घर पहुँची, उनके साथ-साथ सतारा की महारानी ने प्रवेश किया जिनके साथ परांजपे भी था। वह वहाँ अपने पुत्र के विवाह का निमंत्रण देने आयी थीं।

जैसे ही परांजपे ने श्री माताजी को देखा, वह उनके चरणों में गिर गया और कहने लगा कि वह उनका भक्त है।

श्री माताजी थोड़ा पीछे हटीं और पूछताछ की कि वह अंगापुर में रिकॉर्डिंग क्यों कर रहा था ? उसने बताया कि वह नेशनल टेलीविजन के लिये रिकॉर्डिंग कर रहा था, और उसका अंध श्रद्धा ग्रुप से कोई सरोकार नहीं था।

श्री माताजी मुस्कुराई, ''देखो, परम चैतन्य मेरे हाथों, कुछ भी गलत होने की आज्ञा नहीं देता।''

उन्होंने शिकायत पत्र में से उसका नाम हटा दिया, और महारानी व गृहमंत्री को आत्म साक्षात्कार का आशीर्वाद दिया।

श्री माताजी जो भी करती है, वह एक आशीर्वाद है। हाँ, वह इम्तिहान लेती है, लेकिन यह पक्का है कि वह अन्याय कभी नहीं करती। इसी तरह जब हम किसी को गलत समझ लेते हैं, तब भी परम चैतन्य नाटक रचकर सारी सच्चाई उजागर कर देते हैं।

***

अध्याय - 8

श्री अन्नपूर्णा

श्री माताजी ने पूजा की सामूहिक नाभि खोलने की इच्छा की और सोचा कि सभी के नाभिचक्र को आशीर्वाद करने के लिये एक रेस्टोरेन्ट में चैतन्यित्त भोजन उपलब्ध कराना, एक बहुत ही आदर्श अवसर है। हमने उनके घर के आस-पास ही एक उपयुक्त जमीन खोजनी शुरू की। कुछ समय की तलाश के बाद और बंधन देने के बाद मैंने कोथरूड में स्वयं के घर के सामने बिल्कुल मुख्य सड़क पर एक जमीन पायी। 1994 में उसकी बिकवाली पूरी हुयी।

एक दिन मैंने उस प्लाट की चारदीवारी बनती देखी। पूछताछ के बाद पता चला कि पड़ौसी उस पर अपना हक जता रहा है। झगड़े का कारण यह था कि जमीन के मालिक ने उस बड़े प्लॉट के कई हिस्से करके बेचे थे, वह भी अलग-अलग में, बिना रैवेन्यू डिपार्टमेन्ट में डिमार्केशन करवाये। जो जमीन बेची गयी कागज (एग्रीमेन्ट) पर, वह नाप-जोख से मेल नहीं खा रही थी। यानि कि जमीन पेपर पर साम्य नहीं था।

मैं बहुत चिंतित हुआ और स्वयं को उस परेशानी का कारण समझने लगा। श्री माताजी ने उसी समय मेरे लीवर की बाधा को देखा व मामले का पता लगया। मैं उन्हें हालात की जानकारी दी। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि इसमें मेरी कोई गलती नहीं है और मुझे सरकार में डिमार्केशन के लिये आवेदन कर देना चाहिये।

मैंने हर कोशिश की कि सरकारी सीमांकन (डिमार्केशन) मिल जाय और यहाँ तक कि सिविल कोर्ट में जाकर कई प्रक्रियाएँ शुरू भी की लेकिन बात कुछ भी नहीं बनी। मैं दोषभाव से ग्रसित हो गया कि मेरी वजह से श्री माताजी का इतना पैसा बेकार गया। बहुत सारे वर्ष बीत गये, मैंने सभी सहज के तरीके आजमा लिये लेकिन इस नकारात्मकता को दूर नहीं कर पाया।

अचानक 2007 में, मैं एक गाड़ी खरीद रहा था, कार डीलर ने मुझसे पूछा कि क्या मैं कोई व्यावसायिक जमीन के बारे में जानता हूँ जो कि मेरे ही घर के आस-पास हो ? मैंने उसे श्री माताजी की जमीन दिखायी और उसे सारी सरकारी अड़चनों के बारे में स्पष्ट रूप से बताया। आगामी सप्ताह में वह डील हो गयी।

कोई भी ऐसी जमीन क्यों खरीदना चाहेगा जो सिर्फ कागजों में हो और वास्तविकता में नहीं हो ??? और वह भी बाजार भाव से ?? मैंने उस जमीन को 4,50,000 में खरीदी थी और 70,00,000 रु. में बिकीं।

यह क्या हो सकता है, यह तो ईश्वरीय कार्य ही था। उस अनुभव ने मुझे उनके देवत्व के बारे में नयी ही समझ दी। मैं जान गया कि सत्य कभी भी विस्तारित या विवेचित नहीं किया जा सकता क्योंकि ये मानव मस्तिष्क (सीमित) के परे है। सत्य को ज्यों का त्यों स्वीकार करो और उसी तरह जब कार्य सिद्ध न हो रहा हो तो प्रश्न भी नहीं करो। सत्य लुका-छुपी का खेल खेलता है लेकिन सही वक्त आने पर यह अचानक उजागर हो जाता है जैसे बादलों से निकलता हुआ सूर्य और हमें आनंद से भर देता है। इसी ऋतंभरा प्रज्ञा कहते हैं।

श्री माताजी हँसी, ''कभी-कभी यह नटखट बच्चे की तरह होता है और कभी-कभी प्राचीन धीर गंभीर संत की तरह।''

मैंने सीख लिया कि ऋतंभरा प्रज्ञा के सुन्दर नाटक को देखना आना चाहिये, ज्यादा चिन्ता नहीं करना चाहिये। जैसे ऋतंभरा प्रज्ञा ऋतुओं की शुरूआत व अन्त को व्यवस्थित कर उन्हें एक सूत्र में बाँधती है ताकि हर ऋतु अपना चक्र पूरा कर सके व आने वाली ऋतु उसका स्थान ले सके (ये प्रकृति क्रम है), इसी तरह सत्य भी तभी परिभाषित होता है जब इसकी ऋतु पल्लवित हो जाती है और यह अपने साथ आनंद और सुन्दरता लाती है। ऐसे बिल्कुल विभिन्न ऋतुएँ जो कि प्रकृति की देन है, हमारे जीवन को सुन्दर बनाती है।

अध्याय - 9

बाहर नवीनीकरण व अन्दर की सफाई

1991 में श्री माताजी ने कबेला का किला खरीदा। कुछ ही समय में उन्होंने इसका नवीनीकरण शुरू किया। सारे विश्व के योगियों ने अपनी सेवाएँ दीं। वहाँ लगातार चाय व नाश्ते के ब्रेक होते और लगातार बातें होती। श्री माताजी का शयन कक्ष रसोई के ऊपर ही था और बातचीत का शोर उन्हें परेशान करता था।

एक दिन शाम के ध्यान के समय उन्होंने बताया कि हमें कैसे अपने भीतर के मौन से जुड़ना चाहिये, ''जो भीतर ही समर्पित है, वे बातें नहीं करते। वे मौन का आनंद लेते हैं। मौन में वे मुझसे जुड़ जाते हैं, वे जानते हैं कि मुझे क्या चाहिये। मेरी उपस्थितिच में वे धैर्य से मेरे बोलने की प्रतीक्षा करते हैं। वे हर शब्द को अवशोषित कर अपने दिमाग में रख लेते हैं, हृदय में रख लेते हैं, लीवर में रख लेते हैं। उनके दिमाग में ये शब्द उन्हें सत्य का ज्ञान देते हैं, हृदय में आनंद देते हैं और जिगर में उन्हें पवित्र, मंगलमय कार्य करने की दिशा देते हैं।

उनके प्रेम ने दिशा ही बदल दी और नयी समझ दी कि कासल का नवीनीकरण तो बहाना था, बल्कि उन्हें हम पर कार्य करना था, हमें प्रेम से सँवारना था। यही नहीं बल्कि हमें बताना था कि कैसे एक अशान्त सागर से मोती निकालने हैं और कैसे उनकी चमक को एक साथ एक ही स्तर पर लाना है।

''मुझे और मय मत दो
मैं उनके प्रेम को पी चुका
यहाँ तक कि जो पीये हुये है
वह भी अपनी वास्तविकता में आ गये हैं
यह मय तुम्हारे नशे को क्या जाने-?

अध्याय - 10

परम चैतन्य का प्रयोजन

1991 में श्री माताजी गणपति पुले से लौट रही थी, मैं उनके साथ गाड़ी में था और एक योगिनी, दीपा-मगूदम जो कि उनकी सेवा में थीं, वह पीछे वाली गाड़ी में थी। यह एक थकान प्रद सप्ताह था, श्री माताजी गाड़ी की पिछली सीट पर सो गयीं। थोड़ी देर में मौसम बहुत ठण्डा हो गया। अक्सर वह जब सोती थीं, तब स्वयं को शॉल या कम्बल से ढ़क लेती थी।

तभी दीपा की कार, हमारी कार के आगे आ गयी एवं हमें ठहरने का इशारा किया। दीपा कार से बाहर शॉल लेकर निकली और उसने श्री माताजी को ढ़क दिया।

श्री माताजी गहन प्रेम से भर गयी और बोली, ''सहजयोगियों का प्रेम मुझ से इस तरह से जुड़ा है कि वह जानते हैं कि मेरी क्या जरूरत है ? अगर मुझे कुछ चाहिये, तब वह पूछते नहीं बल्कि उसे पूरा करते हैं, जैसे मुझे शाल की जरूरत थी, दीपा ने जान लिया, गाड़ी रुकवाई व मुझे दी। जब मैं प्यासी होती हूँ, वह मुझे पानी देती है, बिना मेरे माँगे।''

अगर कोई सहजयोगी श्री माताजी पर चित्त रखना है, वह जानता है कि उन्हें क्या चाहिये (बिना उनके बताये) इसी तरह यदि हमारा चित्र सहस्त्रार पर है, हर वह चीज जिसकी हमें जरूरत है, हमें उसी वक्त मिल जाती है।

इसी तरह यदि हमारा योग सहजयोगियों की सामूहिकता पर है तब किसी भी योगी को उसकी जरूरत की चीज उसी वक्त मिल जाती है। हाल ही में वाशिंगटन में एक पब्लिक प्रोग्राम था। एक सहजयोगी ने कोई उत्तरदायित्व लिया था, लेकिन वह अन्तिम समय में उस कार्य को नहीं कर पाया। बिना उन परिस्थितियों को जाने दूसरे योगी ने उस कार्य को ऐच्छिक (वॉल्यून्टरी) रूप से करके उसे फौरन निपटा दिया।

अगर हम एक दूसरे से जुड़े रहें तब एक अदृश्य योग-शक्ति हर कार्य को चुपचाप कर देती है। एक दूसरे के प्रति जुड़ाव (Concern) हमारी कुण्डलिनियों को परम चैतन्य से जोड़ देती हैं, तब परम चैतन्य सारी जिम्मेदारी ले लेता है व कार्य शुरू कर देता है।

दूसरों का ध्यान रखना, कार्यों के प्रति जुड़ाव और अभी हाल जो इराक-सीरिया के शरणार्थियों के प्रति हमारी सामूहिकता का Concern, इससे वैश्विक नेताओं के सोचने का ढंग का बदलना, अत्यन्त सुखद परिवर्तन था। उनका व्यवहार व शरणार्थियों के प्रति मानवता पूर्ण नजरिये ने उनके देश की सोच के खिलाफ काम किया।

परम चैतन्य हमेशा कार्यरत रहता है।
परम चैतन्य प्रेम को प्रदर्शित करना जानता है।
यह कभी भी समाप्त न होने वाला अनुभव है।
यह अपना रूप बदल सकता है,
लेकिन इसका सत्त्व वही रहता है।
जहाँ तक प्रेम के सत्त्व की बात है,
भले ही कोई गलत कार्य करता है,
परम चैतन्य का ध्येय उसे ठीक करना ही है,
यह कभी क्रूर लग सकता है कभी स्नेह भी,
लेकिन यह वास्तव में हमें ठीक करने के लिये कार्यरत है।
अगर तुम यह बात समझ जाओ
तब तुम कभी निराश नहीं होओगे।''

श्री माताजी (जर्मनी 1988)

***

अध्याय - 11

समर्पण....

1999 में न्यूयार्क में नेशनल सेमीनार होना था, और मैंने अपने कुछ मित्रों को भारत से बुलाया था। कुछ समय पूर्व ही मैंने उन्हें सहज योग बताया था। आत्मसाक्षात्कार दिया था। मैं अपना कर्त्तव्य समझकर उनका ध्यान रख रहा था, और बहुत समय उनके साथ बिता रहा था।

श्री माताजी ने इसे देखा और कहा, ''तुम किसी के भी लिये जिम्मेदार नहीं हो। आत्म साक्षात्कार के बाद हर एक योगी मेरे ही शरीर की कोशिका है व मैं उनकी देखभाल करती हूँ। अगर तुम उनकी जिम्मेदारी ले लोगे तो वह मुझे समर्पित नहीं हो पायेंगे और उसके अलावा तुम पाँचवें आयाम की अवस्था तक नहीं जा पाओगे।''

मैंने महसूस किया कि उनकी जिम्मेदारी का वहन करते हुये मेरी आज्ञा व नाभि चक्र में पकड़ आ गयी है। सच्चाई यह थी कि मेरा नाभि चक्र उनकी सारी बाधाओं को मेजबान (host) बन गया था। उल्टा मेरे नजदीक रहने से उनके चक्रों पर मेरी बाधाएँ दिखायी दे रही थी। यह आवश्यक था कि मैं उन्हें जरूरी स्वतंत्रता देता अपने आप उत्थान की ओर जाने की, स्वयं ही परिपक्व होने की और तब वह अपने भीतर माँ के प्रेम को महसूस करते।

श्री माताजी के प्रेम को हर कोई अपने हृदय चक्र में महसूस कर सकता है। इस तरह कोई भी किसी से भी संबंधित नहीं हो सकता, चाहे वह उसका मित्र हो, रिश्तेदार हो, पति या पत्नी या माता-पिता हो।

अगर हृदय खुला नहीं है, तो कुछ भी हो परमेश्वरी प्रेम उसमें बह नहीं सकता। बाकी सभी नये लोगों की तरह, मेरे मित्रों के भी अनेक प्रश्न थे। मैंने

उनसे कहा कि तुम श्री माताजी से प्रश्न मत पूछो, बल्कि अपना चित्त उन प्रश्नों पर रखो, तुम्हें जवाब मिल जायगा।

निःसंदेह मैंने पूरी कोशिश की कि उनकी उत्सुकता उस बिन्दू पर पहुँच जाये, जहाँ उन्हें अपने प्रश्नों के जवाब मिल जाये।

मैंने समझ लिया कि उन्हें बच्चों की तरह खिलाना मेरा कार्य नहीं है। यह श्री माताजी है जो उनकी देखभाल करती है। सबसे अच्छा यही था कि उन्हें माँ की छत्रछाया में छोड़ दिया जाय। वह जानती थी कि उनके लिये सबसे अच्छा क्या था और कैसे उन्हें स्थापित किया जाय। एक ही तत्त्व जो कि बहुत ही सादा व आसान था, वह था समर्पण।

बहुत लोग पूछते हैं कि ''समर्पण कैसे करें'' या तो तुम हो या नहीं हो- यह निर्भर करता है कि तुम स्वयं को क्या समझते हो ?

''जब तुम अस्तित्व ही नहीं हो तो, तुम अस्तित्व में रह नहीं हो सकते।''

- श्री माताजी

अध्याय - 12

जो प्रथम है वही अन्तिम होगा...

युन्गियन सोसायटी के अध्यक्ष ने निरीक्षण किया व बोला, ''श्री माताजी, आप समय में विश्वास नहीं करतीं।''

दिसम्बर 1991 में श्री माताजी ने धर्मशाला स्कूल के बच्चों को 'प्रतिष्ठापन' लंच पर बुलाया। खाने के बाद हर क्लास के बच्चों को बुलाया गया और उपहार दिये। जब मेरी बेटी प्रज्ञा की क्लास के बच्चों को बुलाया गया, तब उसके मित्रों ने उसे खड़े होकर सबसे पहले उपहार लेने के लिये कहा। श्री माताजी मेरी ओर मुड़ी, ''तुम इस स्कूल के इंचार्ज हो, इसलिये तुम्हारी बेटी सबके बाद उपहार लेगी।''

यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण शिक्षा मुझे मिली क्योंकि हम लोगों की आदत है कि हम सबसे आगे अपने बच्चों को लेकर आगे बैठ जाते हैं ताकि श्री माताजी का ध्यान अपनी ओर केन्द्रित कर सकें। हम यह नहीं समझते कि इस तरह हमारा बच्चा अपना अधिकार और बच्चों से ज्यादा समझने लगता है कि हम ही आगे बैठे और इस तरह उनका अपना अहंकार बढ़ने लगता है। इस शिक्षा को समझ कर मैंने अपने बेटी को पीछे किया, वह काफी संकोची थी, इस तरह पीछे जाना उसे बहुत अच्छा लगा।

अगले दिसम्बर माह में बच्चों को श्री माताजी ने बड़ी उदारता से उपहारों का आशीर्वाद दिया। लेकिन इस बार जब मेरी बेटी की क्लास को बुलाया गया, मेरी बेटी नहीं उठी। श्री माताजी यह देखकर प्रसन्न हुयी। जब बच्चे वापिस जा रहे थे उन्होंने उसे बुलाया और एक अलग से उपहार ओर दिया।

अगले दिन पूजा में श्री माताजी ने हमें पुनः याद दिलाया, ''प्रथम अन्तिम होगा और अन्तिम प्रथम होगा।''

उनके निर्देश की पालना करते हुये, हम सभी जो आगे बैठे थे, पीछे चले आये। उन्होंने पीछे बैठने वालों को आगे बुलाया।

लेकिन ठहरो.... क्या तुमने सुना नहीं जो उन्होंने कहा जिन्होंने मुझे नहीं देखा, उनका विश्वास मेरे प्रति ज्यादा है।....

एक इरानी योगिनी ने मुझे बताया कि यह मुझसे ईर्ष्या (Jealousy) भाव रखती है। क्योंकि मैं श्री माताजी के साथ देखा जाता हूँ जबकि उसे कभी मौका नहीं मिला कि वह उनके दर्शन भी कर सकें।

मैंने जवाब दिया, ''मैं आपसे ईर्ष्या रखता हूँ क्योंकि बिना उनके दर्शन के आपको उनमें इतना विश्वास है जबकि हम उनके इतना साथ रहते हैं फिर भी हमारा विश्वास डगमगाता रहता है।''

बिना ध्यान के ही तुम ध्यान में रहोगे,
बिना मेरी उपस्थिति के तुम मेरी उपस्थिति में होगे
बिना आशीर्वाद माँगे तुम परम पिता से आशीर्वादित होंगे।

- श्री माताजी (पेरिस सहस्त्रार पूजा 84)

अध्याय - 13

ऐ पुजारी, तूने यह क्या किया ?

सामूहिकता एक कर्कश व अग्रणी लीडर से बहुत परेशान थी जो लगातार उन्हें सहज प्रॉटोकॉल के बारे में बहुत ही कड़े रूप में बताता व टोका करता था। उसकी दबंग प्रवृत्ति की बहुत सारी शिकायतें श्री माताजी के पास पहुँची।

उन्होंने साँत्वना दी, ''तुम्हारी आत्मा को कोई भी दबा नहीं सकता। ना तुम्हें ही दबा सकता है। तुम्हारा मुझसे सीधा योग है।

हालाँकि शिकायतें लगातार होती रही, उन्होंने याद दिलाया, मैं उस पर कार्य कर रही हूँ और तब तक तुम ही अपनी सहन करने की शक्ति क्यों नहीं बढ़ा लेते।

जब श्री माताजी पधारे, उसने श्री माताजी की सारी जिम्मेदारी लेनी चाही और हर जगह उनके साथ रहा। एक बार श्री माताजी ने किसी ओर योगी से अपने साथ उसकी जगह चलने को कहा। उसे इतना बुरा लगा कि उसने संस्था से ही त्याग कर दिया। सामूहिकता बहुत प्रसन्न हुयी, ''एक बुरे बेकार व्यक्ति से अच्छा छुटकारा मिला।''

लेकिन श्री माताजी उसके लिये परेशान थी वह दुःखी होकर बोली, ''तुम्हें ऐसा नहीं बोलना चाहिये, वह बेचारा कहाँ जाएगा उसका क्या होगा, अगर वह मेरी सुरक्षा से बाहर हो गया। तुम लोग उसकी लौट आने की इच्छा करो।''

हमने उसे मानसिक तौर पर क्षमा कर दिया, हृदय से नहीं। घाव अभी ताज़े थे और हमारे हृदय उसकी वापसी की प्रार्थना करना भूल गये। एक महीने बाद उसका जबर्दस्त एक्सीडेंट हो गया।

जब श्री माताजी ने उसके बारे में सुना, उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे, ''मेरा हृदय मेरे बच्चों के लिये दुखी है। मेरे सभी बच्चे मेरे प्रेम प्रवाह के चैनल है। लेकिन मैं क्या कर सकती हूँ जब मेरे चैनल जिसमें प्रेम बहता था, अब उसी चैनल में गंदा जल बहने लगे तो। यह सत्य है मैं किसी को भी सज़ा नहीं देती, लेकिन देवी देवता उन्हें नहीं छोड़ते। मैं तुम लोगों के लिये देवताओं से प्रार्थना करके उन्हें तुम्हारे गलत कार्यों के लिये क्षमा करने को कहती हूँ। वह मेरी बात मान भी जाते हैं लेकिन मैंने इंसानों को पूरी आज़ादी दी है। सामूहिकता की एकता बहुत ताकतवर है और चमत्कार कर सकती है। अगर सामूहिकता शुद्ध इच्छा रखे तो समाज की, संसार की बड़ी से बड़ी परेशानियाँ भी हल हो सकती है। लेकिन इसे दूसरी तरह भी काम में लिया जा सकता है जैसे तुम लोगों की सामूहिक इच्छा उस व्यक्ति को सज़ा देने की थी, वही काम कर गयी और इसलिये उसे बचाया नहीं जा सका। मैं तुम लोगों की आज़ादी नहीं छीन सकती लेकिन तुममें करुणा होनी चाहिये कि उसे कैसे काम में ले।''

मैंने अर्न्तदृष्टि (Introspection) किया। मैंने अपने रेखीय मानसिक गति से जाना कि अगर A = B, B = C, तब A = C हुआ, सही, और जैसे को तैसा मिला। लेकिन यह देवी के हथियारों की लिस्ट में नहीं था।

याद रखें, अगर हमें उनके यंत्र की तरह काम करना है तब हमें वह हथियार (tools) काम में लेने होंगे, जैसे देवी हम पर आशीर्वादित करती है। विराट के मस्तिष्क में यदि जगह बनानी है तो कोई ओर मार्ग नहीं है सिवाय इसके कि हम महत् अहंकार व महत्मना के सिद्धान्त को माने - तब क्यों हम अपने अंहकार व प्रति अहंकार के गुब्बारों को फुला कर अपनी माँ कुण्डलिनी की शुद्ध इच्छा को दबायें।

क्या कहना व क्या माँगना है ? लेकिन कैसे अपने बड़े भाई, श्री गणेश से अबोधिता का हथियार माँगे ? वह जो कि शुद्ध चेतना है, अबोधिता के तत्त्व है और अपने हृदय में किसी तरह का मैल नहीं रखते।

एक लकड़हारा (वुडकटर) अपना दिन ईश-आराधना में व्यतीत करता था। वह आकाश की ओर देखकर प्रार्थना करता- हे प्रभो, हर क्षण में आपका सुमिरन करता हूँ, लेकिन आप मेरे झोंपड़े में नहीं पधारते। कृपया स्वर्ग से उतर कर आइये, मैं आपके चरणों को धोकर जल ग्रहण करूँगा।

मैं दिन-रात आपकी सेवा करूँगा।

जो कुछ भी कमाऊँगा पहले आपको समर्पित करूँगा। जब वह यह सब प्रार्थनाएँ कर रहा था, एक पुजारी वहाँ से गुजरा और उसे लताड़ा, 'कि परमात्मा जरूर तुम्हारी ऐसी प्रार्थनाओं के लिये तुम्हें सज़ा देंगे।

लकड़हारे का दिल टूट गया।

अचानक ईश्वर का एक दूत उसके पास आया और कहा,

'ऐ पुजारी, यह तूने क्या किया ?

तूने एक अबोध भक्त को ईश्वर से छीन लिया।

तुम्हें तो इंसानों को ईश्वर से योग करने के लिये भेजा था।

लेकिन तुमने उन्हें अलग कर दिया।''

प्रेम अपने आप में एक प्रोटोकॉल है,
लेकिन यह प्रेम आत्मा का होना चाहिये।

- श्री माताजी

अध्याय - 14

आइसक्रीम पर गर्म चॉकलेट...

1976 में मेरा चेरिटेबल ट्रस्ट एक स्कूल व एक आयुर्वेदिक क्लिनिक सफदर जंग एनक्लेव, नयी दिल्ली (अब सहज सेन्टर) में चलाता था।

मैंने श्री माताजी से प्रार्थना की कि क्लिनिक को आशीर्वाद दें। हमारे वैद्यजी ने दावा किया कि एक ऐसी दवाई आयुर्वेद में है, जिससे सभी बीमारियों का इलाज हो सकता है।

श्री माताजी आयुर्वेद की प्राकृतिक पहुँच की तारीफ करती थी, उन्होंने बताया, ''हमारी बाँयी नाड़ी, दाँयी नाड़ी से भिन्न है, बाँयी ओर की समस्या ठंडक से संबंधित नाड़ी को गर्मी की व गर्म से संबंधित नाड़ी को ठंडक की आवश्यकता होती है। इसलिये तुम इन दोनों नाड़ियों का एक जैसा इलाज कैसे कर सकते हो ?''

उसने जवाब दिया, ''इलाज में ठंडा व गर्म दोनों ही निहित है जैसे आइसक्रीम पर गर्म चॉकलेट''

श्री माताजी बहुत जोर से हँस पड़ीं।

मेरा यह पूछना था कि हम इस आयुर्वेद क्लीनिक का क्या करें ?

उन्होंने जवाब दिया, ''जड़ी बूटियाँ कुछ बीमारियों के इलाज के लिये काम ली जा सकती है, लेकिन उस विधि को चैतन्यित करना चाहिये। मैं आपको दाँयी व बाँयी नाड़ी के इलाज के लिये कुछ विधि बताऊँगी। दाँयी तरफ के लिये शक्कर व जामुन के पाउडर को मिला कर चैतन्यित करें।

बहुत सालों तक वह कई विधियाँ बताती रहीं। वह विधियाँ घरेलू विधियों की तरह ही थीं, लेकिन इनका प्रभाव परम चैतन्य पर निर्भर करता

था। नब्बे के दशक के अंत में, उनकी आज्ञा लेकर इन दवाइयों को जरुरतमंद योगियों के लिये तैयार किया गया। उन्होंने इस कार्य को आशीवार्दित किया व संस्था को 'वनदेवी' नाम दिया। उसकी माँग चारों ओर बढ़ने लगी व 1999 में वनदेवी संस्था ने कंपनी का रूप ले लिया। माँग बहुत बढ़ गयी तब मैनेजमेन्ट ने फॉर्मूलों को आउटसॉर्स करने का फैसला किया। लेकिन वह दवाइयों को चैतन्यित न कर पाये। इससे दवाइयों ने अपना प्रभाव खो दिया। जब यह बात श्री माताजी को बतायी गयी, तब उन्होंने 'वनदेवी' को बंद कर दिया। जो लोग इन दवाइयों को बना रहे थे, उनकी पकड़ इन दवाओं में चली गयी थी।

तब बहुत सारे योगियों ने इन विधियों को पुनः शुरू करने की कोशिश की। लेकिन जब कोई उस दवाई को वाइब्रेट करता उसके वाइब्रेशन उन दवाइयों के तत्त्व को भेद देते। वाइब्रेशन्स पॉजीटिव या नेगेटिव कुछ भी हो सकते थे, इसलिये यह सुरक्षित तरीका था कि चीनी, नमक, हल्दी, कुमकुम व अजवाइन को उनके फोटो के सामने वाइब्रेट किया जाय। उन्होंने बताया, ''हर एक तत्त्व के पीछे एक देवता है, जब तुम उसे मेरे सामने रखकर वाइब्रेट करोगे, तब वह वाइब्रेट होंगे।''

***

अध्याय - 15

छुपी हुयी ऊर्जा को देखो !

1991 में श्री माताजी ने अपना घर लंदन से मिलान शिफ़्ट होने का मन बनाया। उनके रिहायशी घर को खोज में, हमने मिलान के पास एक किला (परियों के देश जैसा) ढूँढ़ा। श्री माताजी ने उसे पसन्द किया और कीमत तय की गयी। किले का मालिक अग्रिम रकम चाहता था, लेकिन श्री माताजी उसकी पूरी कीमत रजिस्ट्रेशन के बाद एक साथ देना चाहती थीं। मालिक माना नहीं और डील नहीं हो पायी।

हम थोड़ा निराश हुये और हिम्मत करके बोले, ''लेकिन किला बहुत अच्छा था, थोड़ा अलग हट के था।''

उन्होंने कहा कि ''यह बात मेरे लिये मायने नहीं रखती।''

उसके बाद लगातार एक अच्छे मकान की तलाश जारी रही। एक पब्लिक प्रोग्राम में कबेला के मेयर ने श्री माताजी को उनके गाँव का किला देखने के लिये आमंत्रित किया। उसे किले का ऊपर जाने का रास्ता बहुत ढलान वाला था, जिस पर उनकी गाड़ी (Lincoln) नहीं चढ़ सकती थी और उन्हें पैदल ऊपर जाना पड़ा। किला बहुत ही धूल मिट्टी से भरा हुआ लावारिस सा था। हर एक दरवाजे को जब मेयर ने खोला हमारा स्वागत कई सारे कबूतरों ने किया। कमरे जालों से अटे हुये थे, उनका नाती उस जगह का मजाक बनाने लगा। श्री माताजी कुछ समय चुप रही और गुस्से में घूमी, ''हँसो मत, मैं यह किला खरीदने जा रही हूँ।''

श्री माताजी ने हर एक कमरे का निरीक्षण किया, और जैसे ही यह निरीक्षण लंच टाइम से आगे बढ़ा, पास्ता होटल का मालिक पेस्टो पास्ता

किले में लेकर आ गया। श्री माताजी ने बहुत मन से उसके पास्ता की तारीफ की और कहा, ''जब तुम्हारा हंसा चक्र खुल जायगा, तुम में विवेक आ जाएगा और तुम जगह की महत्ता (उर्जा) जान पाओगे और बाहरी दिखावे से धोखा नहीं खाओगे। मैं यहाँ जबरदस्त ऊर्जा को महसूस कर सकती हूँ (इस किले की)। यह मिलान वाले किले से काफी बड़ा है, मिलान वाला किला भव्य लगता था लेकिन इसमें ऐसी ऊर्जा नहीं थी। तुम देखो, यहाँ छत के नीचे इतनी जगह है कि एक अतिरिक्त फ्लोर (तल) और निकाला जा सकता है।''

ना केवल उन्होंने उस किले को पहले वाले किले से आधी कीमत में खरीदा बल्कि अपने परिवार की सहूलियत के लिये उस बदरंगी, पुरानी बनावट से एक अतिरिक्त तल (Floor) ओर बनवाया। मुझे बहुत ही आश्चर्य होता था कि वह बहुत छोटी चीज से भी किस तरह कुछ नया बना सकती है, श्री माताजी में ऐसी असीम क्षमता थी। न केवल इतना, बल्कि ठहरी हुयी ऊर्जा इस तरह गतिशील हुयी कि नये जेरूसलम ने अपना भव्य रूप धारण कर लिया। आंगन में पूजा-हेन्गर बन गया, पार्किंग प्लेस व बच्चों के खेलने की जगह भी बन गयी।

देवी स्वयं की सृजनात्मकता को देख मुस्कुरा दी।

***

अध्याय - 16

वात्सल्य - उनका प्रेम का तरीका

श्री माताजी ने एक नये योगी से पब्लिक प्रोग्राम लेने को कहा। वह परेशान हो उठा क्योंकि वह बोलने में अटक रहा था। मैंने इस बारे में श्री माताजी से कहा, उन्होंने कहा कि, ''तुम्हें लोगों की प्रतिभा जाँचनी चाहिये, फिर उन्हें हिस्सा लेने को कहना चाहिये।''

उन्होंने कहा, ''संसार में कोई भी पौधा बिना गुण (दवाई) का नहीं होता, इसी तरह कोई भी इंसान बिना छिपी हुयी प्रतिभा का नहीं होता। लेकिन यह विशेषज्ञ की बुद्धि पर है कि वह उसके सत्व को पहचाने।''

मैंने अपने कान पकड़ते हुये कहा, ''मेरा चित्त हमेशा लोगों की कमियों पर ही रहता है। मैं पिछले जन्म में अवश्य ही आलोचक रहा हूँगा।''

वह बहुत जोर से हँस पड़ीं, ''लेकिन अब कुण्डलिनी का प्रकाश तुम्हें उनकी प्रतिभा की पहचान देगा और तुम दूसरों को परिवर्तित करने की योग्यता रखोगे। तुम उसे एक मौका दो। प्रकृति को देखो, कैसे हर एक पत्ती, दूसरी पत्तियों को सूर्य प्रकाश ग्रहण करने का मौका देती है।

मुझे लैला-मजनूँ जो कि एक रोमाँटिक किस्सा था, याद आ गया। जनता मजनूँ से कहती थी कि लैला इतनी बदसूरत है फिर भी तुम उसके पीछे भागते हो।''

मजनूँ मुस्कुराया, ''अहा, शायद उसकी खूबसूरती को देखने लायक तुम लोगों के पास आँखें ही नहीं है।''

मुझे लगता था, मेरी आँखें इस नकली चमक-दमक की दुनिया से चकाचौंध हो गयी है। मैंने अपने आप से एक वादा किया कि इस जीवन में,

मैं अपने अहंकार को, इस सुअवसर को चूकने नहीं दूँगा, मेरा चित्त उन समाजविद्ों, नेताओं और उच्च गरिमा के लोगों पर रहता है जो कि अपने सिवाय किसी को भी कुछ नहीं समझते, और मैं अपना जीवन व चित्त इन लोगों पर व्यर्थ नहीं करने वाला।''

मैंने निश्चय किया कि मैं श्री आदिशक्ति से प्राप्त बुद्धि रूपी मोतियों को इकट्ठा करूँगा और फिर से प्रातःकाल 4 बजे सवेरे के ध्यान के लिये उठना शुरू किया, गहन ध्यान अपने चित्त को तेज (sharp) रखने की कोशिश व हृदय में करूणा को संजोना शुरू किया।

जब शाम समाप्त हुयी, तब उन्होंने उस वक्ता को विजय का अंगूठा दिखा कर शाबासी दी, ''मुबारक हो, तुमने बहुत अच्छा बोला।'' उनके इस प्रोत्साहन ने एक मंत्र का काम किया और उसके हृदय चक्र को मजबूत किया। अगले पब्लिक प्रोग्राम में उसने आत्मविश्वास व शुद्धता (वाणी) से बोला।''

एक मरूभूमि को हरी-भरी बगिया में बदलते देख, मैंने श्री माताजी से पूछा ''कि आप यह सब कैसे करती है ?''

वह मुस्कुरायी, ''क्योंकि मुझे विश्वास है कि हर एक इंसान एक खूबसूरत व सुगंधित फूल बन सकता है।''

मैंने सोचा कि अगर उन्हें हम सब में इतना विश्वास है तो हम भी अपने साथियों, मित्रों व संबंधियों पर विश्वास क्यों नहीं कर सकते ? मैंने अपनी फाइल खोली और उस सब लोगों को जिन्हें मैंने लिस्ट से निकाल दिया था, उन्हें फिर से मौका देने का मन बनाया।

मैंने देखा कि कैसे हर एक बच्चा जो उनके दरबार में प्रवेश करता है, उसे अपनी योग्यता को पूरा स्वरूप देने का मौका मिलता है। माँ का प्रेम उनका आधार बनता है। श्री माँ नये योगियों को प्रोत्साहित करती है और

धीरज के साथ उनकी कुण्डलिनी माँ को नया विस्तार पाते हुये देखती है। एक दिन उन्होंने एक नवीन योगी को बुलाया और संगीत संन्ध्या को anchor करने का मौका दिया। उन्होंने उसे बताया कि श्रोताओं को किस तरह विनम्रतापूर्वक संबोधित करतना है, बड़ों के साथ सम्मान, प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुये पेश आना है और तन उसकी लेखनी में कई परिवर्तन किये। इस एन्करिंग के दौरान वह उसे बराबर प्रोत्साहन के संकेत देती रहीं।

जैसे ही गायन थोड़ा गड़बड़ाया, उन्होंने मेरी हल्की सी व्यंग्यात्मक शैली को पकड़ लिया जब मैं दूसरे सहयोगी से कुछ बोला और उन्होंने कहा- ''तुम उसकी आलोचना किससे कर रहे हो अहंकार या प्रतिअहंकार से। हर एक आलोचक को जवाब देना होगा अपने आपको यदि वह इससे भी अच्छा काम कर सकता।''

मैंने अपने कान पकड़ लिये।

उन्होंने एक रूस की नर्तकी को भारतीय क्लासिकल डांस, चैन्नई की नामी शिक्षण संस्था में सीखने के लिये छात्रवृत्ति दी।

उन्होंने नौ तरह के शास्त्रीय नृत्यों के बारे में बताया और कहा कि वात्सल्य (माँ का प्रेम अपने बच्चे के लिये) इन सभी नृत्यों में सबसे महान है।

उनके वात्सल्य ने हिमालय की चोटियों व घाटियों को भी गले लगा दिया और वे भी मुस्कुरा दी (लज्जा से)। वह खुश थी, ''अगर तुम ईश्वर को देखना चाहते हो, इस सुन्दर प्रकृति को देखो, जिसे उन्होंने स्वयं बना दिया। यह हिमालय स्वयंभू है जिसे धरती माँ ने बनाया है, इससे चैतन्य बहता है। (श्री माताजी में मार्च 1985 मैं धर्मशाला गयी)।

मैंने पूछा, ''क्या स्वयंभू चैतन्य अवशोषित भी करते है ?''

''नहीं''

''चैतन्य कैसे निकलते हैं ?''

चैतन्य के बहाव के लिये एक कारक (co-efficient) का होना आवश्यक है। चैतन्य के कारक absolute होते हैं। इसलिये ये co-efficient वाइब्रेशन्स emit करते हैं। सिर्फ़ ईश्वर व इंसान में ही ये co-efficient जो वाइब्रेशन्स का बहाव बनाते हैं। (emits)

''मानव का co-efficient क्या है ?''

'' मानव कोशिका में मौजूद electrons व protons में mesons (छोटे कण) होते हैं और वे परम चैतन्य को अवशोषित करते हैं।''

''क्या ये परम चैतन्य वही है जिसे आधुनिक भौतिकी बताती है ?''

''नहीं, भौतिक विज्ञान में चैतन्य सिर्फ़ electro magnetic होते हैं। electro शब्द सूर्य से व magnetic धरती से आता है। परम चैतन्य मेसन के बीचोंबीच मौजूद रहते हैं और आदिशक्ति के अधीन होते हैं। उनका परम चैतन्य इन (mesons) के भीतर से ही बहता है और यह शुद्ध प्रेम की धारा है जिन्हें तुम अपनी कुण्डलिनी के ठण्डे परम चैतन्य के रूप में महसूस करते हो। यह चैतन्य जागरूक है, कार्यान्वित है, हर चीज़ को व्यवस्थित करता है और सबसे ज्यादा यह प्रेम करता है, प्रेम आनंद देता है।

क्रिएशन पर प्रश्न

''तीन तरह की ईश्वरीय रचना है।''

(1) Universe - ब्रह्मांड

(2) जानवर व पेड़-पौधे (वह परमात्मा के अधीन है)

(3) मानव - वह स्वेच्छाचारी है (स्वतंत्र इच्छा वाले)

''क्या मानव प्रकृति को प्रभावित कर सकता है ?''

''हाँ, वाइब्रेशन्स से, मेसन्स ऐच्छिक है और प्रकृति को नियंत्रित कर सकते हैं। अगर तुम वर्षा को रोकना चाहते हो, मेसन्स कार्य करते हैं और वर्षा को रोकते हैं।''

''क्या मानव जानवरों को भी नियंत्रित कर सकता है ?''

''मानव में ही केवल चैतन्य को काम में लेने की योग्यता (ईश्वर प्रदत्त) है। अगर तुम पशुओं को चैतन्य दोगे, वे बदल सकते हैं।''

''क्या देवत्व हमें प्रभावित करता है ?''

''देवत्व भी मेसन्स के द्वारा ही की कार्य करते हैं, और उनके द्वारा दैवीय चैतन्य इन्सानों को यंत्र बना कर बहता है।''

''क्या भूत भी चैतन्य काम में लेकर हमें प्रभावित कर सकते हैं ?''

''नहीं, भूत चैतन्य को काम में नहीं ले सकते। सिर्फ़ मेसन्स ही चैतन्य को काम में ले सकते हैं और वे (मेसन्स) आदिशक्ति के अधिकार में होते हैं। भूत सिर्फ भूतों को ही काम में लेते हैं।''

''बांयी तरफ़ के वाइब्रेशन्स को कैसे अवशोषित करें ?''

''नींबू बाँयी तरफ के वाइब्रेशन्स को अच्छे से अवशोषित करते हैं।''

''कभी-कभी आप हमें चैतन्यित भुने चने नाभि को स्वच्छ करने के लिये देती है।''

''कोई भी चीज जिसे मैं छूती हूँ, वाइब्रेट हो जाती है।''

''धन्यवाद, श्री माताजी आपके विवेक रूपी मोतियों के लिये।''

श्री माताजी बोलीं, ''ईश्वर तुम्हें आशीर्वादित करें।''

***

अध्याय - 17

''मैं धूल का वह कण बनना चाहता हूँ जो कि खुशबूदार होना चाहता है।''

एक बार एक भिखारी सूफी सन्त निजामुद्दीन औलिया के दर्शनों के लिये आया। संत के पास उसे देने को कुछ भी नहीं था, इसलिये उन्होंने अपनी एक मात्र जोड़ी चप्पल उसे दे दी। रास्ते में भिखारी एक राज्य कवि अमीर खुसरो से टकराया जो कि राजा के दरबार से एक सोने से भरा थैला इनाम में लेकर लौट रहे थे। अमीर खुसरो को उस भिखारी में से अपने गुरु निजामुद्दीन औलिया की खुशबू आई। और पूछा कि क्या वो उसके गुरु से कुछ लेकर आया है। भिखारी ने संत निजामुद्दीन की चप्पलें दिखायीं। खुसरों ने जल्दी से उसे सोने से भरे थैले से उन चप्पों की अदला-बदली का प्रस्ताव रखा।

उन चप्पलों को अपने सिर पर के खुसरो अपने गुरु के पास पहुँचे और इस घटना के बारे में बताया। निजामुद्दीन मुस्कुराये ''खुसरो, तुमने इनको बहुत सस्ते में खरीद लिया।''

जब श्री माताजी अपने बच्चों की भक्ति से प्रसन्न होती है, तब परम चैतन्य बहुत बढ़ जाते हैं और सामूहिकता उनकी खुशबू से नहा उठती है। हमारी कुण्डलिनी श्री माताजी की खुशबू से जुड़ी होती है और एक छोटी से खुशबू की लहर भी आ जाए तब हमारी कुण्डलिनी खुशी से कूदती है।

क्या उन्होंने उसे विश्वास नहीं दिलाया है। ?

''मैं तुम्हारे सिरों को खूबसूरत फूलों से सजा दूँगी।

और तुम्हारे जीवन के हर एक पल को प्रसन्नता से भरी खुशबू से महका दूँगी।''

एक बार अल्लाह एक सूफी संत बहुत खुश हुये और कहा, ''कोई भी वरदान माँगो।''

सूफी ने माँगा, ''मुझे हजरत मोहम्मद की तरह बना दीजिये।''

अल्लाह ने जवाब दिया, ''मैं ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि मैं पहले ही एक बना चुका हूँ।''

सूफी ने माँगा, ''तब मुझे अली की तरह बना दीजिये।''

अल्लाह ने अफसोस के साथ कहा कि मैं ऐसा नहीं कर सकता, क्योंकि मैं यह पहले ही कर चुका हूँ। तुम कुछ और माँगो।''

तब सूफी बोला, ''कि अब मुझे कुछ भी नहीं माँगना।''

अल्लाह ने बड़ी रहमदिली से कहा, ''हाँलाकि मैं तुम्हें अली की तरह नहीं बना सकता, लेकिन अली की खुशबू तुममें से सदा बहती रहेगी।''

गुलाब व लिली के फूल ठंडी-ठंडी हवा में झूमते हैं
रे मित्र, मुझे ऐसे फूल ही ला दो जो 'उसकी' खुशबू फैलाते हैं।
'वह' अपनी खुशबू के प्रवाह में है।
कोई भी स्वर्ग या धरती की शक्ति उसे समाप्त नहीं कर सकती।
अनन्त काल तक उसकी खुशबू हमें नहलाती रहेगी।
जब तक सूर्य रोशनी देगा
जब तक चाँद अपनी शीतलता देगा
और जब तक आकाश में तारे चमकते रहेंगे।

***

अध्याय - 18

श्री माताजी ने परम चैतन्य का यंत्र बनने का दिया आशीर्वाद

हालाँकि प्रकृति ने चारों ओर आनन्द भर दिया था, फिर भी वह अपने गूढ़ रहस्य अपने तक सीमित रखती है। वह कभी रहस्योद्घाटन नहीं करती कि उन्होंने ढ़ेर सारे रंगीन पुष्प कैसे उत्पन्न किये हैं, जिसमें वह मीठी सुगंध भर देती हैं। कलियाँ भोर में ही फूलों में परिवर्तित हो जाती है, हम कई उसका खिलना नहीं देख पाते। ना ही हम फूलों से फल बनते देख पाते हैं। लेकिन हमारी माँ की करुणा ऐसी ही थी कि उन्होंने यह रहस्य बताया कि कैसे उनके रहस्यमयी यंत्र जीवित परम चैतन्य की रचना करते हैं। जैसा कि हम देखते हैं कैसे वृक्ष की हर पत्ती को सूर्य की रोशनी मिलती है, हम पहचान जाते हैं कि उनकी करूणा ही उनका सबसे बड़ा यंत्र है। यह हमारी चेतना में एक समानता पैदा कर देती है।

हाँ लोगों में नकारात्मकता होती है, लेकिन क्या हो यदि हम परम चैतन्य रूपी यंत्र से उनकी नकारात्मकता को सकारात्मकता में बदल दें ?

और क्या परम चैतन्य रूपी यंत्र से वह स्वयं ही, स्वयं को बदल दें ?

श्री माताजी ने बताया कि ना केवल प्रत्येक पत्ती, दूसरी पत्तियों को सूर्य प्रकाश पाने का मौका देती है बल्कि प्रत्येक बीज एक मौका दूसरे बीजों को भी अंकुरित होने का देता है। असीमित धैर्य, कड़ी मेहनत और प्रेम से श्री माताजी ने अंकुरित बीजों को पोषित किया, अपने लिये कुछ भी नहीं चाहा। जब एक अंकुर, एक हजार पत्तियों वाले कमल के रूप में खिलता है, उसकी खुशबू चारों तरफ व दूर तक जाती है। वह खुशबू इतनी शक्तिशाली है कि कई ओर लोगों के सहस्त्रारों को खोल सकती है क्योंकि यह जीवित

कार्य है, और इसलिये वह दूसरों में भी यह जीवित कार्य कर सकता है। बिल्कुल इसी तरह, एक जागृत संगीतज्ञ की व जागृत कलाकार की रचना वह यंत्र है जो कि कई लोगों का सहस्त्रार खोल सकता है। क्योंकि जब आत्मा मस्तिष्क को आनंद से भिगो देती है तब जो कलाकार रचना करता है, वह स्त्रोत बन जाती है, आनंद व मंगलमयता की।

श्री माताजी ने बताया, ''मांगल्य सुन्दरता का परिचायक है। अगर यह सत्य है तो वह परम चैतन्य का स्त्रोत बन जाता है। एक नकली फूल परम चैतन्य का स्त्रोत नहीं बन सकता।''

जब श्री माताजी कलाकारों और संगीतज्ञों को जागृति देती थी, तब उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी कि कभी हम परम चैतन्य को अपनी कला व संगीत से उत्पन्न कर पाएँगे। निश्चित रूप से हमने यह पाया है कि परम चैतन्य का स्त्रोत श्री माताजी हैं, वो जिस चीज को छू लेती है वह चैतान्यित हो जाती है, जो भी कला निर्माण (प्रतिष्ठान पुणे) करती है वह भी चैतान्यित होती है, लेकिन उन्हें अनुभव करने के लिये हमारी रचनात्मकता का स्त्रोत भी इतना प्रभावशाली हो जाता है कि यह हमें मौका देता है कि हम समाज को उन अनमोल मोतियों से धन्य करें जो हमें श्री माताजी से आशीर्वाद स्वरूप मिले हैं।

वह इतनी शान्ति से कार्य करती है और कार्य अतिशीघ्रता से संपन्न होते हैं, बिना हमारी जानकारी के। ना ही हमें इसके लिये संघर्ष करना पड़ता है। उदाहरण के तौर पर एक संगीत आयोजन ने उनका ध्यान एक युवा योगिनी की ओर खींचा, और उसे गाने के लिये कहा। वह कोई विशेष या प्रशिक्षित गायिका नहीं थी लेकिन उन्होंने उसके हृदय में ऐसी प्रेम भावना भर दी कि हमारी कुण्डलिनियाँ नृत्य करने लगी। जैसे ही उसने परमेश्वरी माँ को

प्रणाम किया, श्री माताजी ने उसे भारतीय शास्त्रीय संगीत (नागपुर संगीत एकेदमी) सीखने के लिये छात्रवृत्ति दी।

प्रसन्नता के आँसू उसके गालों से बहने लगे श्री माताजी ने उसे गले लगाकर उसके आँसू पोंछे। उस वर्ष के अन्त में, गणपति पुले में एक जाने माने वायलिन वादक प्रोग्राम दे रहे थे। श्री माताजी ने उसी योगिनी को श्रोताओं के बीच देखा और कहा कि स्टेज पर आओ और वायलिन वादक के पास बैठो। प्रोग्राम के अंत में उन्होंने घोषणा की कि इस (छात्रवृत्ति पाने वाली) योगिनी को कल के प्रोग्राम में बुलाया जाय।

शुरूआत में योगिनी थोड़ा घबराई व परेशान हुई, लेकिन श्री माताजी ने जैसे ही उसे एक प्यारी सी मुस्कुराहट दी और गर्दन हिलाकर उसे प्रोत्साहित किया उसकी कुण्डलिनी सहस्त्रार में स्थापित हो गयी। जैसे ही उसकी कुण्डलिनी सहस्त्रार में स्थापित हुयी, हम सबकी भी कुण्डलीनियाँ भी सहस्त्रार में जम गयी। यह एक ऑर्केस्ट्रा था, जिसे परमात्मा स्वयं संचालित कर रहे थे, रचनाकार स्वयं अपनी रचना में उतर आये थे, और ऑर्केस्ट्रा रचनाकार में लीन हो गया था। सामूहिकता उनकी रचनात्मकता के सागर में भीग गये थे और इन अनमोल पलों में हमने अनन्त को एक घंटे तक महसूस किया।

श्रोता प्रसन्न हो उठे, एक बार, और एक बार...

योगिनी ने बड़ी विनम्रता से प्रणाम किया, ''मैंने महान् संगीत महान् वायलिन व महान प्रणाम को एक साथ महसूस किया। मैं इन सबको एक साथ में लायी और यह सब हो पाया।''

श्री माताजी ने उसकी बहुत प्रशंसा की। लेकिन यह क्या ! उन्होंने अपनी अंगूठी उतार कर उसकी उंगली में पहना दी।

कविता

यह सिर्फ उनकी करुणा है जो सभी कार्य करती हैं
श्री माताजी जो भी आपके शरणागत है वह बचाया जाता है।
यहाँ तक कि वह भी जो कि भाग्यहीन है,
आप उसकी भी तकदीर बदल देती हो।

यह आनन्दपूर्ण अनुभव हमें यह सिखा गया कि परम चैतन्य को उत्पन्न करने में यंत्र किस तरह काम में लिये जाते हैं। श्री माताजी ने अपने जो भी भवन बनाए, वह बताते हैं कि किस तरह परम चैतन्य पदार्थों में प्रवेश कर के परम चैतन्य को उत्सर्जित करते हैं। प्राकृतिक चीजें व जागृत रचनाकारों की रचना भी परम चैतन्य फैलाने का कार्य कर सकते हैं। जैसे कि वैटिंग्स हाथ से बने मिट्टी के बर्तन, लकड़ी की नक्काशी (एक जागृत व्यक्ति के हाथों से बने हुये) घरों में परम चैतन्य लाते हैं। क्रिस्टल व काँच इन वाइब्रेशन्स को परावर्तित करते हैं जबकि काला रंग उनके बहाव को रोकते हैं।

जो यंत्र उन्होंने हमें दिये है, वह हमारे घरों को स्वयंभूओं में बदल देते हैं। निश्चित रूप से सहजयोगी जीवित स्वयंभू है और जो योगी संगीत, कला और साहित्य से आशीर्वादित हैं वे स्वयं रेब्राण्ड की मोनालिसा जैसी स्वयंभू भी बना सकते हैं। श्री माताजी ने बताया कि मोनालिसा अपनी सुंदरता के कारण अमर नहीं हुयी बल्कि अपने से बहते हुये परम चैतन्य के कारण वह अमर हुयीं।

आह ! और नये युग के जागृत कलाकारों के क्या कहने जो कि सत्य-युग को परम चैतन्य से खींच कर ले आएँगे।

***

अध्याय - 19

मेरे दो नेत्र देवी चमत्कारों को देखने के लिये काफी नहीं।

मैं अपने छोटे भाई द्वारा बनाई गई चित्रकला (पेन्टिंग) के सामने स्तब्ध खड़ा था और बोल पड़ा, ''तुम बहुत जीनियस हो।''

उसने बड़ी सादगी से जवाब दिया, ''मैं जीनियस नहीं हूँ। अपना कार्य शुरू करने से पहले मैं केनवास के सामने खड़ा होकर प्रार्थना करता हूँ, ''हे देवी माँ, मैं कैसे ईश्वर को प्रसन्न करूँ। तब मैं कई दिनों तक ध्यान करता हूँ जब तक कि वह मुझे निर्देश नहीं दे देती।''

''क्या उनका दिशा-निर्देश सदा ही आता है ?''

''अगर मैं अपने चक्रों की ओर से लापरवाह हो जाता हूँ, तब थोड़ा समय लगता है जब तक कि मैं उन्हें स्वच्छ न कर लूँ।'' आप जानते हैं कि बहुत स्पर्धा है, बहुत गला-काट दौड़ है इस कला जगत में। इसलिये मैं स्वयं को सदा याद दिलाता हूँ कि मेरा उद्देश्य स्पर्धा नहीं है बल्कि श्री माताजी के प्रेम का यंत्र बनना है। अन्त में, जब मेरा चित्र सहस्त्रार को भेद लेता है, प्रकृति, प्रकृति से मिलती है, और कला अपने आप बन जाती है, पूर्ण हो जाती है।''

सत्य है कि मूल रचनात्मकता का तना अनन्त प्रेम रूपी कलश से ही जन्मता है लेकिन युवा संगीतज्ञों में एक अलग ही गुण होता है कि वे हमारी प्यारी श्री माताजी से मीठी खुशबू लेते हैं। यह कोई गुलाब या जास्मीन की मीठी सुगंथ नहीं है; बल्कि हमारी माँ की आन्तरिक प्रकृति की खुशबू है- करुणा। उनकी करुणा कलाकारों से इस तरह बहती है कि वे सदा ही नये गायकों को मौका देते हैं उन्नत होने का वह नयों को सहारा देते हैं व हर तरह से आगे बढ़ाते हैं। वह खुशी से अपने यंत्रों को उन्हें देते हैं और उनकी रचनाओं से प्रसन्न होते हैं। इस तरह उनकी रचनात्मकता एक ऐसा यंत्र बन जाती है जिससे कइयों की कुण्डलिनियाँ जागृत होती हैं।

यही प्रकृति सहज गायकों में पायी जाती है। इससे मुझे तानसेन की याद आती है जो कि मुगल साम्राज्य के मुख्य संगीतज्ञ थे। एक दिन सम्राट अकबर ने उनसे पूछा, ''क्या कोई ऐसा है जो आपकी तरह गा सकें ?''

तानसेन ने उत्तर दिया, ''मेरे गुरु हरिदास मुझसे भी अच्छा गाते हैं।''

अकबर ने हरिदास को बुला भेजा; लेकिन उन्होंने आने से इंकार कर दिया। तानसेन ने राय दी कि बेहतर है आप ही वहीं तशरीफ ले चलें। अकबर ने वैसा ही किया। लेकिन हरिदास का मन गाने का नहीं था। तानसेन को एक तरकीब सूझी उन्हें उकसाने की, उसने उनका मनपसंद राग छेड़ा और जानबूझ कर कुछ गलती की। हरिदास उनकी इस गलत संगीत सरिता को रोक नहीं पाये तो स्वयं ने राग गाकर उसको गलती बतायी।

अकबर मुग्ध होकर बोला, ''तुम अपने गुरु की तरह क्यों नहीं गा सकते ?'' तानसेन ने विनम्रता से जवाब दिया, ''मैं आपको प्रसन्न करने के लिये गाता हूँ और हरिदास ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये गाते हैं।''

और क्या जो आदिशक्ति को प्रसन्न करने के लिये गाते हैं ? कुण्डलिनी हर एक साधक को उसकी स्थिति के अनुसार उत्थान की ओर ले जाती है; जहाँ रचनाकार व रचना का विलय हो जाता है और दोनों ही आनन्द में विभोर हो जाते हैं।

श्री माताजी ने अपने हर एक बच्चे की प्रतिभा को शानदार ढंग से सँवारा है। यही नहीं, उन्होंने अपने दैवीय प्रेम की उदारता से आलोकित हुये होते थे, आशीर्वादित होते थे। जैसे कि, जब वह संगीतकारों को इनाम देती थी पर्स को चाँदी की ट्रे में रखकर उस पर खूबसूरत रेशमी रूमाल रख देती थी, या जब वह किसी को हैण्डबैग या ब्रीफकेस उपहार में देती थीं, वह उसमें पैसे रख देती थी ''तुम कैसे किसी को खाली बैग उपहार में दे सकते हो?'' या कोई चाँदी का कटोरा देतीं तब उसे मेवे से भर कर देती थीं।

मैं आश्चर्य से देखता था कि कैसे उनकी करुणा भरी उदारता किसी भी चीज को चैतन्य का पात्र बना देती थी लेकिन मेरी दो आँखें उनके सभी चमत्कारों को देखने में सक्षम नहीं थी।

एक पूजा में मुझे आशीर्वाद स्वरूप यह काम मिला कि मैं संगीतकारों को दिये जाने वाले उपहारों को चाँदी की ट्रे में सजाऊँ। श्री माताजी के उपहार वितरित करने के बाद मैं चाँदी की तश्तरियों को वापिस जमा करवाना भूल गया।

जैसे ही मैं नमक-पानी क्रिया के लिये बैठा, मुझे उन ट्रे की याद आ गयी। मैं परेशान हो गया, ''क्या होगा यदि वे गुम हो गयी ? अगर कोई उन्हें लेकर चला गया तब ?''

मैंने शॉल ओढ़ा और हिचक के साथ पूजा हैंगर में पहुँचा। रात के तीन बजे थे, बिजली बंद थी और सिर्फ खर्राटों का संगीत सुनाई दे रहा ता। अपने मोबाइल फोन की रोशनी में मैंने स्टेज व हर विंग को तलाशा, लेकिन वे कहीं भी नहीं मिली। मैं परेशान हो गया व श्री माताजी से क्षमा-प्रार्थना करने लगा। मेरी प्रार्थनाएँ मेरे होंटों से निकली ही थी कि मुझे शीतल चैतन्य की अनुभूति हुयी। वे स्टेज के बीचोंबीच से आ रहे थे जहाँ सिंहासन रखा था, लेकिन चाँदी की ट्रे दिखायी नहीं दे रही थीं। जैसे ही मैंने सिंहासन के सामने माथा टेका, मेरा माथा किसी धातु से टकराया, क्या गण मुझे सजा दे रहे हैं?

मैंने अपने माथे की चोट की सहलाया, और कारपेट को पलटा। मैं हैरान हो उठा, सातों ट्रे मेरा चाँदी जैसे मुस्कान के साथ स्वागत कर रही थीं। मैंने उन ट्रे को सीने से लगाया और उस बुद्धिमान फरिश्ते को धन्यवाद दिया जिसने इन ट्रे को सुरक्षित छिपा कर रख दिया था।

कविता

मुझे रंग दे, मुझे रंग दे
मुझसे रंग का चुनाव करने को न कहे।
बस वह रंग सदा ही आपके प्रेम की खुशबू से भरा रहे
अब मुझ पर आपका रंग चढ़ गया है
कोई दूसरा रंग उस पर अब चढ़ नहीं सकता।

***

अध्याय - 20

बिखरे हुये दिमाग या एक बिगड़े हुये टर्की को स्थिरता दी।

पब्लिक प्रोग्राम के बाद श्री माताजी नये साधकों के चक्रों को स्वच्छ करती थीं। यह कार्य कई घंटों तक चलता था और कुछ ऐसे साधक, जिनके चक्रों में ज्यादा ही रुकावट होती थी, उन्हें अगले दिन घर बुलाया जाता था, ताकि अच्छा उपचार दिया जा सके। अगली सुबह वह बराबर एक अमेरिकी पर कार्य कर रही थीं पिछले दो घण्टों से। अमेरिकी को शर्मीन्दगी हो रही थी कि उसने उनका इतना कीमती समय ले लिया खासतौर से जब दूसरे साधक अपनी बारी का इन्तजार कर रहे थे।

श्री माताजी ने उसे कहा, ''दोष भावना मत रखो, अपने आपको एक गिनी-पिग के रूप में देखो। जैसे ही यह तुम पर प्रभाव डालेगा, सारी सामूहिकता की भी सफाई हो जायेगी। जब कुछ ऐसे लोग जिनके एक जैसे चक्रों की रूकावट या स्वच्छता होती है, आत्म साक्षात्कार प्राप्त करते हैं तब सामूहिकता के वे लोग जिन्हें यही समस्याएँ होती है, वे उन्हें जल्दी ही आत्मसात् कर लेते हैं। जैसे ही सामूहिकता की शक्ति बढ़ती है, औरों को भी शक्ति को प्राप्त करना आसान हो जाता है।

उन्होंने उस अमेरिकी को अगले दिन फिर आने को कहा। जब अगले दिन वह फिर आया, तब श्री माताजी अपने पति के मेहमानों के लिये एक बड़ी डिनर पार्टी की तैयारी कर रही थी, और मुझे बताया कि उसका ट्रीटमेंट कैसे आगे बढ़ाना है। एक घंटे के बाद मैं उस अमेरिकी के बिखरे हुये चित्त से बहुत ज्यादा चिढ़ चुका था, अगर मैं उसे दायाँ हाथ धरती माँ पर रखने को कहता, वह बाँया रख देता। उसे बाँया हाथ आकाश की ओर रखने को कहता वह दाँया हाथ कर देता। श्री माताजी ने रसोई से आवाज लगाई और

पूछा कि उसकी प्रोग्रेस कैसी है ? मैंने कहा, ''मैं हार गया, उसका चित्त बहुत उलझा हुआ है।''

श्री माताजी हँसी, ''अगर तुम एक उलझे हुये चित्त को एक जगह नहीं ला सकते, तब मास्टर बनने का क्या फायदा ! सोचो यदि मैं तुम्हारे लिये खाना बनाऊँ और तुम कहो, ''तुम्हें नहीं खाना।'' और तब में एक माँ होने के नाते क्या करूँगी, एक माँ की तरह उसके पीछे जाऊँगी और मैं तुम्हारी कुण्डलिनी उठाऊँगी, तब तुम स्वयं को देख सकोगे।''

मैंने स्वयं सोचा, ''एक बिखरे हुये चित्त को एकत्रित करना एक कला है, लेकिन मुझे पहले इसका मास्टर बनना पड़ेगा।''

जब वह कपों में चाय डाल रही थीं, उन्होंने आँखों के कोरों से मुझे देखा व कहा, ''एक काम जो कि तुम कभी नहीं कर सकते, वह है एक सहजयोगी को छोड़ देना।''

निश्चित रूप से, उन्होंने कभी यह सब हम पर नहीं छोड़ा... इसी तरह हमारा काम साधारणतया कमजोरों को वाइब्रेशन्स देते जाना है। उनकी उन्नति धीमी हो सकती है लेकिन हमें जज करने की या तुलना करने की जरूरत नहीं।

मैं सवेरे जब जगा, मेरे सभी चक्र करीब-करीब अमेरिकी के बाधाओं से जकड़े हुये थे। मैंने सभी सहज उपाय किये लेकिन ठण्डे चैतन्य की अनुभूति नहीं हुयी और इसलिये मैंने श्री माताजी के दर्शनों के लिये जाना उचित नहीं समझा। मैंने किसी दूसरे योगी को उनकी सेवा के लिये भेज दिया।

एक घंटे बाद फोन की घंटी बजी, श्री माताजी ने पूछा, ''तुम्हारा चित्त कहाँ है ? तुम्हारी इच्छा कहाँ है ? तुम इतने परेशान क्यों हो ? मैं तुम्हारी माँ हूँ और अगर मैं तुम्हें ठीक नहीं करूँगी तो कौन करेगा ? यह मेरा वादा है।''

मैं अपने कान खींचे और उनसे क्षमा प्रार्थना की।

अपनी दोष भावना पर हँसते हुये, हृदय से बाहर करते हुये और उस अमेरिकी पर नाराज़ होते हुये जिसने उनको इतने सारे कैचेज़ (बाधाएँ) दिये मैं श्री माताजी के घर पहुँचा। मैं भौंचक्का रह गया, यह देखकर कि वह अमरीकी सोफा पर मुस्कुराते हुये एक फूल की तरह खिला हुआ बैठा था।

मेरा शक (confusion) श्री माताजी की दोनों मुस्कुराती हुयी आँखों के तारों को देखकर ओर बढ़ गया।

आप जानते हैं, जब मैं उस अमरीकी की बाधाओं को सोख रहा था, श्री माताजी सारी रात जागकर मुझे स्वच्छ कर रही थीं। इस क्रिया में अमेरिकी पूरा बाधा मुक्त हो गया। यह एक नया सबक मिला, बाधाएँ गतिशील होती है, और एक से दूसरे में स्थानान्तरित होती है। यह एक अलग ही पाठ श्री माताजी ने पढ़ाया कि एक बाधा को कोई स्वयं में समाता है तो दूसरे को आराम मिलता है, लेकिन जो अवशोषित करता है, उसे परेशानी होती है; जैसे म्युजिकल चेयर्स में।

इससे पार पाने का तरीका है प्रतिक्रिया मत दो।

1991 की गुरुपूजा से एक दिन पहले श्री माताजी कबैला पहुँच गये। क्योंकि पूजा की जगह एक दिन पहले ही बदल गयी, उससे कैटरर का इंतजाम नहीं हो सका। श्री माताजी ने कासल (भवन) के प्रवेश द्वार के सामने आँगन में एक खुली रसोई बनायी व खाना बनाने के कार्य का निरीक्षण करने लगी। भोजन में छोले, दाल, टर्की (मुर्गी) और चावल शामिल थे। हम चार टीमों में बाँट दिये गये और हर एक को एक व्यंजन बनाने का कार्य दिया। मेरी टीम को टर्की बनानी थी, हमने पकाने के लिये चीरी हुयी लकड़ियों का इंतजार किया। श्री माताजी ने सभी मसालों को नाप

जोख कर टर्की के बर्तन में डाले। हमें ज्यादा जानकारी नहीं थी कि टर्की बड़ीबर्ड है व पकने में चिकन से ज्यादा समय लगेगा, हमने जल्दी ही पकाना बंद कर उसे बिगाड़ दिया।

एक भाई ने कहा कि ताजी टर्की को बनाना ज्यादा आसान है बजाय कि बिगड़ी हुयी को सुधारना, और यह बात श्री माताजी तक पहुँचायी गयी।

उनकी मुस्कुराहट में भी एक खुशबू निहित थी, ''निश्चित रूप से परमात्मा के लिये बिगड़ी दुनिया से नयी दुनिया का निर्माण करना अधिक आसान है। तुम जानते हो कि श्रीकृष्ण के लिये बुराई के सिर काटना आसान था, लेकिन मेरी परेशानी यह है कि नकारात्मकता तुम्हारे दिमागों में जा बैठी है, और मुझे उन्हें वहाँ से हटाना पड़ता है।''

श्री माताजी ने काफी सारा घी उस टर्की के बर्तन में डाला और कहा, ''कि इसे चलाते रहो, यह तब तक करना जब तक मैं पूजा के लिये तैयार नहीं हो जाती।''

जल्दी ही माताजी लौटी, हमारी जीभें टर्की की सुगंध से लपलपाने लगी। दुगने योगी इस पूजा में पहुँचे, जितनी उम्मीद थी उससे ज्यादा, लेकिन जो घी का टुकड़ा उन्होंने डाला था, वह धीरे-धीरे घुलता जा रहा था। हर नाभि तृप्त हुयी, और काफी सारा रसोई में बचा रखा रहा।

अन्त में उन्होंने अपनी मुस्कुराहट का रहस्य उजागर किया, ''एक टर्की का बिगड़ा हुआ व्यंजन सुधारना, किसी के बिखरे चित्त को फिक्स करने जैसा ही है।''

***

अध्याय - 21

बोलते जाओ....

एक योगी जिसे पब्लिक प्रोग्राम में बोलना था, उसे लू लग गयी प्रोग्राम से ठीक पहले। श्री माताजी ने उसके चक्रों पर कार्य किया, और अपनी शॉल में उसे लपेट दिया। हाँलाकि वह शारीरिक तौर पर ठीक हो गया, लेकिन चित्त उस लू के आघात से भयभीत था। उसका चित्त वहाँ से हटाने के लिये श्री माताजी ने कहा कि तुम पब्लिक प्रोग्राम मेरी उपस्थिति में लोगे।

उसकी पत्नी बहुत परेशान हुयी। श्री माताजी ने उसे धैर्य दिया व कहा, ''मैंने उसका इलाज कर दिया है लेकिन उसका डर उसे उबरने नहीं दे रहा। मैं उसे अपने डर का सामना करते हुये इस स्थिति से बाहर निकालना चाहती हूँ। अगर तुम लंगड़ा स्वयं को मानोगे, तब तुम वाकई लंगड़े हो जाओगे। तुम्हें डरना नहीं चाहिये क्योंकि तुम्हारी कुण्डलिनी जागृत है।''

वह मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था, और दो योगियों के मदद से वह स्टेज पर आ पाया। श्री माताजी ने प्रोत्साहित किया, ''घबराओ मत, तुम्हें पूरे अधिकार से लोगों को यह बताना है कि मैंने आत्म साक्षात्कार पाया है और लोग इसे स्वीकारेंगे।''

शुरूआत में, वह थोड़ा अटक रहा था, उसे सुनना भी थोड़ा मुश्किल था। जबकि श्री माताजी का चित्त उसकी कुण्डलिनी पर टिका हुआ था और वह उन्हें शक्ति प्रदान कर रही थीं। उसकी कुण्डलिनी धीरे-धीरे उसके डर को अवशोषित कर रही थी, और हृदय चक्र खुल गया। जल्दी ही उसका आत्म विश्वास लौट आया और आवाज स्पष्ट होने लगी। तब एक चमत्कार

हुआ- उसकी कुण्डली श्री माताजी की भव्यता को उजागर करते हुये उठीं और श्रोताओं के साथ एकात्मकता स्थापित करने में सफल हो गयी। जैसे ही उसने चारों ओर देखा, अपना भाषण भूल गया और चिल्ला कर बोलने लगा, ''श्री माताजी आप ही हैं, आप ही हैं...।

मेरी साँस रूक गयी। अचानक उसकी कुण्डलिनी उसके बचाव में उठी और उसने अपना वाक्य पूरा किया, ''श्री माताजी, आप ही भारत माता है। (जो कि इसके भाषण में नहीं लिखा हुआ था)।''

श्रोताओं ने खड़े होकर इसका समर्थन किया।

सन्त कबीर ने कहा है कि-

''आकाश की भट्टी से (सहस्त्रार से)
अमृत की बूँदे टपकती है जो कि मुझे मजबूत बनाती है,
जब मैं उस अमृत रूपी मय को देने वाले से मिला,
मैं नशे में रहता हूँ।''

***

अध्याय - 22

दूर समुद्री किनारों पर गणपति पुले का निर्माण

(समुद्र के किनारे महाराष्ट्र के पवित्र स्थल पर जहाँ हर वर्ष श्री माताजी के गौरव में त्यौहार मनाया जाता है।)

श्री माताजी जब दुबई पहुँची तब सामूहिकता ने उस आइलैण्ड के लिये क्रूज़ का इन्तजार किया। उन्होंने एक हृदय स्पर्शी भजन बनाया, ''हम दुबई को गणपति-पुले बनायेंगे।''

श्री माताजी उनकी भावनाओं से बहुत अभिभूत हुयीं और उन्हें दुबई के समुद्री किनारे पर गणपति पुले बनाने का आशीर्वाद दिया।

निश्चित रूप से गणपति पुले व दूसरी जगह जो कि देवी माँ द्वारा अपने विभिन्न अवतारों के समय आशीर्वादित हुयीं, वे तीर्थ स्थानों की तरह है। लेकिन उन्होंने अपने बच्चों को भी इतनी शक्ति दी है कि वे भी किसी भी स्थान को परम चैतन्य से चैतन्यित कर सकते हैं। सहज योग एक जीवित क्रिया है जो कि योगियों की जीवित कुण्डलिनी से साँस लेती है। इसलिये जब कभी योगीजन अपने हृदय में प्रेम लेकर इकट्ठे होते हैं, वाइब्रेशन बहने लगते हैं व उस जगह को वाइब्रेट कर देते हैं। उदाहरण के तौर पर उन्होंने बताया कि विलियम ब्लैक (महान कवि) का नया जेरूसलम इंग्लैण्ड था। इसी तरह एक मुस्लिम योगी के माता-पिता हज यात्रा पर जाना चाहते थे, उसने राय दी कि हज के लिये उन्हें इंग्लैण्ड जाना चाहिये जहाँ श्री माताजी रहती हैं और उन्होंने ऐसा ही किया।

इस सतयुग में जब योगीजन नये गणपति पुले, येरूशलम और यात्रा की नींव रखने जा रहे हैं, उनका (श्री माताजी) साम्राज्य इस पृथ्वी ग्रह पर उतर आया है।

श्री माताजी ने बताया कि जीवित ऊर्जा की यह पहचान है कि वह उन्नत होती है, और नकारात्मक ऊर्जा को (जो कि ठहरी हुयी है) बिखेर देती है, समाप्त कर देती है।

अगर जगहों के वाइब्रेशन्स का प्रवाह बाधित हो जाय, तब वह धीरे-धीरे समाप्त होने लगते हैं। श्री माताजी ने बताया कि कई धार्मिक पवित्र स्थलों के वाइब्रेशन्स समाप्त हो चुके हैं क्योंकि वे गलत हाथों में पहुँच गये हैं। अगर उनका भी फोटोग्राफ गलत हाथ में चला जाय तो उसके भी वाइब्रेशन्स समाप्त हो जाते हैं और उन्होंने निर्देश दिये कि उन्हें नदी में प्रवाहित कर दिया जाये।

जैसे ही वह एक शहर में पब्लिक प्रोग्राम के लिये पधारीं, उन्होंने देखा कि कहीं भी उनका पोस्टर नहीं लगा हुआ है, और उन्होंने पूछा ''यहाँ पोस्टर्स क्यों नहीं ?

योगियों ने बताया, ''श्री माताजी, हम आपके फोटो के प्रोटोकॉल को लेकर चिन्तित थे। लोग उन्हें फाड़ सकते है या तोड़-मोड़ कर फेंक सकते हैं।''

उन्होंने कहा कि ''शहर मेरे फोटोग्राफ से वाइब्रेट हो जाता है, और यही कारण है कि परम चैतन्य साधकों को उनकी अवचेतना में सूचना पहुँचाते हैं। जब मैं रूस गयी, तब रूसी नागरिकों ने मेरे बारे में कभी सुना नहीं था लेकिन अवचेतन ने उन्हें खबर की और वे हजारों की तादाद में पहुँचे। जब मैंने उनसे पूछा कि तुमने मुझे कैसे पहचान लिया ? उसने जवाब दिया ''निश्चित रूप से, आपके फोटो से श्री माताजी।'' मैंने उन्हें आज्ञा दी कि मेरा फोटो आप पोस्टर्स पर लगा सकते हैं, आपको प्रोटोकॉल की चिंता करने की आवश्यकता नहीं।

उन्होंने स्वयं उदाहरण प्रस्तुत किया, अपना फोटो पोस्टर पर लगाने का, जब रोम के पहला पब्लिक प्रोग्राम हुआ। पोस्टर लगाते वक्त हमें अपना विवेक काम में लेना चाहिये, जैसे कि टॉयलेट या कचरे के ढ़ेर के पास पोस्टर नहीं लगाना है।

हर सुबह जब मैं अपने काम पर गाड़ी निकाल कर जाता हूँ, तब मेरी आँखें उस पोस्टर को ढूँढ़ती है जो कि एक बस स्टॉप की पर लगा हुआ था। मुझे याद है एक बारह वर्ष की लड़की जब पोस्टर लगा रही थी, तब वह गणेश मंत्र बोल रही थी व हृदय से प्रार्थना कर रही थी, ''श्री गणेश, कृपया मेरी पावन श्री माताजी के पोस्टर की रक्षा करना।''

श्री गणेश उस दिन से इस पोस्टर की रक्षा कर रहे हैं। अभी हाल ही में एक पूजा में एक पब्लिक प्रोग्राम के बाद देखा कि कुछ छात्र बड़ी ही सावधानी से पोस्टर दीवार से उतार रहे हैं।

''ये पोस्टर तुम लोग कहाँ ले जा रहे हो ?''

''अपनी रहने की जगह को पवित्र बनाने के लिये।''

''क्यों ?''

हम अपनी परीक्षा देने जा रहे थे और बहुत तनाव ग्रस्त थे। अचानक हमने उनका फोटो देखा और उनकी आँखों में कुछ ऐसा था जो हमें आराम दे रही थीं, इसलिये हम इन्हें अपने रहने की जगह पर स्थापित कर रहे हैं।

''तुमने कभी इनके प्रोग्राम में गये हैं ?''

''नहीं, उस दिन हमारी परीक्षा थीं।''

''क्या तुम उनके बारे में कुछ जानना चाहते हो ?''

''क्यों नहीं ?''

उन्होंने पोस्टर के फोटोग्राफ से ही अपना आत्म साक्षात्कार प्राप्त किया। अगले दिन जब मैं शहर के पुराने इलाके से गुजर रहा था मैंने रिक्शा स्टैण्ड पर श्री माताजी का पुराना पोस्टर देखा। हाँलाकि वह कई साल पुराना था लेकिन उस पर ताजा कुमकुम लगा हुआ था। मैंने वहाँ के स्थानीय रिक्शा चालकों से पूछताछ की, ''किसने कुमकुम लगाया है ?''

उसने कहा, ''हम हर सुबह अपना रिक्शा चलाने से पहले कुमकुम अर्पित करते हैं।''

क्या तुम सहज योगी हो ?

नहीं !

तब तुम कुमकुम क्यों अर्पित करते हो ?

क्योंकि हमारी दैनिक कमाई बढ़ गयी है जब से हम इन्हें कुमकुम अर्पण करते हैं ?

''जो कोई भी प्रेम की एक बूँद भी सहेजे हुये है
उसमें परमात्मा का अस्तित्व होता है।''

- युनुस एमरे

अध्याय - 23

उत्सव के अवसर - सम्मान (अभिनंदन)

श्री माताजी के 60वीं वर्षगाँठ पर, मुम्बई सामूहिकता ने लाइफ इटरनल ट्रस्ट के सदस्यों का सम्मान करना चाहा जो कि कड़ी मेहनत कर रहे थे, सहज प्रचार-प्रसार के लिये। यह उन्हें अच्छा नहीं लगा कि सामूहिकता के कार्यों के लिये हमें ही पहचान क्यों दी जा रही है, सम्मान क्यों किया जा रहा है ? वे इस बात को श्री माताजी तक लेकर गये।

श्री माताजी हँस पड़े, ''लेकिन दूसरा कौन है ? जो भी कार्य एक सहज योगी करता है, वह अपनी स्वयं (आत्मा) के लिये करता है। अब स्वयं ही स्वयं को क्या दे सकता है ?''

उन्होंने समझाया कि सामूहिक चेतना में हम सब एक ही विराट के अंग प्रत्यंग होते हैं, और तब हम एक दूसरे का ही प्रसार होते हैं। तब एक हाथ दूसरे हाथ का अभिनंदन कैसे कर सकता है ?

जब हम विराट के अंग प्रत्यंग बन जाते हैं तब सामूहिकता का हर एक कार्य 'मास्टर-कम्प्यूटर' द्वारा होता है। अगर एक अंगुली पर चोट आ जाये तो पूरा शरीर उसके बचाव में आ जाता है। इसी तरह हर एक बच्चा श्री माँ के शरीर में एक कोशिका की तरह है। जब एक बीज बोया जाता है, तब धरती माँ बड़े प्रेम से अपने प्रेम के बंधन में बाँध लेती है और पोषित करती है। अगर बेकार पौधे ज्यादा जल्दी बढ़ जाये तब वह उन्हें खींच कर निकाल लेती है। इसके अलावा, अगर कोई इन बेकार पौधों को संगठित करता है, तब यह श्री माँ के कार्यों में रूकावट पैदा करते हैं। वह मुस्कुराई, ''मैं उन विचारों को परम चैतन्य के हवाले कर देती हूँ।''

शिवसेना सुप्रीमो बालठाकरे, श्री माताजी के जन्मोत्सव अवसर पर आये व श्रोताओं के बीच जा बैठे। श्री माताजी ने उन्हें स्टेज पर उनके साथ बैठने के लिये निमंत्रित किया, लेकिन उन्होंने विनम्रता से मना करते हुये कहा, ''मैं तो आपके चरणों की धूल के बराबर भी नहीं।''

इसी तरह सन् 2000 में दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित भी रामलीला मैदान में हुये पब्लिक प्रोग्राम में आई। उन्हें भी स्टेज पर बैठने के लिये निमंत्रित किया, लेकिन उन्होंने भी इंकार किया, ''मैं श्री माताजी के बराबर स्टेज पर कैसे बैठ सकती हूं, मेरी जगह उनके श्री चरणों में हैं।''

जब भारत के राष्ट्रपति नीलम संजीवा रेड्डी ने उन्हें राष्ट्रपति भवन में निमंत्रित किया, उन्होंने एक विशेष चंदन की लकड़ी का सिंहासन बनवाया, उसपे बैठाकर, स्वयं उनके श्री चरणों में बैठे। यही पहचान की चेतना जाने-माने संगीतज्ञों व कलाकारों में भी जागी। जानी-मानी गज़ल गायिका (गज़लों की रानी) परवीन सुल्ताना ने शन्मुखानंद हॉल में संगीत कार्यक्रम में प्रस्तुति दी। जब श्रोताओं ने उनसे कई बार उसकी प्रसिद्ध गज़ल गाने का आग्रह किया, उसने विनम्रता पूर्वक मना किया, ''क्या आप नहीं जानते कि आप किनके सम्मुख बैठे हैं, ऐसी गज़लें देवी को अर्पित नहीं की जाती।''

इसकी जगह उन्होंने बड़ी ही भक्ति से भजन गाया (दयानी, भवानी...)। श्री माताजी ने बड़ी गहराई से उसकी भक्ति को महसूस किया।

जब हम विराट के अंग प्रत्यंग बन जाते हैं तब किसी को कोई विशेष स्थान या किसी को विशेष ध्यान में रखने की जरूरत ही नहीं। हम उनके अथाह सामूहिक प्रेम के सागर में आनंद के गोने लगाते हैं, उसके बाद हम कर्ता नहीं रह जाते। इसके बाद हम उनके निरानंद में भीगते रहते हैं।

निरानंद का दैवीय- सुख पाना, सबसे बड़ा उत्सव है। उससे अधिक कोई और उत्सव नहीं हो सकता। कोई ओर उत्सव हमें सिर्फ़ भ्रान्ति ही दे सकता है कि हम ही कर्ता है और ये हमें निरानंद से दूर कर देता है।

निश्चित रूप से, नम्रता से बोलना, आदर से बोलना महत्त्वपूर्ण प्रशंसा व पहचानना, हौंसला बढ़ाने के यंत्र हैं लेकिन हमें सदा ही श्री माताजी के प्रति समर्पित रहना है। जब सब कुछ श्री माताजी ही करती हैं, तब हम किसी और का मान-सम्मान कैसे करें बजाय उनके- ''श्री माताजी की ओर दृष्टि रखो।''

''श्री माताजी, आप ही सब कुछ करती हैं,

आपने हमें बहुत कुछ दिया है (आशीर्वाद)

जितनी योग्यता थी उससे अधिक

मुझमें ऐसा क्या विशेष है ?

यह सब आपकी कृपा है, प्रेम है।

श्री कृष्णा की ऐसी ही एक कथा है। उन्होंने भीम के पौत्र बार्बरिक को आशीर्वाद दिया था कि वह महाभारत का संग्राम एक पहाड़ी चोटी से रखकर उसका गवाह बन सकता है। विजय प्राप्ति के बाद, पाण्डवों में बहस छिड़ गयी कि सबसे अधिक वीरता से कौन लड़ा ? उन्होंने यह प्रश्न बार्बरिक के सम्मुख रखा।

उसने अबोधिता के साथ जवाब दिया, ''मैंने तो हर जगह श्री कृष्ण के सुदर्शन चक्र को ही देखा, और कुछ भी नहीं।''

साँप-सीढ़ी का खेल खेलना छोटे बच्चों का काम नहीं है। इसी तरह इनाम देना या उत्सव करना आदि के अधिकार भी छोटे बच्चों का कार्यवाही नहीं बल्कि यह कार्य उनके प्रमुख या माता-पिता का है। सहज संघ में प्रमुख, श्री माताजी स्वयं है। अगर इसी तरह इनाम बाँटे जाय तो वह सहज संघ, एक प्रशंसा करने वाली संस्था बनकर रह जाएगी बजाय निरानंद देने वाली संस्था के। अहंकार को बहुत तुष्टि मिलेगी लेकिन निरानंद पीछे छूट जाएगा।

योगियों में अलग-अलग स्तर के अनुभव है, बुद्धि है और कुछ ज्यादा ही तेजी से कार्य करने योग्य है। लेकिन अगर किसी में इतनी काबिलियत नहीं है कि उन्हें इनाम पाने वाली लिस्ट में शामिल किया जाय, वे अपने को अलग-थलग महसूस करता है। किसी भी बच्चे को माँ के प्रेम से कैसे वंचित किया जा सकता है ? जब धर्मशाला स्कूल की प्रिंसिपल ने पूछा कि जो बच्चे कक्षा में प्रथम आये हैं, उन्हें क्या इनाम दिया जाय।

श्री माताजी ने कहा, ''हर एक बच्चे को इनाम दिया जाय।''

हमारी देवी माँ क हृदय ऐसा ही है। हमारे दिमाग की गणना करने वाली मशीन के लिये ये समझना बहुत ही मुश्किल है कि माँ का हृदय, बच्चे द्वारा प्राप्त उपहारों या इनामों से उन्हें अपने ज्यादा करीब नहीं मानता बल्कि उनका हृदय हरएक के लिये एक जैसा ही धड़कता है। यह किसी भी भाई या बहिन को अजीब लग सकता है कि परिवार के लिये, कुछ करने के लिये, उन्हें इनाम देकर महिमा मंडित किया जाय। कोई ऊपर हो या नीचे, छोटा हो या बड़ा, सूर्य की किरणें प्रत्येक बच्चे पर समान रूप से गिरती है। कोई शक वहीं कि हम एक दूसरे का सम्मान करें। लेकिन सबसे महान् सम्मान, आत्मा का सम्मान है, अपने अहंकार को बिल्कुल भी पाले नहीं। उसे बढ़ाये नहीं। सूफी गुरु निजामुद्दीन औलिया ने अपने शिष्य अमीर खुसरों से कहा, ''अगर न्याय के दिन अल्लाह ने मुझसे पूछा कि तुम मेरे लिये क्या लेकर आये हो अपनी दुनिया से। मैं कहूँगा अँगारे जैसा जलता हुआ प्रेम जिसे ये टर्की का बाशिन्दा आपके लिये लाया है।''

टर्की का बाशिन्दा ओर कोई नहीं बल्कि अमीर खुसरो था जो कि कव्वाली संगीत के जनक थे।

***

अध्याय - 24

वह कभी भी हम पर नहीं छोड़ती थीं।

''तुम्हें यह सब हासिल करना चाहिये,

अगर तुम नहीं हासिल करोगे,

मैं बार-बार कोशिश करूँगी...'' - श्री माताजी

एक कॉआर्डिनेटर व योगीभाई में इस बात पर बहस हो गयी श्री माताजी को गिफ्ट कौन प्रस्तुत करेगा, श्री माताजी ने पूछा कि कॉआर्डिनेटर को गिफ्ट के बारे में किसने जानकारी दी। मैंने उन्हें बताया कि यह बात मैंने ही उसे बिना गलत इरादे के ब ताई थी। श्री माताजी ने कहा कि कॉआर्डिनेटर की सख्त प्रकृति को जानते हुये मुझे विवेक से काम लेना चाहिये था।

मैंने सुझाव दिया, ''क्यों नहीं हम उसे हटा देते। वह पाँचवीं बार खरीदा 'प्रयोग किया हुआ जहाज' है। (Fifth hand ship)

उनके पति ने भी मज़ाकिया अंदाज में कहा, ''शिपिंग कॉरपोरेशन में हम (fifth hand ship) को लोहे के ढ़ेर में मिला देते हैं।''

श्री माताजी आनन्दित नहीं हुयी, ''मैं अपने बच्चों को बचाने के लिये आई हूँ, उन्हें अकेला छोड़ने के लिये नहीं। मैं उस पर कार्य कर रही हूँ, जैसे ही उसकी कुण्डलिनी उठेगी, हम उसके वाइब्रेशन्स को कॉआर्डिनेटर का चित्त पेण्डुलम की तरह इधर-उधर आ जा रहा था और उसका मन कभी मजबूत होता, कभी कमजोर हो जाता। श्री माताजी ने उसे छोड़ा नहीं, बल्कि हर एक अवसर पर उसपे अपना चित्त रखा। एक दिन वह बहुत मायूस था, श्री माताजी ने उसे प्यार से थपथपाया और प्रोत्साहित किया, ''अब

तुम ईश्वर के साम्राज्य में हो। क्यों नहीं, तुम उन सकारात्मक अनुभवों के लिये कोशिश करते व उन्हें याद रखते, वही तुम्हारी मदद करेंगे।''

श्री माताजी के चित्त और प्रेमभरी राय से वह बदलने लगा। उसके चेहरे की कठोरता नरमी में बदलने लगी। वह बहुत ही प्रेममय व सबका ध्यान रखने वाला बन गया। उसका चमत्कारिक पुनर्जन्म एक उदाहरण था, प्रेम व धीरज के चमत्कार का। हम मनोवैज्ञानिक तरीके से किसी को देखना छोड़ दे और अपना सारा विश्वास, माँ कुण्डलिनी में निहित कर दें, और सबसे ज्यादा यदि हम श्री माँ के उदाहरण को मानें कि कैसे उन्होंने परिवार के सबसे कमजोर सदस्य पर अपना चित्त रखकर उसे सबसे ताकतवर बना दिया।

***

अध्याय - 25

A grain of Rice (चावल का दाना)

एक छोटी सी बूंद सीप में जाकर मोती बन जाती है,
एक सागर कभी खाली नहीं होता
जब एक नहर उसमें से निकाल दी जाती है।
इसी तरह उनकी उदारता व आशीष भी खत्म नहीं होते।

दीवाली पूजा के बाद, कबैला में अचानक भूख जागी व रात के खाने के लिये कार्यवाही होने लगी। हाँलाकि तभी हमारे योगी भाई ने हमें प्रसाद लेने का आग्रह किया। जैसे ही हमने प्रसाद के चने चबाये, हमारी नाभि पूर्ण रूप से संतुष्ट हो गयी और हम डिनर के बारे में भूल गये। हमने अपना यह अनुभव सामूहिकता के साथ जब साझा किया और उन्हें भी नाभि तृप्ति का अनुभव हुआ। हम सभी को प्रभात के प्रकाश जैसा अनुभव आया कि प्रसाद माँ अन्नपूर्णा का आशीर्वाद था और सामूहिक नाभि को उसे ग्रहण करके तृप्ति आ गयी।

बाद में, शाम को जब श्री माताजी को खाना परोसा गया, उन्होंने बस एक ग्रास (निवाला) खाया और बोली कि मैं तृप्त हो गयी और इससे ज्यादा नहीं खा सकती। वह संतुष्ट थीं क्योंकि उनके बच्चे संतुष्ट थे।

एक ऐसी ही कहानी महाभारत के समय की है जहाँ द्रौपदी अपने पाँचों पतियों के साथ वनवास में थी और जंगल में रह रही थीं। दुर्योधन ने यह अचूक मौका द्रौपदी से बदला लेने का चुना। यह जानकर भी कि उनके पास भोजन नहीं है, उसने ऋषि दुर्वासा को उनकी झोंपड़ी में खाने के लिये न्यौता। उनकी योजना यह थी कि भोजन न पाकर ऋषि दुर्वासा, द्रौपदी से

नाराज होकर उसे श्राप दे देंगे। जबकि द्रौपदी ने अपनी विनम्रता नहीं खोयीं, बल्कि बड़े सत्कार से ऋषि का अभिनंदन किया। उसने उन्हें खाने का आग्रह किया, नदी में स्नान के पश्चात् आप पधारें, भोजन तैयार मिलेगा।

ऋषि के स्नान के लिये प्रस्थान के बाद, द्रौपदी ने रसोई खंगाली, लेकिन उसे अनाज का एक दाना भी नहीं मिला। उसने श्रीकृष्ण से प्रार्थना की, और वह फौरन मदद को पहुँचे। उन्होंने पूछा कि रसोई में कुछ है क्या खाने के लिये, मुझे बहुत भूख लगी है। उसने कहा, ''मेरे पाँचों पति ने वह सब खा लिया, जो भी पका था, और मैंने उनका बचा हुआ भोजन खा लिया, अब यहाँ एक दाना भी नहीं बचा है।''

जब वह बर्तन साफ करने लगीं तब उन्हें एक चावल का दाना मिला। श्रीकृष्ण ने कहा कि अगर तुम यह मुझे अर्पित करो तो मेरे लिये यह काफी होगा। उन्होंने प्रभु को अर्पित किया, सच्ची श्रद्धा व प्रेम से, कि उस दाने से उनकी भूख शांत हो गयी।

जैसे ही कृष्ण की भूख शांत हुयी, ऋषि दुर्वासा की भूख भी शांत हो गयी, और वह द्रौपदी के निमंत्रण को भी भूल गये।

इसी तरह जो भोजन श्री माताजी को अर्पित किया जाता है, वह आशीर्वादित हो जाता है और प्रसाद बन जाता है। उन्होंने बताया, ''अगर सिर्फ एक दाना भी चावल का रह जाय तो आपस में बाँट लो क्योंकि मेरे भीतर के देवी-देवता संतुष्ट हो जाएँगे।

लेकिन वे असंतुष्ट भी हो सकते हैं। एक मौके पर हम श्री माताजी के साथ एक योगिनी के घर गये। यह एक लम्बा रास्ता था, हम बहुत थक गये थे। मेजबान श्री माताजी के लिये चाय लेकर आई और बातें करने में लग गयीं। श्री माताजी ने देखा का उसने हम सब को कुछ भी खाने को नहीं दिया है। उन्होंने चाय का वह कप बिना पिये हुए ही छोड़ दिया। घर लौटने के

रास्ते में उन्होंने एक पिज्ज़ा शॉप पर गाड़ी रुकवाई व हम सबके लिये पिज्ज़ा व कोक मँगवाया।

बिना कुछ भी कहे, कैसे एक माँ सब कुछ जान जाती है।

हमने यह अनुभव किया है कि जब भोजन माँ अन्नपूर्णा को अर्पण करते हैं और प्रसाद के रूप में हम ग्रहण करते हैं तब वह प्रसाद न केवल हमारी नाभियों को संतुष्ट करता है बल्कि उसको प्रचुर मात्रा के लिये भी आशीर्वादित करता है। थोड़ा सा खाना न जाने कितनों का पेट भर देता है। ऐसा कैसे होता है? ये वर्णित नहीं किया जा सकता क्योंकि वे स्वयं तेजी से घटित होता है। श्री माताजी ने बताया कि परम चैतन्य मेरे भीतर से लहर के रूप में प्रसारित होते हैं। जब यहाँ कुछ पवित्र मंगल कार्य घटित होता है, मेरे शरीर में विराजे हुये देवी-देवता प्रसन्न हो जाते हैं और बहुत सारा चैतन्य प्रवाहित करते हैं।''

जैसे हम उनके शरीर के अंग-प्रत्यंग हैं और हमारे वाइब्रेशन्स भी इन्हीं के साथ मिल जाते हैं व प्रवाहित होते हैं। इतना ही नहीं, जब वाइब्रेशन्स बहुत त्वरित गति से प्रवाहित होते हैं तब यह इंगित होता है कि वह हजारों आशीर्वाद हम पर लुटा रही हैं। इसके अतिरिक्त वह हमें निर्देश भी दे रही होती है व रक्षा भी कर रही होती है।

अगर भोजन बहुत अल्प है और एक सहजयोगी थोड़ा भी दूसरे से सांझा करता है तब वह माँ अन्नपूर्णा के आशीर्वादों से उसका थोड़ा सा भोजन भी लंबी अवधि तक चलता है और सबके लिये काफी हो जाता है। लेकिन अगर वह सोचता है कि उसका अधिकार है उस सीमित भोजन पर तब माँ अन्नपूर्णा का प्रेम कैसे बहेगा ?

यही ही नहीं, सूखे के दौरान, योगीजन मंत्र पढ़ते हुये उन बीजों को चैतन्यित करें, तब पैदावार भी बढ़ जाती है। यही श्री माताजी ने किया था,

जब महाराष्ट्र में अकाल पड़ा था; उन्होंने बीजों को वाइब्रेट कर, किसानों को मुफ्त में ही बाँटा था। सूखे के बावजूद भी फसल खूब हुयी और सबके लिये भोजन था।

प्रकृति श्री माताजी की बड़ी हो आज्ञाकारी थी। जब कभी बारिश प्रोग्राम से पहले आती, हम उनसे प्रार्थना करते, वह रूक जाती। इसके विपरीत जब महाराष्ट्र में सूखा पड़ा था, पूजा में पानी का स्तर (भूजल) बहुत नीचे चला गया था और पानी की बहुत कमी थी। श्री माताजी ने हमसे (वर्षा के देवता) प्राणजय मंत्र बोलने के लिये कहा। हमने श्री प्राणजय के मंत्र लिये, उसके बाद अगली सुबह बरसात हुयी।

इसी तरह, उन्होंने हमें सामूहिकता के हित के लिये भी कई सारी शक्तियाँ दी है। हम सब जानते हैं मि. कोहली के बारे में जिन्होंने बरसात रूकने की प्रार्थना की, और वर्षा रूक गयी। एक बार राहुड़ी में वर्षा न होने से अकाल व सूखे की मार पड़ी तब मि. धूमाल ने प्रार्थना की व बरसात हुयी। योगियों के पास इस तरह के बेशुमार अनुभव हैं।

प्रकृति हमारी कुण्डलिनी को respond करती है क्योंकि वह प्रकृति माँ की ही प्रतिछवि है। इसलिये प्रकृति हमारे मंत्रों को मानती है, यह निर्भर करता है कि हमारी श्री माँ से जुड़ाव कैसा है ! हमारे प्रेम की तीव्रता प्रकृति को हमारी शुद्ध इच्छा के हिसाब से कार्य करवा लेती है।

अमीर खुसरो कहते हैं-

'लोग सोचते हैं कि वे जिन्दा इसलिये हैं
क्योंकि उनके भीतर आत्मा है,
लेकिन मैं जिन्दा इसलिये हूँ क्योंकि मेरे भीतर प्रेम है।''

***

अध्याय - 26

''वरदान माँगो''

मेरे बच्चों, मुझसे कुछ माँगते हुए झिझको नहीं,
जितना तुम्हें चाहिये मैं दूँगी।
मैं यहाँ तुम्हारी सभी इच्छाओं की पूर्ति के लिये हूँ।
तुम बस सब कुछ स्वीकारते चले जाओ,
मैं तुम्हें उससे भी ज्यादा दूँगी जितना तुम्हें चाहिये।

सहजयोग के शुरूआती दौर में, श्री माताजी ने एक पूजा के बाद अभय मुद्रा में खड़े होकर आशीर्वाद दिया, ''कुछ भी माँगो में तुम्हें दूँगी।''

हम सब इच्छाओं से रोमांचित हो गये और हमारे सिर चारों ओर गोल-गोल घूमने लगे, ''पहले कौनसी इच्छा पूर्ति के लिये कहें- नौकरी, पैसा, कॉलेज, प्रवेश, सेहत, नयी गाड़ी आदि।''

एक बार श्री माताजी बड़ौदा में एक सहजयोगी के यहाँ रूकी। वह हर मंगल मौके पर उनकी पूजा करने का बहाना ढूँढ़ लेता। आखिर श्री माताजी ने उससे कहा कि अब उसे अकेले ही ज्यादा पूजाएँ नहीं करनी चाहिये, क्योंकि वह अकेले ही उनके वाइब्रेशन्स को अवशोषित नहीं कर पाता है, और उन्हें बहुत तकलीफ होती है। कितनी ही छोटी पूजा ही क्यों ना हो, सामूहिकता में होनी चाहिये। उन्होंने बड़ी प्रसन्नता भरी उदारता से हमें कई मौके दिये, जब हमें बार-बार अपनी इच्छाओं की पूर्ति प्राप्त हुयी (विभिन्न पूजाओं में)

इसी तरह की एक कहानी श्री गुरुनानक के संदर्भ में हैं। जब वह उत्तरी भारत में घूम-घूम कर धर्म का संदेश देते तब लोग उनकी शिक्षाओं को

अपनाते। एक बार ग्रामवासी उनके पीछे-पीछे चलने लगे। उन्होंने सोचा कि जो कुछ उन्हें चाहिये, दे देता हूँ। इसलिये उन्होंने रूपयों का एक पहाड़ बना दिया, और उन्होंने प्रसन्नता से लिया व चले गये।

फिर भी कुछ लोगों ने उनका अनुसरण किया। तब उन्होंने सोने-चाँदी के ढ़ेर लगा दिये, उन्होंने खुशी से सब लिया, और चले गये।

लेकिन एक इंसान जिसका नाम जोग्या था, उनके पीछे चलता रहा। गुरुनानक ने पूछा, ''तुम्हें कुछ चाहिये ?''

उसने विनम्रता से सिर झुकाया, ''नहीं महाराज ' मैं सिर्फ आपका साथ चाहता हूँ।''

गुरुनानक ने उसे गले से लगाया, ''जैसे मैं तुम्हारे लिये अच्छा हूँ, तुम मेरे लिये अच्छे हो।''

कविता

''जो कुछ भी तुम चाहोगे
मैं उसकी पूर्ति करूँगी
विनम्रता से माँगो, भक्ति व आदर के साथ''
लेकिन बेकार चीजें क्यों माँगे
जबकि उनके चरणों में देवत्व है।
जब मैं कुछ नहीं चाहता
मुझे ओर भी अधिक मिल जाता है।
सिर्फ उत्थान की प्रार्थना करो,
जब तुम आगे बढ़ोगे, हरएक चीज कदमों में होगी तुम्हारे।''

***

अध्याय - 27

उनका एक हाथ नहीं जानता था कि दूसरा क्या देता है !

जब कभी श्री माताजी किसी देश में जाती, वह वहाँ के हस्त शिल्प वस्तुओं को खरीदती, जिन्हें वह कलाकारों को भेंट में देती थी। फिर वह अपने बच्चों को भी उपहार देकर उनके घरों को आशीर्वादित करतीं। वह कहतीं, ''मैं देने का आनन्द उठाती हूँ, इससे मुझे बहुत आनन्द प्राप्ति होती है।

उनके उपहार हमारे बहुत ही प्रसन्नता दायक खजाने थे, ''आह, श्री माताजी ने मुझे यह दिया, इसके वाइब्रेशन्स शानदार है।''

गुरु पूजा से ठीक पहले, मैं कबेला में श्री माताजी का साथ दे रहा था कि किस तरह के उपहार मेजबान देशों को दिये जाएँ ! जब वह फोन पर बात कर रही थी, मेरा ध्यान एक घड़ी पर गया जो कि कॉफी टेबल पर रखी थी। मैं उसके घड़ी की दिशा व विपरीत दिशा के बीच आने-जाने (Oscillation) को देख रहा था। श्री माताजी ने मेरी आँखों में प्रशंसा के भाव देख लिये, और जैसे ही मैं प्रणाम के लिये झुका व उठा, उन्होंने मुझे वह घड़ी दे दी। मैं बहुत ही लज्जित हो उठा और विरोध किया, ''श्री माताजी, यह बहुत ज्यादा है, मैं कैसे ले सकता हूँ।''

वह हँसी, मैं तुम्हें उपहार देना चाहती थी, लेकिन समझ में नहीं आ रहा था कि क्या दूँ ? मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूँ कि तुमने मेरा काम आसान कर दिया।''

''लेकिन श्री माताजी आप मुझे पहले ही बहुत कुछ दे चुकी है, पैन, ब्रीफकेस, सूट का कपड़ा, कुर्ता, चाँदी का टी सेट आदि (जब कभी श्री माताजी भारत आतीं, वह हरएक के लिये उपहार देकर आती और हर एक बार जब भी मैं कबैला या विदेश जाता, वह मुझे उपहार देतीं। और जो कोई भी उनके साथ खरीददारी के लिये जाता, वह उसे गिफ्ट देतीं)

वह आश्चर्य से देखकर कहती, ''सच ! मैंने तुम्हें कब दिया !''

मेरी आँखों से आँसू बह निकलते।

''ओह माँ ! आपके एक हाथ दूसरे हाथ के दान के बारे में नहीं जानता। आपकी उदारता असीम है।

आपने कभी अपने उपहारों को गिना या तौला ?''

मैं अपने आप पर बहुत शर्मिन्दा हुआ और रातभर सो नहीं पाया। संस्कारों के चलते एक गुरु को अपने शिष्यों को उपहार देना नहीं बनता था क्योंकि वह सबसे बड़ा गिफ्ट जो देता था वह था- ज्योर्तिमय ज्ञान। और फिर उपहार पाने लायक मैंने कुछ किया भी नहीं था।

निश्चित रूप से, इस समय जो देवी माँ ने किया था, वह उनका प्रेम था, लेकिन फिर भी.... इतने, इतने उपहार !!! मैंने अपने भीतर ही यह फैसला किया कि उनकी उपस्थिति में किसी भी चीज़ को इतना प्रशंसा भरी निगाहों से नहीं ताकूँगा।

मैं सवेरे जल्दी उठा वह जानते हुये कि मुझे क्या करना है। मुझे सभी सुन्दर उपहारों को तालनू आश्रम के श्री माताजी के कमरे में सजा देना है। और उनके वाइब्रेशन्स को सबके साथ बाँटना है।

उनकी उदारता की कोई सीमा नहीं थी, पूजा के पास एक गाँव के स्कूल को उन्होंने दो कमरे बनाने के लिये पाँच लाख रुपये दिये। चैन्नई की कुच्चीपुड़ी एकेडमी के डाइरेक्टर को पचास हजार रुपये दिये। एक समर्पित योगी को उन्होंने उसकी शादी में अपनी हीरों की अँगूठी उसकी अँगुली में पहना दी, एक दुल्हन को जिसकी शादी आखिरी समय में तय हुयी थी, अपनी पूजा-साड़ी दे दी। ओह माँ ! मेरी दो आँखों में इतनी शक्ति नहीं, कि आप के सभी चमत्कारों को देख पाये।

***

अध्याय - 28

सब यहाँ से इधर-उधर चले जाओ !

जब सामूहिकता आत्मविश्वासी व शक्तिशाली हो जाती, तब श्री माताजी उन्हें अलग-अलग जगहों पर भेजकर सहज प्रचार-प्रसार के लिये भेज देती। ऐसी ही वाक्या श्री गुरुनानक के जीवन का है। एक गाँव में उन्हें बहुत सम्मान मिला। जब वह विदा हो रहे थे, उन्होंने आशीर्वाद दिया कि गाँव वालों बिखर जाओ, दूर-दूर चले जाओ। दूसरे गाँव में लोगों ने उन पर पथराव किया। जब वह जा रहे थे, उन्होंने आशीर्वाद दिया, ''वहीं बने रहो, जहाँ तुम हो।''

उनके अनुयायियों को बड़ा अचरज हुआ कि गुरु ने उन्हें ऐसा आशीर्वाद क्यों दिया ! और उन्होंने पूछा कि वह ऐसा क्यों चाहते हैं कि जिन लोगों ने उन्हें आदर दिया, स्वागत किया उन्हें गाँव छोड़ने की वह सलाह दे रहे हैं, जबकि जो उदण्ड थे, उन्हें वहीं जमे रहने का आशीर्वाद दे रहे हैं।

उन्होंने जवाब दिया, ''अच्छाई सद्गुणों से ही फैलायी जा सकती है, जबकि वह लोग जो उदण्ड है वह, वहीं रहें जहाँ वह थे।''

मुझे कालान्तर में 'प्रतिष्ठान' भवन पूजा के निर्माण के देखरेख का काम मिला। जब 'प्रतिष्ठान' बनकर तैयार हुआ, श्री माताजी ने मुझसे कहा कि तुम पूना में ही क्यों नहीं स्थायी रूप से रहने लगो।''

मैंने एक प्लॉट घर बनाने के लिये ढूँढ़ना शुरू किया, और एक मुझे प्रतिष्ठान के निकट ''भुसारी कॉलोनी'' में मिला। यह प्लॉट श्रीमान् भूसारी का था। श्री माताजी ने राय दी कि क्योंकि यह जगह प्रतिष्ठान के नजदीक है, यह आश्रम के लिये अधिक उपयोगी है जहाँ वह सब योगियों से मिल

सकती है। इस तरह वह प्लॉट लाइफ इटरनल ट्रस्ट के द्वारा आश्रम बनाने के लिये खरीद लिया गया।

लेकिन बिल्डिंग प्लान बने, उससे पूर्व ही इस 'खरीद' को कचहरी द्वारा रोग लगा दी गई। यह पता चला कि मि. भूसारी (दिवंगत) जो कि वर्तमान प्लॉट की मालिक श्रीमति भूसारी के पति थे, ने इस पूरी भूसारी कॉलोनी को एक मुस्लिम पार्टनर के साथ खरीदा था, लेकिन भूसारी जी ने अपने पार्टनर को किसी भी 'खरीद-बेच' की एवज में पैसा नहीं दिया था। इसलिये उस मुस्लिम पार्टनर ने कोर्ट से ऑर्डर लेकर, श्रीमति भूसारी की सभी डील रोक दी।

श्री माताजी जानती थीं कि इस कानून लड़ाई में बहुत वक्त लगेगा और उन्होंने उस मुस्लिम पार्टनर को यह पेशकश की कि ''जितना पैसा तुम्हें श्रीमति भूसारी से मिलेगा, वह हम देने को तैयार हैं। इस तरह उसने अपना मूल्य ले लिया। एक साल के बाद श्री माताजी ने वहाँ एक बहुत सुन्दर आश्रम बनाया। इसमें छिपी हुयी बात यह थी कि अगर मैंने इस प्लॉट को अपने मकान के लिये लिया होता तो मैं एक कभी खत्म न होने वाले कानूनी झगड़ों में उलझ जाता।

जब हम उनके शरणागत होते हैं, तब ना केवल वह हमारी रक्षा करती है, हर तरह की परेशानियों से, बल्कि सब हमारी परेशानियाँ, उलझनें अपने ऊपर ले लेती हैं।

श्रीकृष्ण ने भी ऐसा ही कहा है, योगक्षेम व्हाम्यम्; जो कोई मुझमें जुड़ा हुआ है, वह मुझसे सुरक्षा पाता है। मैं योग पाने वाले की सुरक्षा का जिम्मा उठाता हूँ।

***

अध्याय - 29

सहजयोग का भविष्य

सन् 1991 में, श्री माताजी ने मुझे उनकी पुस्तक 'सृजन' की मूल-लिपी मुझे छपने के लिये दी। अगले दिन उन्होंने कहा कि अभी छपाई (Publication) को रोक दो, वह एक अध्याय उसमें ओर जोड़ना चाहती है- ''सहजयोग का भविष्य''।

बहुत साल बीत गये और 2008 में इस्टर पूजा, नागपुर में, मैंने उनसे पूछने की हिम्मत जुटाई कि अन्तिम अध्याय 'सहजयोग का भविष्य' का क्या हुआ ?''

वह मुस्कुराई 'सहजयोग का भविष्य' मेरे यंत्रों पर निर्भर करता। लेकिन मुझे नहीं पता कि अभी वह कितने तैयार है। मेरा उद्देश्य मेरे यंत्रों को ठीक रखना है। ''सबसे पहले मैं अपने बच्चों की शक्ति को नापती हूँ, वह कितना दूर तक जा सकते हैं....''

सन् 2011 में, मैंने इसकी मूल प्रति को वर्ल्ड फाउण्डेशन, इटली और NITI भारत को सौंपी, जिन्होंने उनके पूरे कार्य को पब्लिश किया, सृजन-ईश्वर का खेल।

इससे मुझे यह विश्वास हो गया, अन्तिम अध्याय सहजयोगियों के कार्य से ही लिखा जा सकता है- उनके शरीर में ये कोशिकाएँ (Cells) कितनी गहराई जुड़ी है या वह उनसे टूट चुकी है...

सहजयोग को कोई भी तोड़ नहीं सकता।

कविता

मैं अपनी रातों को विचारों में समाप्त कर देता हूँ
लेकिन आज्ञा चक्र की गाँठ नहीं खुलती
लेकिन जब मैं अपने विचारों को क्षमा कर देता हूँ
गाँठ ढ़ीली पड़ने लगती है।
तुम तुम हो, मैं मैं हूँ, लेकिन एक दूसरे का भाग्य है
आओ गले लग जाओ !
बुद्धिमानों के रास्ते अलग व अजीव है
लेकिन हृदय का अपना रास्ता है।

प्रतिष्ठान के निर्माण के समय विदेशों से बहुत सारे योगी मदद करवाने के लिये आये। शाम के समय श्री माताजी हमें भजनों के लिये बुलाती एक शाम को वाराणसी के कारपेन्टर्स की टीम श्री माताजी के कार्य के लिये आये, उन्होंने (कबीरदास जी के शहर वाराणसी) कबीर के कुछ दोहे कहे। श्री माताजी ने कबीरदास जी की जीवन के बारे में बताया, ''उनकी मृत्यु के बाद उनके हिन्दू व मुस्लिम शिष्यों में बहस छिड़ गयी। हिन्दू शिष्य उनका अन्तिम संस्कार अग्नि से करना चाहते थे लकिन मुस्लिम दफनाना चाहते थे।''

तब उन्होंने हमें देखा और शून्य से देखते हुए बोलीं, ''लेकिन सहजयोग में कभी भी बँटवारा नहीं हो सकता क्योंकि तुम सब एक ही माँ के प्रेम-पाश में बँधे हो। मैं तुम सभी का विराट स्वरूप हूँ।''

जब मर्यादाएँ तोड़ी जाती है, गलितयाँ होना भी बहुत आसान हो जाता है और सब कुछ बहुत गलत हो जाता है। मर्यादाएँ सुरक्षा वाल्व की तरह होती है जो हमें मानसिक जाल में गिरने से रोकती है। हमारे सुरक्षा वाल्व 1984 की श्री गणेश पूजा में, श्री माताजी की उपस्थिति में श्री गणेश के सामने एक कानून की तरह स्थापित कर दी गयी थी (Zermatten) ।

चौथा कानून था, ''मैं हृदय से प्रत्येक सहजयोगी का आदर करूँगा और उन्हें श्री गणेश का स्वरूप समझूँगा। मैं प्रत्येक सहज योगी का सम्मान करूँगा क्योंकि वह एक महान् आत्मा है।''

प्रेम और सम्मान वह दो चीजें थी जिनके लिये हमने श्री गणेश से वादा किया था और वह श्री माताजी के वादे के साथ जुड़ा हुआ था ''नदी की समुद्र से मिलना है; यह मेरा वादा है।''

कोई भी उनके प्रेम प्रवाह को बाँट नहीं सकता, उनकी मिठास की खुशबू को दबा नहीं सकता और कोई भी उनके प्रकाश को धीमा नहीं कर सकता।

''जो दूध को पानी से अलग कर सकता है;
कबीर कहते हैं वे मेरे भक्त है।
वे उनके हृदय में रहेंगे जहाँ न्याय की सच्चाई है।
अगर हम अपने विचारों में भी पाप रखेंगे।
तब ईश्वर का नाम लेने का भी क्या फायदा ?
अरे मित्र, क्या तुम देख नहीं पाते कि हम एक हैं
लेकिन एक ही आत्मा दो शरीरों में है ?''

***

अध्याय - 30

हमें बाहरी चमक-दमक में नहीं खो जाना चाहिये

जब मुझे आत्म साक्षात्कार मिला, मैंने देखा श्री माताजी अपने दाँये अँगूठे को मल रही थीं जो कि सूचित कर रहा था मेरी दाँयी नाड़ी की अधिक गर्मी को (Over-active)। मैं अति गतिशीलता से बहुत सारे सामाजित हित के कार्यों-अनाथाश्रम आयुर्वेदिक संस्था, पाठशालाएँ, मोबाइल क्लिनिक और गायन संस्था आदि को देखता हूँ। जैसे ही एक काम पूरा होता, मेरा मस्तिष्क दूसरा ताना-बाना बुनने लगता। निश्चित रूप से नयी संस्था शुरू होना आसान नहीं था, यह एक लड़ाई होती थी जमी हुयी नकारात्मकता से।

लेकिन आत्म साक्षात्कार के बाद कुछ घटित हुआ - सभी काम बहुत आसानी से होने लगे। जब कभी किसी काम के लिये मेरी तीव्र इच्छा होती, तब अचानक ही रास्ता मिल जाता व मेरा काम बन जाता, मेरा ही कोई मित्र मदद के लिये तैयार हो जाता या अगर मैं किसी के बारे में सोचता और उसका फोन आ जाता। सभी काम थोड़ी ही समय में और ऐसी जगहों पर घटित होते कि मैंने कभी सोचा नहीं होता। यह ऐसा था कि जैसे बिन माँगे मुराद पूरी हो जाय। वाह ! वह बहुत मजेदार लगता।

धीरे-धीरे मैं इस ढ़की हुयी सुन्दर सच्चाई को जानने लगा। मैंने एक सीनियर सहज योगी से इस बारे में बात की और उन्होंने बताया कि ''श्री माताजी के अनुसार, जब हमारी कुण्डलिनी, सामूहिकता से जुड़ती है, यह हमारे लिये काम करना शुरू कर देती है।'' उन्हीं के अनुसार, ''मानव मस्तिष्क सोचता है कि सब कुछ वह ही करता है, इन चमत्कारों के माध्यम से, परम चैतन्य हमें बताता है कि हम सिर्फ मृत कार्य की कर सकते हैं, जबकि सभी जीवन कार्य परमात्मा के द्वारा होते हैं।''

ओह ! यह कितना सत्य है ! मैं प्रोग्राम करवाने में इतना व्यस्त हो गया कि मेरा दिमाग भ्रमित हो गया कि इसी से सहजयोग आगे बढ़ रहा है। मैंने निश्चय किया कि मैं अब आराम से सब कुछ करूँगा व अपनी परेशान नाभि को शांत करूँगा।

हाँलाकि श्री माताजी की कृपा से चमत्कारिक कार्य होते रहे। लेकिन एक अनुभव सदा ही मेरे ज़ेहन में रहा। नब्बे के दशक के प्रारम्भ में, श्री माताजी व उनके पति सर सी.पी. श्रीवास्तव प्रतिष्ठान पुणे में, अपनी शादी की सालगिरह मना रहे थे। सर सी.पी. ने मुझसे कहा कि मैं श्री माताजी के लिये एक विशेष पूलों का बुके ऑर्डर करूँ। वह चाहते थे कि वह बुके सुबह जल्दी ही मिल जाये ताकि वह उनके जगते ही सरप्राइज़ दे सकें।

8.30 बजे जब मैं दुकान (फूलों की) पर पहुँचा, तब वह बंद थी। मैं पूने गया था और पता नहीं था कि फूलवाले वहाँ देरी से दुकान पर पहुँचते हैं। मैं सकते में आ गया। कुछ ही मिनटों में सर सी.पी. के फोन शुरू हो गये।

''श्री माताजी उठने ही वाली हैं।''

मैंने बंधन दिया, ''मैं आ रहा हूँ।''

दूसरा फोन, सर सी.पी. बोले ''वह उठ चुकी है।''

दूसरा बंधन, ''आता हूँ सर।''

तीसरो फोन, ''वह चाय पी रही हैं।''

मैंने श्री माताजी से प्राथना की, ''कृपया, कृपया श्री माताजी...''

फोन- सर सी.पी., ''वह तीन संदेश भेज चुकी है मुझे बुलाने के लिये''

''हाँ, हाँ, सर सी.पी. अभी आया।''

मेरे साथ इतना बुरा कैसे हो सकता है। ''श्री माताजी, मैं सभी चीजें आपके चरण कमलों में छोड़ता हूँ, लेकिन कृपया उस फूलवाले को जल्दी ही दुकान पर भेज दीजिये।''

सर सी.पी. की आवाज सख्त होने लगी, ''मैं अपना ड्राइवर तुम्हारे लिये भेज रहा हूँ। कहाँ हो तुम ?''

''नहीं, नहीं मैं रास्ते में ही हूँ, मैं अभी पहुँचाता हूँ।'' मैंने अपने कुण्डलिनी उठाई व दुकान की सीढ़ियों पर बैठकर ध्यान में चला गया।''

एक राहगीर ने मुझे भिखारी समझ कर, कुछ सिक्के मेरी गोद में डाल दिये। कुछ ही समय में दूसरा निकला, उसने भी यही समझा व कुछ सिक्के डाले। गली के दो आवारा बच्चों ने सिक्कों को देखा, मेरी बंद आँखों को देखा व उन्हें उठा ले गये। अचानक मुझे ठण्डे वाइब्रेशन्स अपने सिर के ऊपर महसूस हुये। जो मैंने देखा मैं वाणी हीनता की स्थिति में आ गया। एक मुम्बई का सहजयोगी, जावेद खान ने अपनी मारूति वैन जो कि बहुत ही खूबसूरत व विशेष फूलों से लदी थीं, मेरे सामने ला कर खड़ी कर दी !!!''

ऐसे फूल, पूजा में भी कभी नहीं मिलते। मेरी स्थिति खुशी के मारे ऐसी हो गयी कि समझ में नहीं आया कि हँसू या रोऊँ। मैंने धरती माँ को प्रणाम किया, चूमा, ''धन्यवाद, श्रीमाताजी।''

जावेद खान को मेरी हरकतें देखकर बड़ी हैरानी हुयी। लेकिन समय कुछ भी कहने का नहीं था; मैं उसकी गाड़ी में जल्दी से बैठा, ''अगर तुम मेरे प्राण बचाना चाहते हो तो, तेजी से गाड़ी पूना प्रतिष्टान की ओर दौड़ाओ, जितना तुम दौड़ा सको। रास्ते में उसने मुझे बताया कि, ''मैं फिल्म शूट के लिये गया था लेकिन प्रमुख सितारे ने आखिरी समय में मना कर दिया और डाइरेक्टर ने छुट्टी कर दी। अब मुझे आज के दिन ऐसा लग रहा था कि मैं लंबी ड्राइव पर जाकर मस्ती करूँ। मैं फूलों के बाजार से गुजरा और मुझे कुछ अपनी तरफ खींच रहा था। फ्लोरिस्ट मेरा ध्यान थाइलैण्ड से आये हुये खूबसूरत फूलों की ओर जाने लगा। उसने कहा- अगर मैं बहुत सारे लूँ तो वह आधे दामों में दे दगा। मैंने वह सब खुशी से लिये व कार में रख दिये। मैं नहीं जानता कि कैसे मुझे विचार आया कि क्यों नहीं पूना चला जाय, हो सकता है श्री माताजी के चरणों में मुझे फूल चढ़ाने का मौका मिल जाय।

लेकिन मैं अभी भी अपने अजीब से फिल्मी परिधान में था, इसलिये मैं आपको ढूँढ़ रहा था कि एक कुर्ता उधार माँग लूँ।

''तुम मेरी पूरी अल्मारी ले सकते हो, लेकिन अभी नहीं।''

प्रतिष्ठान में घुसते ही मैंने देखा कि सर सी.पी. ड्राइव -वे में ही तेजी से घूम रहे हैं। इससे पहले की वह अपनी नाराजगी दिखाते मैंने उन्हें दुनियाँ के सबसे खुबूसरत फूलों का बुके दिखा दिया, ''मैंने इनको खासतौर से थाइलैण्ड से मँगवाये हैं।

उनकारी नाराजगी जादुई तरीके से गायब होने लगी और उन्होंने मुझे गले से लगाया और बोले, ''धन्यवाद, धन्यवाद, बहुत सारा धन्यवाद। ऐसा लग रहा है जैसे ये फूल ''गार्डन ऑफ इडेन (स्वर्ग का बगीचा) से आये हों।''

जैसे ही मैंने शादी की सालगिरह का केक सबको वितरित किया, श्री माताजी मुझे देखकर मुस्कुराई, उनकी आँखों में तारे चमक रहे थे।'' वह खुश हो रही थीं, अपने ही नाटक को साक्षात् देखकर। निश्चित रूप से वह जानती थी कि ये फूल पूना से नहीं खरीदे गये।

बाद में शाम को, मैंने फूलों वाले चमत्कार को फिर याद किया, और मेरा दिल आदर व आभार से भर गया। इस विनम्रता से भरे आभार के चलते मैंने अपने हृदय में बहुत गहरे व सुन्दर परिदृश्य को महसूस किया जो कि थी- मेरी आत्मा।

उनकी आँखें नम हो गयीं, ''कोई शक नहीं जो तुम माँगोगे, तुम पाओगे।'' तब उन्होंने बहुत दूर क्षितिज में देखा और ध्यान की स्थिति में बोलीं, ''एक आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति को हर चमक-दमक से दूर रहना चाहिये, और इच्छाओं से भी यह होना चाहिये। उसे इच्छा नहीं करनी चाहिये। अगर काम होता है तो ठीक है, ना हो तब भी ठीक है। तुम्हारी शुद्ध इच्छा किसी भौतिक वस्तुओं के लिये न होकर, साधकों को आत्म साक्षात्कार देने के होना चाहिये।''

तब उन्होंने सीधे मेरी आँखों में देखा। उनकी आँखों में ऐसी दिव्य ज्योति थी कि मेरी आँखें अंधी होने लगी। ''लेकिन इच्छा अन्दर से आनी चाहिये। मैं इच्छाविहीन हूँ। और अगर तुम साधकों को आने की शुद्ध इच्छा नहीं करोगे तो सहजयोग किस तरह आगे बढ़ेगा।''

मुझे लॉर्ड्स प्रेयर याद आ गयी
ओ महामाया, हमें बाहा दिखावे की ओर न ले जायें।
बल्कि हमें बुराई से बचायें
आप ही का साम्राज्य, आप ही का गौरव गान सदा के लिये हो सदा हो।

मैं प्रातःकाल बहुत जल्दी चार बजे ही सोकर उठ गया। मुझमें ऐसी तीव्र शुद्ध इच्छा थी कि पूरे संसार को आत्म साक्षात्कार देना है। मैं हवाई जहाज से एक पब्लिक प्रोग्राम के लिये कोलकाता गया। दो घंटों की उड़ान के दौरान श्री माताजी के कहे शब्द मेरे दिमाग में घूमते रहे ''कि शुद्ध इच्छा हृदय से होनी चाहिये। मेरे भीतर की शुद्ध इच्छा ने मेरे सभी विचारों को मुझसे दूर कर दिया। यह तभी संतुष्ट हो सकती थी जब साधकों की अपार संख्या प्रोग्राम में आत्म साक्षात्कार के लिये आती।''

जैसे ही मैं माइक के सामने खड़ा हुआ, कुछ असंभव सा घटित हुआ- मैं रो पड़ा। मैंने किसी तरह अपने गले के गोले को निगला और प्रारम्भ किया। आत्म साक्षात्कार देने वाले पार्ट से पहले ही उन सबकी कुण्डलनियाँ नृत्य करने लगीं। मैं माँ आदिकुण्डलिनी की शक्ति यानि उनकी करुणा से अभिभूत हो गया। धीरे-धीरे वह करुणा आनंद में बदल गई, फिर ढ़ेर सारी खुशियाँ और मदमस्त होकर सब आनंदित हो गये।

इन सबसे मुझे समझ में आया कि वह सब वेलफ़ेयर प्रोजेक्ट मेरे दिमागी खेल मात्र थे। लेकिन जब दैवीय अमृत को पी लिया तब कौन इन दिमागी खेलों की ओर जाएगा।

***

अध्याय - 31

पैसा फ़िजूल खर्च ना करो...

श्री माताजी इसका विशेष ध्यान रखती थीं कि हमें उनके लिये अधिक पैसा नहीं खर्च करना चाहिये। वह पूना जा रही थीं और वहाँ की सामूहिकता उनके सम्मान में एक नामी संगीतज्ञ को बुलाना चाह रही थीं। जब श्री माताजी को पता चला, उन्होंने समाचार भेजा कि, इतना सारा पैसा उस संगीतज्ञ पर खर्च करने की कोई आवश्यकता नहीं, इससे बेहतर है उसे सहज के प्रचार-प्रसार पर खर्च करो।

वह हमेशा हतोत्साहित करती थी कि उनके पूजा-उपहारों पर इतना पैसा खर्च करने की आवश्यकता नहीं। यह सच है कि हर एक पूजा में विशेष प्रार्थना उनकी ओर से की जाती थी कि कोई भी उन्हें उपहार नहीं देगा। लेकिन हम कहते, ''कि हम अपना प्रेम कैसे प्रदर्शित करें।''

वह कहतीं, ''अगर तुम मुझे एक छोटी सी सुपारी भी प्रेम से दोगे, मैं उसे ले लूँगी। लेकिन अगर तुम बिना प्रेम के मुझे हीरा भी दोगे, तो मैं नहीं रखूँगी। लेकिन मैं तब बहुत प्रसन्न होती हूँ जब तुम उत्थान में प्रगति करते हो।''

सदा मेरे पास जब भी आओ
एक टिमटिमाते छोटे से बिन्दू के रूप में।
मुझे थोड़े ही की आवश्यकता है
अगर वह तुम्हारे हृदय से आता है।

***

अध्याय - 32

यह सब बहुत पहले घटित हुआ था या हुआ ही नहीं हो !

फरवरी 2001 में, मैं श्री माताजी के साथ नागपुर गया, जहाँ उनके भाई नाना मामा गहन चिकित्सा कक्ष में भर्ती थे। जब श्री माताजी वहाँ पहुँची, वह पहले ही गुजर चुके थे। उनकी अचानक मृत्यु से सब तरफ शोक की लहर फैल गयी और हम सब बहुत दुखी हो कर (भावनात्मक) बांई तरफ झुक गये। श्री माताजी गहन मौन में चली गयीं।

अगली सुबह हम पूना की ओर प्रस्थान कर गये। बाबा मामा उनके हृदय के नजदीक थे लेकिन उन्होंने इस गहन शोक के बारे में कुछ भी नहीं बोला, जैसे कुछ भी नहीं हुआ हो। उनका अतिशीघ्र कार्य हमें बाँयी तरफ के झुकाव से निकालना था। उन्होंने हमें हमारे हृदय चक्र को हल्का करने के लिये, इस जीवन्त मौके का उदाहरण दिया। प्रत्येक ने इस हाल ही में घटित घटना को सुना व जल्दी ही शोक से निकल गया जैसे यह बहुत पहले घटित हुआ हो।

मैं अचँभित रह गया, यह देखकर कि कैसी युक्ति वह इस संकट की घड़ी में काम लेती है, हर तकलीफ़ व दुःख को उन्होंने मौन में जाने दिया जो कि हम पर गलत असर डाल सकती थी, हमारे आदर्श व संतुलन गड़बड़ा सकते थे। उन्होंने अपने दर्द के बारे में नहीं सोचा, और अपना चित्त हमारे दर्द के बारे में नहीं सोचा और अपना चित्त हमारे दर्द को कम करने में लगा दिया।

शिवरात्रि पूजा 5 मार्च को होनी थी लेकिन फिलहाल परिवार में हुयी ग़मी की वजह से हमने माँ के सामने उसे नहीं करने का प्रस्ताव रखा।

श्री माताजी ने कहा, ''अगर तुम कुण्डलिनी को देखते हो, तब तुम समझ पाओगे कि मृत्यु है ही नहीं। मृत्यु में ही जीवन है। यह दूसरे जीवन की ओर बढ़ने का क़दम है, जहाँ कुछ समय के आराम के बाद वह पुनः नयी ऊर्जा के साथ मानवता के कल्याण के प्रति संसार में आते हैं।''

अभी मृत्यु, अभी मृत्यु है, प्रेम में मृत्यु है।
जब तुम प्रेम में ही मृत्यु को प्राप्त होते हो।
तुम्हें एक नया जीवन मिलेगा
मानवता को मृत्यु का संदेश हमेशा
हजारों बार मिलता है।
परमात्मा के प्रेमी स्वयं को प्रस्तुत कर देते हैं।
वह पुकारे जाने का इन्तज़ार नहीं करते।

कई बार ख़तरे हमारे दरवाजों पर खड़े होते हैं। मेरे साथ एक जैसा ही वाकया हुआ। श्री माताजी पर अंगापुर में पत्थरों से आक्रमण हुआ, अंध श्रद्धा वालों की ओर से। उन्होंने प्रतिक्रिया नहीं की व मौन में चली गयी। जब हम प्रतिक्रिया देने लगे उन्होंने रोका व कहा, ''जो सदा ही तलवारों के साथ रहते हैं, तलवारों से ही वह मरते हैं।''

श्री माताजी का सदाचारी व्यक्तित्व, सादगीपूर्ण और हरएक चीज को खतरनाक माहौल में भी अलग ही दृष्टिकोण से देखना, उनका एकदम विशेष गुण था।

सारे जीवन भर की साधना भी हमें उनके नज़दीक जाने की बराबरी भी नहीं देती। लेकिन एक बात सत्य थी- यह वास्तविकता थी। यह सब देखकर, पढ़कर हम सब न्यूनतम यह कर सकते हैं- प्रेरणा पाना।

जब मेरी दाँयी नाड़ी उत्तेजित होने लगती, मुझे उनके कहे शब्द याद आते, ''मैंने तुम्हें कुछ भी करने को नहीं कहा है।'' और इससे मैं अपने मानसिक असंतुलन को समझ पाता।

ना ही वह कभी भूतकाल या भविष्य की कोई योजना बनातीं।

श्री माताजी एक योगिनी का कैन्सर ठीक कर रही थी और उन्होंने पूछा, ''क्या यह बहुत तकलीफ़ दे रहा है ?''

उसने जवाब दिया, ''माँ मैं इसके बारे में नहीं सोचती।''

श्री माताजी ने उसे लगाकर कहा, ''यह एक सच्ची सहजयोगिनी की पहचान है।''

यह बहुत ही विनम्रता से भरा अनुभव है और हमें इसे अपने भीतर लेना चाहिये। अगर कोई दुर्भाग्य आता है और कुछ गलत घटित होता है, हमें उसके बारे में नहीं सोचना चाहिये या किसी से भी कहना भी नहीं चाहिये। अगर कोई खतरा है या कोई बीमार है, इसे शान्ति से निकल जाने दीजिये जैसे यह बहुत पहले की बात है या ऐसा हुआ ही नहीं।

***

अध्याय - 33

श्री गणेश मध्यस्थता करते हैं...

इन्टरनेशनल सहज पब्लिक स्कूल मुट्ठी भर बच्चों के साथ शुरू किया गया था। शुरू में फीस बहुत कम थी, जिससे स्कूल के खर्चे भी पूरे नहीं होते थे, श्री माताजी बड़े प्रेम से बाकी पैसा स्वयं भर देती थी। कई वर्षों तक श्री माताजी ऐसा करती रहीं, तब तक जब श्री बाबा मामा जो कि इसके फाइनेन्स को देखते थे, कहा कि श्री माताजी पर अधिक बोझ डालना ठीक नहीं। उन्होंने प्रस्ताव रखा कि पैसे की कमी को पूरा करने के लिये फीस में 15% की वृद्धि करनी चाहिये। बच्चों के माता-पिता ने विरोध किया व श्री माताजी के पास गये।

यह भारत-टूर की शुरूआत का समय था। श्री माताजी अली बाग में मि. कोहली के बंगले में रूकी हुयी थीं। श्री बाबा मामा ने स्कूल बजट पेश किया और माता-पिता फीस बढ़ोतरी पर ऐतराज़ करने लगे। श्री माताजी ने बाबा मामा के प्रस्ताव को मँजूरी दी, लेकिन अभी भी कुछ माँ-बाप प्रतिकार कर रहे थे। तभी एक बहुत जोर का धमाका हुआ और श्री गणेश जी की मूर्ति जो कि बहुत ऊपर शेल्फ (ताख) पर रखी थी गिरी व टूट गयी।

श्री माताजी बोलीं, ''देखा, श्री गणेश को दखल देना पड़ा। वह सहज विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर है। क्या तुम अब विश्वस्त होओगे।''

माता-पिता ने अपने कान पकड़े व क्षमा माँगने लगे।

अक्सर जब हम परम चैतन्य को नजर अंदाज करते हैं, परम चैतन्य हमें न केवल जब हम परम चैतन्य को नजर अंदाज करते हैं, परम चैतन्य हमें न केवल बचाता है बल्कि सही रास्ते पर पुनः स्थापित करते हैं। लेकिन यदि हम सावधान नहीं होते, तब हम निश्चित रूप से फिसल जाते हैं।

अध्याय - 35

एक बदतमीज़ पत्रकार

एक आक्रामक पत्रकार न्यूयॉर्क में श्री माताजी का इंटरव्यू ले रहा था और हर तरह के बेहूदे सवाल पूछ रहा था, ''एक चेला अपने गुरु से सीख कर, उनसे नाता तोड़ के अपना एक अलग दुकान खोल लेता है, इससे आपको चिन्ता नहीं होती ?''

श्री माताजी ने जवाब दिया, ''तुम मेरे शिष्यों के बारे में ऐसा कैसे कह सकते हो, वे मेरी आँखों की ज्योति है।

अभी तक मैं स्वयं को रोके हुये था लेकिन अब मेरा नियंत्रण खुद की भावनाओं पर से खत्म हो गया, आँसू मेरी आँखों से बहने लगे, ''निश्चित रूप से वह हमें बहुत प्रेम करती है, लेकिन नहीं जानता था कि उन्हें हम पर इतना भरोसा था।''

कविता

उनकी आँखों की रोशनी कहीं नहीं गयी।
ना ही कभी वह हल्की हुयी।
उन्होंने कई लैम्प रोशन किये
और दीवाली के लिए हर जगह रोशन किये।
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता यदि हम एक रात कम सोयें,
जितना हम जीएँगे, सदा ही उनकी टॉर्च थामने वाले बनके।

लेकिन अभी भी कई दीयों की रोशनी ऐसी है जो पहचान पाना चाहती है और उद्देश्य (जीवन का) पाना चाहती है। उन्होंने नये तरीके

निकाले उनके नाम से ताकि वह निम्न पा सके। कुछ ने यह भी दावा किया कि श्री माताजी ने उन्हें दर्शन दिये और नये तरीके सहज के बताये या श्री माँ ने उन्हें विशेष शक्तियाँ प्रदान की है जिससे वह लोगों के दिमाग पढ़ सकते हैं या भविष्य के बारे में बता सकते हैं।

जब श्री माताजी ने यह सब सुना तो कहा कि कोई भी नयी टेक्नीक्स् के लिये मेरा नाम नहीं लेगा। ये सब अतिचेतन की भूत बाधा है जो भविष्य को देखते हैं, सुनते हैं या भविष्य को पढ़ते हैं।

यह अहंकार है जो नयी टैक्निक्स का दिखावा करता है। मैं सभी तरीकों के बारे में अपनी प्रवचन में बता चुकी हूँ और किसी को भी कोई भी अतिरिक्त तरीका उनके सामने प्रकट होकर या सपने में आकर नहीं बताई। अगर कोई इसका फायदा उठाकर पैसा बनाता है तब वह मेरे रक्षा कवच से बाहर है और मैं उसके लिये जिम्मेदार नहीं।

***

अध्याय - 36

एक पाठ जो बहुत देर से पढ़ा

वह साधक जो नब्बे के दशक में आये, उनके चक्र कुगुरुओं द्वारा बहुत खराब कर दिये गये थे। लेकिन सामूहिक करुणा का बहाव ऐसा था कि उन्हें बचा लेना चाहते थे। हम अपने उन मित्रों को बचा लेना चाहते थे कि जो रजनीश के द्वारा बरबाद किये गये थे और श्री माताजी से पूछा कि क्या हम उन्हें पब्लिक प्रोग्राम में ला सकते हैं। उन्होंने कहा कि अच्छा होगा कि उन्हें मेरे घर ले जाओ।

लेकिन अंत में वे पब्लिक प्रोग्राम में ही पहुँच पाये। जैसे ही श्री माताजी ने सामूहिक आत्म साक्षात्कार दिया, वह पाँचों ताश के पत्तों की तरह बिखरने लगे। हमने उनके कॉलर पकड़ कर उठाया, लेकिन वह फिर पसर गये और ऐसा बार-बार हुआ। अन्त में हमने उन्हें उठाकार हॉल के बाहर पहुँचाया। हमें बहुत बाद में जाकर समझ में आया कि हमने उन्हें प्रोग्राम में बुलाकर मूर्खता की थी, उनके चक्र इतने अधिक बरबाद थे कि उनके वाइब्रेशन्स को झेल नहीं पाये।

प्रोग्राम के बाद श्री माताजी ने उन्हें स्टेज के पीछे अटैंड किया। वे खड़े होकर उनका सामना नहीं कर पा रहे थे, अतः माँ ने उन्हें लेट जाने को बोला। जब श्री माताजी उनकी कुण्डलिनी उठा रही थी, वे कूदने लगे। हम सात सहज योगी थे और उन्हें नीचे लिटाने की पूरी कोशिश कर रहे थे लेकिन उनके भीतर की बाधाएँ इतनी ताकतवर थीं कि हमें उठाकर फेंक देती थी। यह नाटक चलता रहा और अंत में श्री माताजी ने कहा कि दोहराओ, ''श्री माताजी आप ही होली घोस्ट (Ghost) (पवित्र माँ) है जिन्हें कि क्राइस्ट ने भेजा है।''

उनके मुँह भयानक तरीके से टेढ़े हो गये और भयंकर आवाज में कुछ बोले (जिन्हें उन्होंने रजनीश के आश्रम में सीखा था)। और तब ही हमने दिल थाम कर देखा कि भूत-बाधा चली गये। उन्हें लगा उनके सीने में भारी शिला टूट गयी हो और उनके चेहरे बदल गये। खुशी के आँसू उनके गालों पर लुढ़कने लगे और वे श्री माँ के चरण कमलों में लोट गये। श्री माताजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया और विश्वास दिलाया कि ''अब तुम परमात्मा के साम्राज्य में आ चुके हो और कुछ भी डरने का नहीं।''

***

अध्याय - 37

क्यों नहीं सिर्फ़ पके हुये खाने को खाकर आनंद लिया जाय ?

''मैं उन लोगों की देखभाल करता हूँ जो मेरी पूजा करते हैं
बिना विचलित चित्त के,
जो कि कितनी भी कठिनाई आए, स्थिर रहते हैं।
मैं उन्हें बढ़ाता हूँ जितना उनके पास है,
और मैं उन्हें वह भी देता हूँ जो उनके पास नहीं है।''

भगवत गीता (xi, 22)

1976 में भाग्य की देवी मुझ पर मेहरबान हुयी और मुझे श्री आदिशक्ति के साम्राज्य में ले गयीं। जैसे ही मैंने उनके चरणों में प्रणाम किया मेरी कुण्डलिनी उसी वक्त उठी और उन्हें प्रणाम किया। अपने भीतर पहले ही मैंने उनको पहचान लिया था, सम्पूर्ण विश्वास था और दिमाग में कोई शक नहीं था।

कविता **मैंने आपको हर जगह ढूँढ़ा।**
एक ही जग मैंने नहीं ढूँढ़ा अपने हृदय में।
और वहाँ मैंने आपको विराजमान पाया।

वह बड़े प्यार से मुस्कुराई मेरे होंठो पर एक सवाल आया, ''मैं ईश्वर से कैसे मिल सकता हूँ ?''

उनकी आँखों में करूणा नमी बनकर उतरी और मुस्कुराई, ''अगर तुम ईश्वर को मिलना चाहते हो तो इस सुन्दर प्रकृति को देखो जो उसने तुम्हारे लिये बनाई।'' यह कभी समाप्त नहीं होती।

उन्हें मेरी उहापोह की स्थिति पर दया आयी, ''जब तुम्हारी माँ ने तुम्हारे लिये शानदार भोजन बनाया है, तुम भोजन बनाने की विधि क्यों जानना चाहते हो, क्यों नहीं पके हुये खाने का आनंद लेते।

जैसे ही मैंने निरानंद का अमृत पी लिया, मेरी सारी प्रश्नोत्तर की आदत खत्म हो गयी। भीतरी मौन में, मेरे कानों में उनके शब्द गूँजने लगे, ''भोग-लक्ष्मी वह है जो भोजन का आनंद देती है। पहले, उन्होंने इस सुन्दर संसार की रचना की और तब वह उसमें प्रसन्न हो जाती है।''

जैसे ही मैंने साक्षी अवस्था पाई, मेरे लिये कर्ता भाव को छोड़ना आसान हो गया। नयी अवस्था ने मुझे परम चैतन्य द्वारा संपादित कार्यों को एक के बाद एक दिखा दिया।

पहले एक शुद्ध इच्छा भीतर जागी। तब सौभाग्य लक्ष्मी ने स्टेज तैयार किया। इस कार्य को सम्पन्न करने के लिये वाइब्रेशन्स उत्सर्जित किये वाइब्रेशन्स ने बीज को धरती से जोड़ा, और अन्त में अंकुर फूट निकला।

माली जिसने बीज बोया था, अँकुरण देखकर प्रसन्न हो गयी। माली ओर कोई नहीं, सौभाग्य लक्ष्मी हैं और जो अपनी रचना को देखकर प्रसन्न होती हैं वह है भोग लक्ष्मी।

अब मैं वाकई जान गया हूँ
कि आपके दरवाजे से कोई निराश नहीं लौटता।
वह भी जो भाग्यहीन है
आप उनकी तक़दीर भी बदल देती है।

अगर आप उनकी भाग्य बदल देने का उदाहरण देखना चाहते हैं तो एक छोटे से गाँव उदिगाँव, (राहुरी के पास) का दरवाजा खटखटा सकते हैं।

श्री माताजी का हृदय द्रवित हो गया जब उन्होंने महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाके में निःसहाय और छोड़ी गयी (निष्कासित) स्त्रियों को देखा और एक लघु उद्योग ट्रेनिंग का सेन्टर खोलने की सोची। हमने तर्क दिया कि ना तो हमारे पास पैसा है, ना ही जमीन।

तभी अचानक राहुरी की एक योगिनी श्रीमती धूमल ने अपने गाँव अर्दगाँव की जमीन दे दी।

अपनी आँखों के चमकते सितारों के साथ श्री माताजी मुस्कुराई तुम्हारा दिमाग सोचता है, इसकी योजना बनाना है, बिगाड़ता है, लेकिन परम चैतन्य वह है जो काम करता है।

इस पाठ से हमें यह समझ में आ गया है कि जब श्री माताजी अपना चित्त किसी पर ले जाती है, कार्य कभी ना कभी होता अवश्य है।

जैसा कि है, वह कालातीत है, किस समय यह होगा, कहा नहीं जा सकता। कुछ कार्य जल्दी से हो जाते हैं, कुछ में समय लग जाता है जबकि कुछ में बीस साल भी लग जाते हैं।

अब क्योंकि जमीन हमारे पास है, अब अगला कदम दान की ओर था, कोई चैरिटी संस्था से सम्पर्क किया गया। मैंने एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट अपने फ्रैंड को भेजी जो कि आस्ट्रेलिया में हाई कमिश्नर था।

कुछ सप्ताह के बाद उसका जवाब आया एक क्रिसमस पार्टी के निमंत्रण का। मैंने शराब पार्टियों में जाना बंद कर दिया था, लेकिन वाइब्रेशन्स ठण्डे आ रहे थे और मैं गया। जैसे ही क्रिसमस के उपहार बाँटे जा रहे थे, मेरे मित्र ने चमकती आँखों से एक बंद लिफाफा मेरे हाथ में दिया।

उसमें एक चैक था जिसमें उतनी ही राशि थी जितनी प्रोजेक्ट के लिये चाहिये थी। मेरी मानसिक सोच ने घंटी बजाई, ''जरूर वह बच्चों वाली

हरकत कर रहा है, कोई भी इतनी बड़ी राशि बिना एक प्रश्न पूछे बिना जाँच-पड़ताल के कैसे दे सकता है।'' एक मजाकिया क्रिसमसी अंदाज में, मैंने वह चेक फिर से उसके हाथ में दे दिया।

उसे आश्चर्य हुआ, ''क्या यह तुम्हें अपने प्रोजेक्ट के लिये नहीं चाहिये।''

''निश्चित रूप से चाहिये, लेकिन तुम मजाक कर रहे हो !''

वह हल्के से मुस्कुराते हुए बोला, ''पागल मत बनो, क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि क्रिसमस के मौके पर यह हमारी एम्बेसी का रिवाज है कि इतना पैसा चैरिटी (दान) में दिया जाय।''

निश्चित रूप से जब श्री माताजी आशीर्वाद देती है तब बरसात नहीं होती, बल्कि धाराओं के रूप में गिरता है।

श्री माताजी ने बिल्डिंग प्लान बनाकर मि. धूमल को इस प्रोजेक्ट के लिये नियुक्त किया कि इसका निर्माण कार्य को अपनी देखरेख में पूरा करो। उनके समर्पण को बहुत धन्यवाद कि उन्होंने निर्माण कार्य समय से पहले पूरा करा दिया। आस्ट्रेलिया के हाई कमिश्नर ने इसका उद्घाटन किया। जब वह यात्रा पर नहीं होती थीं तब नारी शक्ति के हित के लिये क्राफ्ट व कला पर अपना चित्त लगाती। उन्होंने यह खोज निकाला कि साधारण सी बुद्धि व कच्चे माल की बुहतायतता, मिट्टी के बर्तन व सिरेमिक्स की कला के लिये काफी है। उन्होंने एक ट्रस्ट बनाया, वह भी महिलाओं का, ''सहज विमेन वेलफेयर सोसायटी।''

इस चमत्कार से हमारी निर्विकल्प समाधि की राह काफी आसान हो गयी। इसके बाद पीछे मुड़कर देखने का प्रश्न ही नहीं था। जब कभी श्री माताजी अपना चित्त किसी भी चीज पर देतीं, तब तक हम समझ जाते कि काम अवश्य होगा। चाहे वह मुम्बई का हैल्थ सेन्टर हो, निर्मल प्रेमाश्रम, ग्रेटर नोएडा, म्यूजिक एकेदमी या कबैला का स्कूल।

शुरू में मुश्किलों को देखकर भय लगता था, लेकिन श्री माताजी को अपनी हृदय में आसीन करके, हम जानते थे कि हम कर्ता नहीं। वही भोग लक्ष्मी व सौभाग्य लक्ष्मी थीं।

मैं लगभग इन सब प्रोजेक्ट्स में काफी नज़दीकी से जुड़ा हुआ था और पाया कि जब कभी किसी में पैसे की कमी पड़ती तो जाने कहाँ से अचानक ही आ जाता। यह एक दोहरा आशीर्वाद था हमें कि ये समझ में आ गया कि वह हमारे हृदय में हैं व हम उनके हृदय में है।

और वह बन्दा जो उनके हृदय में सुरक्षित बैठा हुआ है, उसे चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। प्रत्येक दिन एक नयी बात होती जो कि हमें उनकी सुरक्षा का एहसास करा देती। अगर मैं उन सबका रिकार्ड बनाऊँ तो कई किताबें लिखनी पड़े। लेकिन एक बार में आपके साथ शेयर करना चाहूँगा।

मैं धर्मशाला में पूना आ गया था, प्रतिष्ठान के निर्माण कार्य के लिये। धर्मशाला का मेरा घर खाली था। यह कोई 200 वर्ष पुराना काफी फैला हुआ मैन्शन था, और उसे मरम्मत कराने के लिये काफी रुपयों की जरूरत थी, उसे बेचना ही ठीक लगा।

2002 में, मैं धर्मशाला आया और उसके आखिरी सौदे के लिये। अचानक मुझे एक पुराने मित्र, जोधपुर के महाराज जिन्होंने ITC होटल ग्रुप के साथ पुराने महलों के हैरिटेज होटल बनाने का करार किया था।

हमारी बातचीत कुछ इस तरह हुयी।

जोधपुर- वेलकम हैरिटेज धर्मशाला में प्रॉपर्टी देख रहा है, होटल बनाने के लिए, तुम अपनी प्रोपर्टी हमारे साथ क्यों नहीं जोड़ लेते।

लेकिन मैं यह सब कैसे कर पाऊँगा, मैं तो पूना शिफ्ट हो रहा हूँ।

जोधपुर - यह कोई समस्या नहीं, हम सब काम कर लेंगे, तुम्हें बस उसका रख-रखाव करना है।

लेकिन मैं कोई एल्कोहल वहाँ सर्व नहीं करने दूँगा।

जोधपुर : ''तब तुम पैसा नहीं बना पाओगे।''

भाग्य की देवी मुस्कुराई
जो कोई आपके नाम को अपनाता है,
मुझे फिर डर कैसा ?

तब भाग्य की देवी मुस्कुराई और मेरे घर को आशीर्वाद दिया, और वह होटल ग्रेस के रूप में बदल गया। श्री माताजी उसमें 1985 में एक पब्लिक प्रोग्राम के लिये ठहरी। उनकी कृपा से एल्कोहल फ्री होटल ग्रेस उन बाकी होटलों से ज्यादा कमाई वाला बन गया जहाँ एल्कोहल परोसी जानी थीं। यही नहीं, उस होटल में आने वाले सैकड़ों लोग हर वर्ष आत्म साक्षात्कार पाते हैं। इससे भी ज्यादा, यह स्थानीय सहज सेन्टर को जगह प्रदान करता है।

इसके बाद, इस होटल के साथ कई सारे चमत्कार जुड़े हुये हैं। धर्मशाला में एक बार गर्मी के मौसम में पानी की बहुत कमी हो गयी। मैंने बोरिंग की कई बार बहुत कोशिश की लेकिन पानी नहीं मिला क्योंकि होटल ढलान पर बना हुआ था। एक रात श्री माताजी मेरे सपने में आई और उन्होंने सेन्टर में अपने सिंहासन के नीचे इशारा किया। सवेरे मैं वहाँ गया और सिंहासन के नीचे ढूँढ़ा लेकिन वहाँ कुछ नहीं था। वही सपना अगली रात को फिर दिखाई दिया। मैंने फैसला किया कि सिंहासन के नीचे खुदाई करने का

फैसला किया। वहाँ बहुत ही महंगा इटालियन मारबल लगा था, मेरे मैनेजर ने मुझे उसे तोड़ने से बहुत मना किया। लेकिन मैं आगे बढ़ा और पहली ही मार में पानी का फौव्वारा फूट पड़ा - वहाँ एक सदाबहार झरना था। इसने इतना दिया कि होटल के लिये पानी काफ़ी था।

लेकिन ठहरो, ना केवल वह हमें आशीर्वाद देती है बल्कि हमारे काम-काज की भी रक्षा करती हैं।

रैवेन्यू डिपार्टमैन्ट का एक क्लर्क मेरी पूना की होटल के लिये काफी परेशानी खड़ी कर रहा था क्योंकि वह रिश्वत लेना चाहता था। उसने एक गलत केस बना लिया व होटल को बहुत भारी जुर्माने की चपत लगा दी। इसमें बहुत तनाव पैदा हुआ और मैंने उस तनाव को श्रीमाताजी के चरणों में छोड़ दिया। शाम को जब मैं उनके कमरे में गया, मैं हतप्रभ रह गया कि पूणे के रैवेन्यू डिपार्टमेन्ट का अफसर श्री माताजी के चरण-कमलों में प्रणाम कर रहा था। श्री माताजी ने उनसे मेरा परिचय करवाया, मैंने उन्हें अपनी परेशानी बताई। उन्होंने मुझे अगले दिन आपने ऑफिस बुलाया। जब मैंने उन्हें सभी आँकड़े व सत्य बताया, उन्होंने जूनियर क्लर्क के फाइन वाले ऑर्डर को समाप्त कर दिया।

कबीरदास जी कहते हैं-

''माया एक स्त्री चोर की तरह है जो कि चुराती है (इंसानों)
लेकिन वह कबीर को धोखा नहीं दे सकती,
जिन्होंने उसे रंगे हाथों पकड़ा था।''

***

अध्याय - 38

लिखते जाओ....

कबीर कहते हैं-

''वेद व किताबों को पढ़ते जाना,

ओ पण्डित, ये सब दिमागी जमा खर्च है।''

श्री माताजी पूजा के पब्लिक प्रोग्राम से बहुत खुश थीं। प्रोग्राम से लौटते वक्त उन्होंने कहा, ''क्यों नहीं एक सहज पत्रिका शुरू की जाय।''

मैं बहुत रोमांचित हुआ लेकिन मुझे इसका कोई विचार नहीं था कि कैसे क्या किया जाय, क्योंकि इससे पहले का कोई संबंधित बिन्दू या पहले से सहज पब्लिकेशन्स नहीं था। मैं श्री माताजी को परेशान नहीं करना चाहता था और फैसला किया कि सही वक्त आने पर काम स्वयं ही हो जाएगा। इण्डिया टूर के एक सप्ताह के बाद श्री माताजी ने अपने पेन मुझे दिया, ''क्यों नहीं तुम इस टूर के अपने अनुभवों को लिखते ?''

मैंने कानून पढ़ा था, और मुझे पत्रकारिता का कोई अनुभव भी नहीं था। उनका पैन मेरे हाथ में और उस टूर के मज़ेदार घटनायें बहने लगी भाषा बनकर। मुम्बई से दिल्ली तक हवाई जहाज से जाते हुये मुझे एक मौका मिला उन्हें लिपि दिखाने का। उन्हें मेरी लिखावट पढ़ने में परेशानी हुयी और अपनी आँखों को सिंकोड़कर कहा, ''मेरे बच्चे शब्द बहुत पास-पास लिखे हुये हैं, क्यों नहीं तुम उन्हें थोड़ा दूर कर देते।'' उन्होंने कुछ शब्द लिखे यह समझाने के लिये कि अक्षरों को चौड़ा कैसे किया जाता है।

उन्होंने ओर समझाया, ''कि कथा कहने वाले को प्रथम पुरुष में नहीं बल्कि तृतीय पुरुष में 'हम' कह बात लिखो। जब तुम कहते हो 'हम' तब वह महत्-अहंकार बन जाता है और कथाकार का अहंकार एकादश में लय हो जाता है।

उन्होंने अपनी स्पीच को भी छोटा किया (संपादित), ''मैं अक्सर एक ही बात को बार-बार उस बात को समझाते के लिये कहती हूँ, इसलिये एक-एक शब्द को बार-बार कहने की आवश्यकता नहीं।''

आखिर सुधार के कई चक्रों के बाद जो कि एयरपोर्ट लाउन्ज और बॉर्डिंग के वक्त चले, 'डिवाइन कूल ब्रीज़' को प्रथम संस्करण ने दिन की रोशनी देखी। लेकिन और सुने, वह अति उत्तम के बिना ठहरती नहीं थी, ''एक कलाकार का उद्देश्य होता है अति उत्तम'' जैसे कि नदी को पथरीली चट्टानों को काटकर समुद्र से मिलने का रास्ता बनाना पड़ता है। वह तब तक आराम नहीं करती जब तक कि साधक की कुण्डलिनी अपने मुकाम पर पहुँच जाये। यह उनका वादा है।

मिलान वाले जाने वाले जहाज की रोशनी धीमी कर दी गयी थी, और मैं हल्की नींद लेने लगा। वह नहीं सोची और एक उपन्यास के पन्ने पलटती रहीं जिसे कि मैंने सीट के पॉकेट में छोड़ दिया था।

उन्होंने कमेन्ट किया, ''बजाय इसके कि किसी कमरे की सजावट व फर्नीचर का बड़ा-बड़ा वर्णन लिखो और दीवारों के वॉल पेपर के बारे में लिखो, क्यों नहीं वह मनुष्य की प्रकृति की सुन्दरता के बारे में लिखते।

अगर तुम 'नाना' को पढ़ो, कितनी बारीकी से मौपासा (फ्रैन्च लेखक) एक स्त्री हृदय की गहरी भावनाओं को उकेर पाये।

तॉलस्तॉय बहुत ही अर्न्तदर्शी थे। उनके रचे पात्र अपने भीतर के सही या गलत को अपने व्यवहार में लाते थे। अन्ना कैरिनीना भी अर्न्तदर्शी थी, उसने अपनी मूर्खता को पहचाना और अपना जीवन त्याग दिया।

हालाँकि मैं उनकी बातों को नींद में सुन रहा था, पर मेरा हंसा चक्र थोड़ा-थोड़ा खुलने लगा और मेरे चैतन्य मस्तिष्क में (उनकी बातों की) जड़े गहरे पैठ गयी। हँसा चक्र ने मुझे विवेकशील बना दिया कि मैं मानव मस्तिष्क को दोगलापन (दो रूप) और जटिलता को समझने लगा। लेकिन

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि जिस किसी के चेहरे के पीछे झाँक कर देखता, वहाँ कुछ ओर ही नजर आता।

दूसरी बार उन्होंने सम्राट अकबर के 'दीन-ए-इलाही' जो कि सब धर्मों का सार था, की प्रशंसा की। लेकिन कहा, 'तब संसार एक ही सर्वधर्म को अपनाने के लिये तैयार नहीं था।

उनकी 60th जन्म दिन पर मैंने उन्हें पसंद दीदा हिन्दी लेखक 'शरतचन्द्र' के सभी उपन्यासों का सेट दिया।

वह बहुत खुश हुयी। ''शरतचंद्र हिन्दी साहित्य के अन्तिम शब्द थे।'' उन्होंने बताया कि किस तरह मानवीय कमजोरियाँ इंसान को नीचे खींच लेती है, लेकिन अंत में उसकी आत्मा ही उसका बचाव करती है व पुनर्जीवित कर देती है। यह वह बात है जो आज के साहित्य कारों के पास नहीं। हेमिन्गवे से पहले भी कई अमेरिकी आत्म साक्षात्कारी लेखकों ने प्रकृति प्रदत्त योग्यता से उत्थान पाया जा सकता है यह लिखकर बताया था।''

मैंने प्रश्न किया, ''क्या क्रोध, लालसा, लालच, मोह और ईर्ष्या आदि भी प्राकृतिक मानवीय कमजोरियाँ नहीं ?''

''नहीं, तुम्हें वे प्राकृतिक लगती है, क्योंकि तुम सच्चाई से अवगत नहीं हो। आत्म साक्षात्कार के बाद तुम्हें जानना चाहिये कि तुममें प्राकृतिक योग्यता है उत्थान की। उत्थान मार्ग पर ऊपर उठना प्राकृतिक है। संतुलन में आना भी प्राकृतिक है। सहजयोगी होना भी प्राकृतिक है। यह भी हमारे भीतर है। हममें केवल अहंकार व संस्कार (Conditionings) है बल्कि सुसंस्कार भी है। तुम्हें सहजयोग के लिये परिचय-पुस्तिका लिखनी चाहिये जिससे उनकी प्रकृति प्रदत्त उत्थान को राह मिले।''

उन्होंने मुझे एक पार्कर पेन दिया।

कुछ महीनों के बाद, मैंने उनको मूल-लिपि दिखाई। सवेरे की चाय पीते हुये उन्होंने समझाया, ''कि लोगों को भाषण सुनना पसंद नहीं, इससे उनका अहंकार बढ़ता है।''

मैंने फिर लिखा, बहुत सारे सुधार के कई दौरों के बाद मैंने उन्हें फाइनल मूलप्रति दिखायी।

उन्होंने पूछा- ''क्या, तुमने इसका कुछ नाम सोचा है ?''

मेरे पास कोई विचार नहीं था।

उनकी चमकती आँखों से वह मुस्कुराई, ''आह ! एडवन्ट के बाद आता है 'ASCENT' (उत्थान)''

मार्च 1983 में मैंने Ascent (उत्थान) की पहली कॉपी श्री माताजी को पर्थ (आस्ट्रेलिया) भेजी, आशीर्वाद पाने के लिये। उन्होंने अन्तिम पाठ पर्थ के पब्लिक प्रोग्राम में पढ़ा।

उनके लौटने पर हमने उनसे प्रार्थना की कि वह कोयम्बटूर ठहर जाये, आराम के लिये। एक शाम को उन्होंने 'गीता' की मनु स्क्रिप्ट के पन्ने पलट कर देखा, जिस पर मैं काम कर रहा था, और अपनी आँखों के कोनों से मुस्कुरा कर देखा, ''अर्जुन एक योद्धा था तब तक, जब तक युद्ध शुरू नहीं हुआ था लेकिन वह 'कारण' व 'प्रभाव' में खो गया। कृष्णा ने ईश्वरीय कूटनीति की शक्तियों को काम में लेकर उसे सच्चाई दिखायी।''

मैं प्यासा था, और उनसे मेरी प्यास को बुझाने की विनती करने लगा।

उन्होंने बताया, ''तुम उनकी कूटनीति को बिना विवेक के नहीं समझ सकते। तुमने देखा, श्रीकृष्ण जानते थे कि मानव मस्तिष्क वास्तविकता को आसानी से स्वीकार करता नहीं इसलिये उन्होंने अहंकार को गोल-गोल घुमाने का कई युक्तियाँ काम में ली। उन्होंने अनन्य भक्ति की बात की, लेकिन अनन्य भक्ति बिना आत्म साक्षात्कार के हो नहीं सकती।''

उसके बाद की सभी शामों की उड़ाने महाभारत के युद्ध क्षेत्र में चली जाती थीं, जहाँ श्री माताजी ने श्रीकृष्ण की शिक्षाओं का रहस्य बताया। मैं विवेक के मोती चुनता और उनके बनाये गये नोट्स को संक्षिप्त रूप में लिखता। मैंने कुछ बातों को चित्र के रूप में भी बनाये जो कि किसी खास घटना से जुड़े थे। एक महीने तक बिना व्यवधान के, ना कोई आगन्तुक, ना

ही फोन, अन्त में (Gita enlightened) की रचना पूरी हुयी। श्री माताजी ने 2 फरवरी 1986 के पब्लिक प्रोग्राम, दिल्ली में इस पुस्तक का विमोचन किया व मुझे ब्लैक पेन से आशीर्वादित किया।

मैंने उस मोन्ट-ब्लेन्क पेन की अपनी बेटी, प्रज्ञा को दिया और हम दोनों ने मिलकर उससे कई रचनाएँ लिखी, " Let our spirit run free', The master trick', 'The game changer', 'The end game', Why ISIS', और 'Resurrection'. हाँलाकि इनके पात्र बाद के आधुनिक जहर के शिकार थे, उनकी कुण्डलिनी ने उन्हें समस्या को देखने का मौका दिया और क्योंकि उन्होंने आशा नहीं छोड़ी थी, उनकी कुण्डलिनी को उन्हें ज़हर से बेअसर करने का मौका दिया।

हाँ, यह सच है कि दुनिया पागल हो गयी है, लेकिन लोगों को मजबूर करना, यह कोई समस्या का इलाज नहीं, इलाज तो प्रेम ही है। मैंने इन किताबों से यह बताने की कोशिश की कैसे प्रेम की शक्ति आपको इस योग्य बना देती है कि आप उस 'ज़हर' को बाहर निकाल फैंके। यही वह थीम थी जो इन सभी पुस्तकों का आधार थी, श्री माताजी सदा ही वहाँ होती है जहाँ पुनर्जन्म (आत्म साक्षात्कार) दिया जाता है। यह सच है कि इन सभी पुस्तकों का एक ही अर्थ है।

यही नहीं , बिना शर्त का यह प्रेम, कला, संगीत और किताबों की रचना स्वतः ही होती है। एक लेखक, एक बाँसुरी की तरह होता है, बाँसुरी को खोखला बनाना पड़ता है ताकि वह उसे बजा सके।

मुझे श्रीकृष्ण की एक कथा याद है, उनके बचपन के सखा ने पूछा जो कि उन्हें बहुत प्रिय थे, ''तुमने गीता का उपदेश सिर्फ़ अर्जुन को ही दिया, मुझे क्यों नहीं दिया ?''

श्रीकृष्ण ने जवाब दिया, ''क्योंकि तुम प्रेम-स्वरूप हो, और जब सतयुग में तुम पुनः जन्म लोगे, तुम सिर्फ़ प्रेम के संदेश को ही महसूस करोगे जो कि मानव परिवर्तन का यंत्र बनेगा, अर्जुन को दिया संदेश इस कार्य में काम नहीं आएगा।

***

अध्याय - 39

कैसा लगता है जब आप अपनी पुस्तक स्वयं पढ़ते हो?

नागपुर के एक ट्रिप में श्री माताजी ने अपने बचपन को पुनः स्मरण किया और बड़े प्यार से अपनी माताजी के बारे में बताया, ''वह बहुत प्यार करतीं लेकिन बहुत सख्त भी थी, और इस तरह उन्होंने अपने सिद्धान्तों को हमारे भीतर रोप दिया'', जैसे ही वह किसी खास घटना को उल्लेख करतीं अपनी माताजी के विषय में, मैं उन्हें जल्दी से लिख लेता और उनकी आज्ञा माँगता कि मैं इन घटनाओं का उल्लेख अपनी आने वाले पुस्तक में करूँ ''द ग्रेट विमेन ऑफ इण्डिया''।

मैंने पूछा कि ''पुस्तक के कवर पर क्या रखूँ ?''

उन्होंने कहा, ''भारत माता के बारे में क्या विचार है ?''

मैंने विनम्रता से कहा- ''श्री माताजी, हमारे पास भारत माता को कोई चित्र नहीं।''

''मुझे एक कागज और पेन दो।''

जैसे ही उन्होंने भारत माता का चित्र भारत के मानचित्र पर उकेरा, उनकी आँखों में समस्त रचना समा गई। भारत माता के चेहरे की बनावट बिल्कुल उनकी छाया थी, और अभय मुद्रा में उनके हाथ भारत के नक्शे की बाह्य रेखा (out line) थी।

उन्होंने रोशनी डाली, ''मैं नहीं जानती कि वैज्ञानिकों ने धरती माँ की वास्तविक भूगोल कितना कितना समझा, कितना जाना। बिना वाइब्रेशन्स के वह धरती माँ से निकलने वाले स्वयंभू को कैसे जान सकते हैं ?''

उन्होंने स्पष्ट किया, ''कोई शक नहीं, भारत ब्रह्माण्ड का छोटा रूप है। यह भारत माता है। आदि कुण्डलिनी महाराष्ट्र के त्रिकोण में आसीन है। उनकी सुरक्षा आठ गणेश करते हैं जो कि स्वयंभू है और शक्तिपीठ भी। जब आदि कुण्डलिनी उठती है तब अलग-अलग चक्रों से गुजरती हुई सहस्त्रार चक्र (कैलाश पर्वत) को खोलती है। ईश्वरीय आभा यानि कि परम चैतन्य सहस्त्रार से निकल कर विभिन्न नाड़ियो से होती हुयी नदियों के रूप में नीचे उतरती है। हिमालय के वाइब्रेशन्स पूरे संसार को स्वच्छ करते है; नदियाँ माँ की तरह मानवीय उत्थान को पोषित करती हैं। यह उच्च कोटि के मानव का निर्माण करते हैं। क्योंकि वह ऊँचा देखने सोचने की क्षमता रखता है, जब उन्होंने सर्वोच्च, असीम प्रकृति को निहारा, तब उनके विचार-ईश्वर की ओर गये।''

दिसम्बर आया, भारत टूर महाराष्ट्र की नदियों के दिव्य किनारों पर कैम्प लगाकर आवंदित हुआ। हम भारत देश की पवित्र नदियों को प्रणाम करते हैं।

कविता

देवी माँ की कृपा से तुम बहती हो,
तुम किसी तरह की थकान नहीं महसूस करती,
तुम बहने से रूकती नहीं
तुम आकाश के पक्षियों की तरह आराम से उड़ती हो
हमारे जीवन की धारा भी धर्म (आत्मा) की नदी से मिल जाय
और हम अपने माँ के प्रेम को महान् समुद्र में लेजा पायें
ऐसा आशीर्वाद मिलें।

हम बहुत आनंद से परम चैतन्य का मज़ा लेते हैं, हमें उन महान् आत्म साक्षात्कारी संतों को धन्यवाद देना नहीं भूलना चाहिये जिन्होंने अपने

वाइब्रेशन्स इन तीर्थ स्थानों जैसी जगहों में जमा कर दिये थे। श्री माताजी ने अपने उन महान् पुत्रों के बारे में समय-समय पर कई महत्त्वपूर्ण घटनाएँ बताईं जैसे- संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, कबीर, एकनाथ, स्वामी रामदास, तुकाराम आदि। उन्होंने सहज योग के लिये आधार तैयार किया, लेकिन मेरा पहला कार्य भारत माता को अंग्रेजी हुकूमत से बचाना था, उसके बाद में अपना मिशन (सहजयोग) शुरू कर सकती थी।

हम नदी के किनारे अकेले नहीं थे। बहुत सारे तीर्थ यात्री नीचे उतर आये थे, औरतों से भरे हुये ट्रेक्टर चले आ रहे थेस, बच्चे भी व बूढ़े भी। भक्त गण उन सजी हुयी बैल गाड़ियों में भजन गा रहे थे। मैं विचारा, ''शरीर को धोने का क्या फायदा यदि हृदय स्वच्छ नहीं हो तो ?''

इसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया, ''एक सही तीर्थ यात्रा क्या है ? क्या यह आदत ही है ? संस्कार है या ईश्वर से मिलने की जबर्दस्त मानसिकता है।

जैसे ही मैंने तीर्थयात्रियों को देखा नदी में डुबकी लगाते हुये युनूस एमरे की लिखी हुयी कविता याद आती-

पवित्र तीर्थ यात्रा की आवश्यकता हो हज़ार बार करो,
लेकिन अगर तुम मुझसे पूछों, एक हृदय में झाँक कर देखो,
वही सवोत्तम है।

यह निश्चित है कि सच्ची तीर्थयात्रा हृदय की ही हो सकती। लेकिन रुको, इसके लिये हृदय के दरवाजे का ताला खोलना जरूरी है। और वहाँ है आत्म साक्षात्कार। अगर एक तीर्थयात्री अपने मुकाम पर पहुँच जाये तब भी वह दूर ही रह जाता है अगर उसने आत्म साक्षात्कार नहीं पाया हो तो। आत्म साक्षात्कार एक जीवन्त बल से ही क्रियान्वित होता है और किसी और तरह से नहीं।

जीवन्त बल वह है जिससे बीज अंकुरित होता है जैसे धरती माँ एक बीज को अँकुरित करती है और बीज सिर्फ अंकुर (Primule) के माध्यम से ही पौधे का रूप लेता है।'' यह एक जैविक क्रिया है कि बीज का अँकुर फूटना एक मृत क्रिया है। लेकिन जब यह किसी बंजर भूमि पर गिरते हैं तब यह क्रिया नहीं होती और बेकार हो जाता है। इसलिये आत्म साक्षात्कार ही एक तरीका है अपने भीतर प्रवेश करने का और कोई रास्ता नहीं। क्यों आदिशक्ति ने मानव योनि में आने को इतना महत्त्व दिया ?

इसके विपरीत एक तीर्थयात्री अगर तीर्थ स्थल जाता है लेकिन जरूरी नहीं कि वह अपने अन्तर्मन में भी प्रवेश पालें। इसी तरह, बिना जीवन्त क्रिया के एक तीर्थयात्री अपनी मंजिल (तीर्थ) के वाइब्रेशन्स (सुन्दर) को समाहित नहीं कर पाता। जबकि एक आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति की यात्रा बहुत पहले ही शुरू हो जाती है (बिना आत्म साक्षात्कार के शरीर की यात्र) क्योंकि यह जीवन्त शक्ति से जुड़ जाता है, और जब वह तीर्थ के स्थान पर पहुँचता है वह वाइब्रेशन्स में भीग जाता है।

आत्म साक्षात्कारी संतों ने हमेशा प्रेम का पाठ ही पढ़ाया। मैं हमेशा से जानना चाहता था कि वह साधकों की कुण्डलिनी को उठाने में रूक क्यों गये, ऐसा क्या हुआ !

श्री माताजी ने मेरे विचारों को पढ़ लिया, ''क्योंकि यह कार्य आदि शक्ति को ही करना था। सिर्फ़ वही इंसान को सम्पूर्ण रूप से देख सकती थीं और उसकी सभी आड़े-तिरछेपन को घेर सकती थीं।''

उन्होंने दूर कहीं नज़र डाली, मुझे भी देखा, ''भीतर वह सब एक जैसे हैं।''

उन्होंने नदी के किनारे की ओर इशारा किया, ''दुर्वासा ऋषि नदी के किनारों पर बैठकर ध्यान करते थे लेकिन उनका भयंकर मिजाज़ ऐसा था कि नदियाँ भी सूख जाती थी हर वस्तू सूख जाती थी।''

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, ''अगर ऋषि इतनी ऊँचा आत्मा थे, फिर भी उनमें इतना क्रोध क्यो था ?''

उन्होंने बड़ी गहराई से सोचते हुये कहा, ''ऋषियों को इतना अधिक क्रोधी नहीं होना चाहिये, लेकिन उनकी योग-साधना ने उनके अंदर बहुत गर्म मिजाज़ी भर दी थी। वे भटक गये थे और ईश्वर के साथ सही अनुपात (संतुलन) खो दिया था। वे राह से फिसल गये। तब वह श्राप देने लगे।''

''क्या सहजयोगी में भी श्राप की शक्ति है ?''

''नहीं, मैंने तुम्हें यह शक्ति नहीं दी है।''

''क्या आत्म साक्षात्कार, अहंकार को जल्दी ही विलय नहीं कर देता?''

''यह होना चाहिये, लेकिन तब नहीं होता यदि तुम उससे चिपके रहना चाहते हो। तुमने देखा कि उस समय ऋषि-मुनि इतने भाग्यशाली नहीं थे कि आदिशक्ति उनके साथ हो व उनका अहंकार अवशोषित कर लें। इसलिये वह अपने अहंकार से लड़ते रहते थे और उनमें एक सूक्ष्म अहंकार पैदा हो जाता था।

मैंने कहा, ''लेकिन उन्होंने इतनी गहन पुस्तकें लिखीं।''

उन्होंने कहा, ''किताब लिखना कोई बहुत बड़ा काम नहीं है, लेकिन तुम्हारी अपनी किताब पढ़कर तुम्हें कैसा लगा ?''

''मेरी अपनी पुस्तक को पढ़ना ???

उन्होंने पवित्र कुरान का एक सफ़ा पढ़ा-

हर एक व्यक्ति का यकीन हम उसकी गर्दन पे बाँध देते हैं। क़यामत के दिन हम उसे उसका सामना करने देंगे और उसे (गर्दन) चौड़ी खुलावट के लिये खोल कर कहेंगे-

यह तुम्हारी पुस्तक है, इसे पढ़ो।
और उस दिन तुम्हारी आत्मा तुमसे
हिसाब माँगेगी (17 : 12)

यह सफ़ा यह वर्णन करता है कि कैसे कुण्डलिनी हमारे इतिहास को स्वयं लिखती है, और हमारे स्वयं को जो नुकसान हम स्वयं पहुँचाते हैं उसके निशान भी उन पर होते हैं।

यह एक जगाने की पुकार थी, जब मैंने दूसरे लेखकों की किताबें पढ़ी थी और उनकी ओर उंगली उठाई थी लेकिन जब मैंने देखा अपना चित्त अपने भीतर लिया हालाँकि मेरी किताब का अगला पन्ना अलग दिखता था, अंदर की कहानी वही थी। शीशे की तरह साफ दिखाई देता था कि अन्दर भी प्रतिक्रिया, नाराजगी और कड़वाहट, अहंकार के रूप में नजर आते हैं जबकि शान्ति ठण्डक (मिजाज़ की, व्यवहार की) और आनंद जहाँ एक होकर दिखते हैं वह है कुण्डलिनी।

निश्चित रूप से उस समय, और दोबारा भी श्री माताजी ने कई बार इशारे से चिह्नित भी किया लेकिन मैं अब चुन-चुन कर ही पढ़ता था, जो परेशान कर सकती थीं उन बातों को छोड़ देता था। मेरी यात्रा में अब फायदेमन्द मानसिकता आगे चलती थी। मेरी बुद्धि कहती थी कि, ''अपने फायदे से बढ़कर और क्या है ?''

इन मानसिकता का जवाब भी मुझे मिल गया, जब मैं रामायण में श्री सीता के बारे में पढ़ रहा था। रावण की पत्नी मन्दोदरी जानती कि उसका कुनबा श्री राम के हाथों समाप्त हो जायेगा, और उसे बचाने हेतू उन्होंने श्री सीता से याचना की कि वह सिर्फ़ एक रात के लिये स्वयं को रावण के सम्मुख प्रस्तुत कर दे। लेकिन श्री सीता ने जवाब दिया कि उनकी पवित्रता बहुत महत्त्वपूर्ण है, ना कि उनकी फ़ायदा देखनेवाली प्रवृत्ति।

एक ओर चीज़ मैंने आत्म साक्षात्कारी संतों से सीखी- वे हर चीज़ का यश ईश्वर को देते थे ना कि स्वयं को। वे जीवन के बोरियत भरे रास्तों में बढ़ते हुये लोगों को खुशहाल करते जाते बिल्कुल वैसे ही जैसे फूल अन्जाने में ही अपनी खुशबू बिखरते हैं।

उनकी लेखनी कविता की दृष्टि से नहीं थी, ना ही आलोचना, ना ही कोई रचना तैयार की गयी थी, वे लिखते थे जो वह वास्तव में अनुभव करते थे। और इस तरह सत्य का आनंद हमें महसूस होता था। उन्होंने वर्णन किया था 'मौन संगीत (कुण्डलिनी का) सहस्त्रार पर जब बजता है वह अन्तहीन गुनगुनाहट के रूप में मुझे कहता है, ''हर घाटी, हर ऊँचाई, पूर्ण संसार उनकी जबर्दस्त चमकती हुयी हँसी से कम्पायमान होता है।'' (कुण्डलिनी की)

हाँलाकि उनका वर्णन मेरे अंदर बिजली की तरह दौड़ता था लेकिन मेरे कान कुंडलिनी के मौन संगीत को नहीं सुन पाते थे, न ही मेरी आँखें उनकी सुन्दरता की दिव्यता को निहार पाती थी। निश्चित रूप से श्री माताजी की उपस्थिति और ध्यान मुझे आनंद से भर देते थे। लेकिन जिस तरह बादलों से आकाश ढ़का रहता है उसी तरह मेरा चित्त हमेशा ही मेरी प्रतिक्रियाओं में गुम रहता था। मेरी प्रतिक्रियाएँ, चिड़चिड़ाहट, अधीरता और गुस्से के रूप में सतह पर दिखाई देती थी, खास तौर से जब मैं अन्याय होते देखता। या शायद एक सूक्ष्म सा अहंकार, अपने भीतर एक लेखक या एक ज्ञानी सहज योगी के रूप में, उभर कर आता। हालाँकि मैं श्री माताजी की नजदीकी से आशीर्वादित था, लेकिन साफ़ तौर पर कोई कमी जरूर थी। मुझे अपने गीयर्स ठीक करने होंगे यदि मैं उनकी असीमित उपस्थिति को महसूस करना चाहता था।

एक प्रश्न मेरे दिमाग में शिकायत की तरह था, जब मैं गाड़ी चलाता हुआ उनके घर पहुँचा, ''अपने किसी बहुत ही विशेष के साथ, हम सदा ही क्यों नहीं बने रह पाते, जो हमारे इतने नजदीक है जितनी कि मेरी नसें (रक्त वाहिकाएँ) यह ऐसा ही था कि पूछा जाय कि क्या मैं जीवित था ?

जैसे ही मैंने अंदर प्रवेश किया (उनके दरबार में), उनकी मधुर हँसी की आवाज़ की खनक से मेरी आत्मा पक्षी की तरह उड़ने लगा। वह नव विवाहित जोड़ों की आनन्दपूर्ण बातचीत के दौर में थीं। जैसे ही प्रत्येक जोड़ा एक अर्थपूर्ण संवाद अपने साथी के लिये कहता- श्री माताजी की हँसी अनंत को भी जगा देती।

उन्होंने एक भारतीय से विवाहित अंग्रेज़ (योगिनी) से पूछा, जिसकी सास उसे परेशान करती थी, ''तुम्हारी सास कैसी है ?''

योगिनी ने जवाब दिया, ''मैं उसका विचार नहीं करती।''

श्री माताजी बहुत प्रसन्न हुयी, उसे शाबासी दी, ''अब बनी तुम अच्छी बहू''

यह बताता है कि - 'प्रतिक्रिया मत दो'।

जब सब चले गये मैंने श्री माताजी से बड़ी विनम्रता पूर्वक अपनी गलती बताई, ''जैसे ही हम सहजयोग में उत्थान को पाते हैं, हमारा अहंकार ओर भी सूक्ष्म होता जाता है। सूक्ष्म अहंकार से कैसे निपटा जाये ?''

वह मुस्कुराई, ''मोहम्मद साहब कहते थे, 'माँ के कदमों में जन्नत है' उनसे आगे कुछ भी नहीं, उनका ध्यान करो। दिन और रात वह कड़ी मेहनत करते हैं, तुम्हारे अहंकार को अवशोषित करने में। मेरे पांव देखो, कितने सूज रहे हैं, लेकिन मैं उनको तुम्हारे विकारों को अवशोषित करने से नहीं रोक पाती क्योंकि वह बहुत ही करूणामय है।''

अब मुझे यह समझ में आया कि मेरा सहजयोग का ज्ञान मानसिक ही था और इसलिये ये मेरे अहंकार को अपने में विलीन नहीं कर पाया। इसके लिये और भी कुछ चाहिये था, और वह था ज्ञान का आत्मीकरण। ज्ञान का आत्मीकरण को ईश्वर की चारों ओर फैली हुयी प्रेम की शक्ति से जुड़ना।

और यह सब तभी संभव था, जब मैं अपनी तुलनात्मक (rational) प्रवृत्ति से निकल कर, एक-एक शब्द श्री माताजी का मंत्र की तरह था, उसे ग्रहण करता। वह सब करता जो श्री माँ ने हमें बताया। शुरूआत में यह सब मुश्किल था, लेकिन एक सुन्दर तितली बनने के लिये रेशम के कीड़े की मौत जरूरी थी और कोई रास्ता नहीं था।

निश्चित रूप से यह मृत्यु नहीं थी बल्कि पुनर्जन्म था। उपनिषदों में यही चेतावनी दी गयी है- ''जो विभिन्नता को देखता है और एकाकारिता को नहीं, एक मृत्यु से दूसरी मृत्यु पर घूमते ही रह जाते हैं।''

जब तक हम अपनी सीमित तुलनात्मकता से ऊपर नहीं उठेंगे, हमारी चेतना से विराट की चेतना कैसे बन पाएँगे ?

एक ही टोकन (प्रवेश-अनुमति) लेकर अगर कोई बहुत नन्हा जीव, विशाल जीव में बदलना चाहे तो वह मर जाएगा ओर कोई रास्ता नहीं। और अधिक नहीं, यह श्री तुकाराम के शब्दों में आनंद की उच्च अवस्था है, ''तुम्हें एक नन्हा सा परमाणु बनना होगा, यदि तुम आकाश बनना चाहते हो तो।''

मैंने दुष्टों को चेतावनी दी है ?

''बचकर रहो, चालाकी करना बंद कर दो।

क्या तुम नहीं जानते कि मेरे हृदय में कौन निवास करता है ?''

मैंने कड़ा रूख रखते हुये, अपने गियर्स को स्वयं के हित से हटाकर आत्मा के हित के लिये साधा। मैंने पिछले बोझे को उतार फैंका और अपने सूक्ष्म अहंकार को पीछे डाला। पिछले शीशे में सूक्ष्म अहंकार की जगह धुआँ सा दिखायी दे रहा था जो मेरे सही रास्ते से उठ रहा था- दाँयी तरफ़ की रेडियो एक्टिविटी (विकारों) का बेकार मानसिक कचरा।

संसार, अणु, परमाणु या रेडियो एक्टिविटी या दूसरे बलों का रूप नहीं है। हीरा कार्बन नहीं है, रोशनी ईथर की वाष्प नहीं। तुम कभी भी रचना की सत्यता को नहीं जान सकते, यदि तुम उसके विनाश के बिन्दू पर गहन ध्यान नहीं करते। **- रवीन्द्रनाथ टैगोर**

मुझे टैगोर की इस कविता से बड़ी प्रेरणा मिली। मैंने अपने मानसिक कचरे व न्युक्लियर कचरे के समांतर एक रेखा खींची। न्यूक्लियर कचरे की रेडियो धार्मिकता का गुण, बिल्कुल अहंकार की ज़हरीली प्रतिक्रिया जैसी ही थी। अहंकार की जहरी व्यवहारिकता है प्रतिक्रिया। हर क्रिया अपनी जैसी बराबर व विपरीत प्रतिक्रिया को पैदा करती है, और इस तरह अपने ही कक्ष (Orbit) में फँस कर रह जाती है।

जैसे ही मैंने श्री माताजी के चरण कमलों का ध्यान करना शुरू किया और हर वस्तु, हर बात उनको अर्पित करने लगा, ये संभव हुआ कि मैं उनका प्रेम अपनी शिराओं से भी अधिक नजदीक महसूस करने लगा, ''उनके प्रेम ने इतनी प्रचुरता से मेरे भीतर कार्य आरंभ किया कि मेरा हृदय ऐसे खुला जैसे पहले कभी नहीं हुआ। चारों ओर फैली हुयी ईश्वर की प्रेम शक्ति में सिर्फ प्रेम ही नहीं था बल्कि इतनी शक्ति देती थी कि उनका प्रेम हृदय में जो गिरता था धारा की तरह, वह सभी को गले लगाता था- एक मासूम बच्चे की हँसी की तरह, सूर्य की रोशनी में हँसते हुये फूलों की तरह, हवा में झूमती हुयी पत्तियों की तरह। मैंने अन्त में यह समझ लिया कि संतों की कथनी का क्या अर्थ है-''कुण्डलिनी का मौन संगीत जब सहस्त्रार पर नृत्य करता है (अनंतकाल तक), वह अपना संगीत मुझे सुनाती हैं।''

मैंने तीव्र भक्ति के साथ प्रार्थना की, ''जो भी होगा प्रभु ही करेंगे।'' ईश्वर की इच्छा शक्ति ओर कोई नहीं आदि शक्ति ही है। और आदिशक्ति

की इच्छा और कोई नहीं बल्कि परम चैतन्य है। यह देखता भी है, जानता भी है, समझता भी है और सबसे अधिक ये प्रेम करता है। सभी जीव उन्हीं से है, सभी उनसे ही जीते हैं और सभी को उनके अंदर ही लौट जाना है।

हृदय से उनका सम्मान व श्रद्धा रखते हुये मैं उन्हें फूल अर्पण किये वह मुस्कुराई, ''मैंने कुछ नहीं किया, यह तुम्हारे भीतर ही है।''

मैंने सोचा, ''वह जो कि सब कुछ करती है और हर काम के घटित होने का कारण है, सोचती हैं कि वह कुछ नहीं करतीं, और मैं जो कुछ नहीं करता सोचता हूँ कि सब कुछ मैं करता हूँ।''

वह एक आइने की तरह थीं जो कि फ़ौरन किसी भी योगी की काबिलियत को बता देती थी। वह उस योग्यता को निकाल कर और तराश कर एक सुन्दर मूरत गढ़ लेती थीं। जो स्टेज पर जाने से ही घबराता था, वह अच्छा वक्ता बन गया, जिसने कभी साहित्य भी नहीं पढ़ा था, वह कवि बन गये, जिन्होंने कभी कुछ भी नहीं बनाया था, वह बेहतरीन पेन्टर, कारपेन्टर, पोटर्स, कार्विस्, मेसन्स (मकान बनाने वाले) (जल ठीक करने वाले) प्लम्बर्स् और बिजली का काम करने वाले बन गये..... उनके आनंद को चहुँ ओर फैलाने वाले बन गये। उन्होंने बताया कि प्रेम ही आनंद है, और सहज योग और कुछ नहीं प्रेम है।

कबीर कहते हैं-

''ऐ मित्र, मेरी बात सुनो,
वह जानता है कौन प्रेम करता है।
प्रेम के लिये सुंदरता आवश्यक है, जो कि आनंद है,
सुन्दरता वह है जो कि सत्य है
प्रेम का सत्य ही ब्रह्माण्ड का सत्य है।''

***

अध्याय - 40

''जो मैं हूँ वही तुम हो...''

मैंने अपना पुणे वाला फ्लैट किराये पर दिया, लेकिन किरायेदार ने एक साल तक किराया नहीं दिया। मैं अपने शान्ति भरे जीवन से निकल कर इस झगड़ालू किरायेदार से माथापच्ची नहीं करना चाहता था। एक दिन ध्यान के दौरान श्री माताजी का गीता पर ज्ञान मुझे स्मरण हुआ। जैसे ही हिचहिचाते हुए अर्जुन ने जब हथियार उठाने को मना कर दिया, श्री माताजी ने कहा, ''अर्जुन युद्ध शुरू होने के पहले तक 'योद्धा' था।''

मुझ पर प्रकट हुआ कि सत्य से भाग कर अलग हो जाना कोई तरीका नहीं है, अगर मुझे शांति चाहिये तो मुझे इस समस्या का समाधान ढूँढ़ना होगा और वास्तविकता को रूबरू करना पड़ेगा। इसे बजाय कि मैं वास्तविकता से आँखें बंद करूँ और पीठ पीछे उसका वार झेलूँ, बेहतर होगा इससे दो-दो हाथ करने को तैयार रहूँ।

अपनी कुण्डलिनी द्वारा सहारा पाकर, मैं धरातल पर आया और किरायेदार से आमने-सामने बात की। अपनी शांति को खोये बिना, मैंने उससे स्पष्ट कहा कि मैं कोई बदतमीजी नहीं चाहता। लेकिन उसने सहयोग नहीं किया, मैंने कानूनी कार्यवाही शुरू कर दी।

किरायेदार ने जज के सामने घोषणा की कि हमने उसको अपना फ्लेट बेच दिया है और सबूत के तौर पर उसने मेरी पत्नी के नकली हस्ताक्षर की हुयी रसीद दिखायी। मैं बुरी तरह से परेशान हो गया। मैं अपने भीतर के तनाव को बढ़ते हुये महसूस कर रहा था, इससे पहले कि तनाव मुझे जकड़ लेता, मेरी कुण्डलिनी मेरे सहस्त्रार पर जल्दी से आ गयी और मुझे निर्विचार

अवस्था में भेज दिया। एक कालातीत अवस्था से मैं अपने बढ़ते हुये अहंकार को देख रहा था और क्रोध की भट्टी जल रही थी। लेकिन मेरी कुण्डलिनी ने आगे कदम बढ़ाते हुये पूरे हालात पर काबू पा लिया। यह वास्तविकता थी, मैं कोर्ट में होते हुये भी वहाँ नहीं था। मैं एक मौन साक्षी बना उस किरायेदार को देख रहा था। वह अनर्गल झूठ बोल रहा था, लेकिन मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। मुझे पूरा यकीन था कि मैं श्री माताजी द्वारा सुरक्षित हूँ, उनकी पनाह में हूँ। उनके शब्द मेरे कानों में गूँज रहे थे-

''तुम्हारा चित्त कहाँ है ! तुम्हारी इच्छा कहाँ है ?

तुम इतने परेशान क्यों हो ?

क्या मैंने वादा नहीं किया, मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी करूँगी।''

मैंने श्री माताजी के साथ ऐसी एकाकारिता पहले कभी महसूस नहीं की थी, तब भी नहीं जब वह शारीरिक रूप में मेरे सामने होती थी। यह जीवन बदल जाने वाला अनुभव था, और उनके शब्दों की वास्तविकता थी, ''मैं जो हूँ वही तुम हो।''

कबीर कहते हैं, ''मैं सदा ही हँसता हूँ कि, मछली जल में भी प्यासी रहती है।'' जैसे ही मैंने श्री माताजी को अपने मस्तिष्क में प्रवेश करने के लिये धन्यवाद दिया, उन्होंने मुझे कुछ ओर भी दिखाया- मेरी कुण्डलिनी की करूणा की शक्ति। उसके बाद मैं आराम से विश्वस्त हो गया कि जब कभी मैं परेशानी में फँस जाऊँगा, वह वहीं होंगी।

यही नहीं, इस अनुभव से मैं अपने उत्थान की ओर, अधिक बढ़ गया; इस परेशानी ने मुझे और भी मजबूत बना दिया और मुझे अपनी कुण्डलिनी के ओर नजदीक ले गयी। मैंने खोज लिया था कि मेरी कुण्डलिनी मेरे चेतन दिमाग से ज्यादा अच्छा जानती है, मैंने सब कुछ उन्हीं को समर्पित

कर दिया और कोर्ट केस की चिन्ता करना छोड़ दिया। जज के फैसला सुनाने के बाद मेरी कुण्डलिनी ने पहल कर, मुझे निर्देश दिया कि मुझे इसके विरुद्ध अपील करनी चाहिये। जबकि मेरा वकील इस पक्ष में नहीं था कि मैं अपील करूँ लेकिन मैंने आगे बढ़कर ऐसा किया। एक साल के बाद मैं जीत गया।

जय श्री माताजी !

बुल्ले शाह कहते हैं-

सिर्फ़ वही उन्हें जान सकता है, जिन्हें वह प्रवेश के लिये चुनते हैं ब्लैक कहते हैं;

संसार को यदि रेत के एक दाने में देखना चाहते हो,

और स्वर्ग को जंगली फूल में,

अनन्त को अपने हाथ की हथेली में पकड़ लो,

और अनन्त काल (ईश्वर) को एक घंटे में।।

***

अध्याय - 41

विवाह...

श्री माताजी विवाह करवाने में बहुत सारा समय व चित्त लगाती थीं। लेकिन उनके जोड़े बनाने के बाद, उन बच्चों को अधिकार था कि वे यह स्वीकारें या नहीं। सहजयोगियों को पूरी आज़ादी थी। जबकि वह तब भी बहुत ध्यान रखती थी कि विवाह के बाद भी सब ठीक है या नहीं। वह बहुत मेहनत करती थी, जोड़ों के वाइब्रेशन्स सुधारने के लिये और उनको संतुलन में लाने के लिये। फिर भी अगर जोड़े संतुलन में नहीं रह पाते व तलाक माँगते, वह उनकी स्वतंत्र इच्छा का सम्मान करती थी। भले ही इसमें उन्हें कितनी ही तकलीफ हो।

वह जोड़ो का मैच बनाने में वाइब्रेशन्स के अलावा उनकी प्रकृति का भी ध्यान रखती थीं। जब उनकी प्रकृति सम होती थी, तब उनके बीच तादात्मयता स्थापित होती थी, इसलिये वह संगीतज्ञ का संगीतज्ञ से, डॉक्टर का डॉक्टर से और कलाकारों का कलाकारों से आदि।

उम्र भी महत्त्वपूर्ण थी। वह ज्यादा तर वधुओं की उम्र दूल्हों से कम रखती थीं। उनका चित्त उनकी शारीरिक बनावट पर भी होता था और वह पति की लम्बाई के बराबर या उससे छोटी कन्या का मैच बनाती।

आर्थिक संतुलन भी उनके लिये महत्त्वपूर्ण था, बहुत पैसे वाले का मैच आर्थिक रूप से कमजोर के साथ बनाया जाता था।

उनका विचार था कि हम वैश्विक नागरिक हैं, और इसलिये एक देश के नागरिकों का विवाह दूसरे देश के वासियों से हो। इसलिये अन्तर्देशीय व अन्तर्शहरी मैच होते थे। कई मैचों में जोड़े एक-दूसरे की भाषा भी नहीं जानते थे। उन्हें सीखने में कुछ समय लगता, लेकिन कभी कोई रूकावट या परेशानी नहीं होती, वे दोनों ही वाइब्रेशन्स की भाषा समझते थे।

रंग-भेद, जाति भेद आदि कभी सुनने में नहीं आते।

अध्याय - 42

सूफी

इस्तांबुल में सूफी दरवेशों को संगीत कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हुये देखकर श्री माताजी ने बताया, ''सूफी'' शब्द सफ़ से आया है, जिसका अर्थ है पाक (पवित्र)। सूफ़ी पैगम्बर के पवित्र उपदेश का मान रखते थे और कट्टरवाद में नहीं खो जाते थे।''

उन्होंने जब अपने हाथों को आकाश की ओर उठाया, तब श्री माताजी ने कहा, ''वे ईश्वर को समर्पण कर रहे हैं। इस्लाम का अर्थ है समर्पण।''

हमारे दिल सूफ़ी संगीत के ताल के साथ धड़कने लगे। संगीत तेज से तेज होता गया और श्री माताजी ने बताया ''जब कुण्डलिनी चरम पर पहुँचती है वह तुम्हें आनंद से भर देती है।''

उनको गोल-गोल घूमते हुये आनंद देने का तरीका आत्मा को जगा देता था। सूफ़ी इसे 'हक़ीक़त' कहते हैं। ये आनन्द उन्हें ईश्वरीय ज्ञान की ओर ले जाता था या ज्ञानी बना देता था। निश्चित रूप से ये कलाकार आत्मसाक्षात्कारी नहीं थे और अभी योग भी हासिल नहीं किया था। लेकिन वह अल्लाह की आवाज को सुन सकते थे, सूफ़ी संतों के दरबार में जो कि स्वयं जुड़े हुये थे जैसे- मेवेलिना रूमी, निज़ामुद्दीन औलिया, युनूस एगर, बुल्लेशाह, बाबा फ़रीद, कबीर, श्री शिरडी के साँईनाथ और अमीर खुसरो।

अमीर खुसरो ने कव्वाली जैसे संगीत को बनाया, ईश्वर के प्रेम को प्रदर्शित करने के लिये। पारम्परिक भक्ति संगीत से जुदा, अमीर खुसरो ने

कव्वाली को भक्ति का नया रूप दिया, कव्वाली ईश्वर से जुदा होकर रूदन को नहीं प्रदर्शित करती थी, इसकी जगह अपनी आत्मा का (परमात्मा) आदि शक्ति से विवाह को मनाती थी (celebrating) । यह एक गहन, भावनात्मक गरम जोशी थी जिसमें ईश्वर के प्रेम को 'इश्क' - प्रेम के रूप में प्रदर्शित किया। अमीर खुसरो ने बड़े मार्मिक तरीके वर्णन किया है-

लोग सोचते हैं कि वे इसलिये जिन्दा है
क्योंकि उनके भीतर आत्मा है,
लेकिन मैं ज़िन्दा हूँ क्योंकि
मेरे अंदर प्रेम है।

उनकी प्रस्तुति के बाद श्री माताजी ने उन्हें आत्म साक्षात्कार दिया। उन्होंने वर्णन किया, ''सहजयोग हमारी आत्मा का चारों ओर फैली परमात्मा के दैवीय प्रेम से एकाकारिता है।''

उनके सरदार, सूफ़ी बाबा ने बताया, ''हम इस अवस्था को जहाँ भक्त अपनी पहचान को ईश्वर में एकमय कर लेते है, कहते हैं 'वहाद-उल-वजूद।''

वह बताते गये कि हम समर्पण और सहनशीलता के रास्ते का अनुसरण करते हैं। ''सूफ़ी इस्लाम के रूढ़िवाद को भेदते हुये पैग़म्बर की शिक्षाओं के सत्व को ग्रहण करते हैं।''

उसने एक कहानी कही- एक सूफ़ी एक बार रेगिस्तान से गुजर रहा था, उसने एक सन्त को गहन ध्यान में देखा। जब संत ध्यान से बाहर आया, तब सूफ़ी ने पूछा कि तुमने क्या देखा ?''

संत ने जवाब दिया, ''ऐ मित्र, सुनो; ईश्वर की शक्ति, निर्विकल्प

शक्ति के साथ चलने में शरमाती है। इसलिये उन्होंने स्वयं को प्रकृति के सुन्दर, सदा दृश्य बदलने वाले गाऊन से ढ़क दिया है। इसलिये गर कोई ईश्वर को उसकी रचना में देख सकता है तो समझो कि वह वाक़ई देख सकता है।

श्री माताजी ने गर्दन हिलाई, ''सूफ़ी और सहजयोगी ईश्वर को प्रकृति (प्रकृति माँ) के हृदय में देख सकते हैं।''

वह वाइब्रेशन्स में डूब गये और झुक कर प्रणाम करते हुये कहा, ''आप हमारी माँ फ़ातिमा है और अधिक....।''

श्री माताजी प्रसन्न हुयी व उन्हें लखनऊ की इस्लामिक कांफ्रेंस में हिस्सा लेने को निमंत्रण दिया और भारत के मुसलमानों में सहज संदेश फैलाने को कहा।

1994 में श्री माताजी ने भारत के सूफ़ी गायको को इस्तांबुल दीवाली पूजा में कव्वाली गाने के लिये बुलाया। उन्होंने मुझे पश्चिमी योगियों के लिये ट्रांसलेशन करने को कहा। यह सूफ़ी-कलाम में ढ़ल गया।

हिन्दू मानते हैं कि पूजा के प्रतीक में कुछ है।
मुस्लिम सोचते हैं कि काबा में कुछ है।
दोनों ही भ्रान्ति में है,
सच्चाई हमारे भीतर है।

***

अध्याय - 43

पुनर्जन्म...

पैदायशी आत्म साक्षात्कारी बच्चों की संख्या बढ़ रही थी, और माता-पिता श्री माताजी से प्रार्थना करते थे सहज स्कूल के लिये। 1991 में, उन्होंने मुझे निर्देश दिये कि मेरे धर्मशाला फार्म हाउस में सहज स्कूल शुरू करना है। मैंने उनकी दिशा-निर्देश (Guide line) को संकलित करके एक किताब (manual) बनाई 'Education Enlightened '.

न्यू मिलेनियम सेलिब्रेशन इवेन्ट के बाद श्री माताजी ने मुझे एनशियन्ट प्रोफ़ेसीज़ लिखने को कहा। सभी किताबों में यह किताब उनको बहुत पसंद आई।

बंगलोर से पूजा जाते वक्त हमारी फ्लाइट कई घंटे लेट थी, श्री माताजी बुक स्टॉल पर नज़र डालते हुये बोलीं, ''सहजयोग को साहित्य के रूप में क्यों ना परिचित कराया जाय।''

मैंने अपना हाथ आजमाया और एक नॉवेल लिखा जो कि सहज चमत्कारों पर आधारित था, कहानियों के रूप में, जेल ब्रेक एण्ड आर्ट ऑफ एडिटेशन। उन्होंने प्रश्न उठाया, ''यह कैसी कहानी है जिसका कोई अंत (Climax) नहीं। क्रॉस पर लटकाये जाने बाद पुनर्जन्म आता है- वही अंत है।''

निश्चित रूप से, सहजयोग क्या है ? पुनर्जमन्म ही तो है। इसलिये उन्होंने कहा- ''दुनिया में आज जो भी गलत है, वह व्यक्तिगत तौर पर गलत है। अगर व्यक्ति सुधरेगा तब दुनिया भी सुधरेगी।

इसी तरह उन्होंने हमें बदला और हमारे टूटे हुये जहाज को (सूक्ष्म शरीर) को बदल कर बिल्कुल नया कर दिया। हमारा पुनर्जन्म हमारे जीवन का आखिरी पड़ाव (climax) है।

मुझे अक्सर आश्चर्य होता है कि इतने बुरे काल (समय) में भी कोई व्यक्ति इतना अच्छा कैसे हो सकता है। मेरे भीतर के अन्तिम पड़ाव ने मुझे जिन्दगी के प्रति नया दृष्टिकोण दिया। ''हाँ, दुनियाँ रसातल की ओर जा रही है लेकिन सहजयोग इसे पुनर्जीवित कर सकता है। कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि चारों ओर कितनी भयानकता व्याप्त है लेकिन आदि शक्ति इन्हें फिर से ठीक कर सकती हैं। हम किसी भी मुश्किल के भार करने की वजह, हम उन्हें फायदों में बदल देते ?''

नये अन्तःदर्शन ने मेरा जीवन सदा के लिये बदल दिया। मैंने भविष्य की चिन्ता करनी छोड़ दी। अचानक जो चीज़े बहुत मुश्किल लगती थी, आसान लगने लगी। मेरे जीवन की घटनाओं का क्रम नहीं बदल पाया लेकिन यह निश्चित है कि कुण्डलिनी ने उनसे पड़ने वाले असर को बदल दिया।

***

हम किसी भी मुश्किल के भार तले थक कर दब जाते हैं, लेकिन क्यों नहीं हम नुकसानों के बारे में चिंता करने की जगह, उन्हें फायदों में बदल देते।

अध्याय - 44

(Discretion) विवेक

आस्ट्रेलिया में होने वाले एक पब्लिक प्रोग्राम में भारतीय संगीतज्ञों को भजन गाने के लिये बुलाया गया। श्री माताजी ने अपना चित्त उनकी कुण्डलिनियों पर रखा और वे जनता के वाइब्रेशन्स को साफ करने वाले यंत्र बन गये। श्री माताजी को मराठी भजन जो कि महाराष्ट्र की प्रशंसा के लिये था, 'महाराष्ट्र देशा'। सिडनी के प्रोग्राम में जैसे ही उन्होंने यह भजन शुरू किया, श्री माताजी ने उन्हें रोक दिया और पूछा कि वे यह भजन क्यों गा रहे हैं।

उन्होंने जवाब दिया, ''इसके वाइब्रेशन्स बहुत अच्छे हैं।''

उन्होंने कहा, ''अगर इसके वाइब्रेशन्स अच्छे हो, तब भी तुम में विवेक होना चाहिये कि कौनसा भजन कब गायें। आस्ट्रेलिया की जनता के बीच महाराष्ट्र की प्रशंसा में भजन गाने का क्या औचित्य है ? आप में विवेक होना चाहिये। विवेक काम में लेते हुये यदि आप सही भजन सही मौके पर गायेंगे, तब आप सहज योग की महिमा को बढ़ा पाएँगे।''

अगले पब्लिक प्रोग्राम में उन्होंने पाया कि संगीतज्ञ सब पकड़े हुये (बाधाओं से) हैं और तब उन्होंने उनके प्रदर्शन को कैन्सिल कर दिया ताकि पब्लिक उनकी बाधाओं से तो कम से कम बाधित न हो पाये।

1992 में मॉस्को (रूप) में पहली बार विवाह समारोह होने तय हुये और एक युवाशक्ति टोली ने सारी व्यवस्था संभाली। इस पवित्र अवसर की शोभा बढ़ाने के लिये श्री माताजी ने शहनाई संगीत बजाने को कहा। उन्होंने जल्दी से राग भैरवी बजानी शुरू की, श्री माताजी नाराज़ हुयी और उन्हें रोक दिया।

उन्होंने कहा, ''कि यह आत्म साक्षात्कारी संगीतकार बिस्मिल्लाह खाँ की शहनाई की रिकॉर्डिंग हैं और वाइब्रेशन्स इसके ठंडै हैं।

उन्होंने कहा, ''अगर किसी से ठण्डे वाइब्रेशन्स महसूस होते हैं,

इसका यह मतलब नहीं कि आप उसी को थाम कर बैठ जाओ। किसी में कूल वाइब्रेशन्स हो सकते हैं लेकिन आपमें इतना विवेक होना चाहिये, कि आप किस मौके पर क्या ठीक है, इसका अनुमान रखे। राग भैरवी इस मौके के लिये ठीक नहीं है।

सायँकाल के संगीत समारोह में एक बहुत प्रतिभावान योगिनी जो कि भारत से बुलायी गयीं थी, मीरा के भजन गाना चाहती थी। श्री माताजी ने कहा, ''मीरा के भजन जुदाई (अलगाव) के हैं लेकिन अब तुम ईश्वर से जुड़े हुये हो, तब क्यों तुम ईश्वर से अलगाव के भजन गाना चाहती हो; तुम्हें ईश्वर से जुड़ने का आनंद मनाना चाहिये।

9 फरवरी 1996, श्री माताजी ने बेलापुर, नवी मुम्बई में हैल्थ सेन्टर का उद्घाटन किया। एक सहज योगिनी जो कि आन्तरिक सज्जा का काम करती थी, उसे श्री माताजी का कक्ष सजाने की जिम्मेदारी दी गई। उसने सुना था कि श्री माताजी ने राजा रवि वर्मा (भारतीय चित्रकार) की बहुत प्रशंसा की है, उसने निर्णय किया कि बेडरूम की एक दीवार पर उनके चित्र का प्रिंट लगाया जाय। उस पैन्टिंग में यह दृश्य था जिसमें अप्सरा मेनका अपने मारक अंदाज़ में ऋषि विश्वामित्र की तपस्या भंग करने की कोशिश करती है।

एक ही नजर में श्री माताजी ने उस पैन्टिंग को रद्द कर दिया और उसे हटाने के लिये कहा।

डिज़ाइनर ने विरोध किया, ''लेकिन यह राजा रवि वर्मा का चित्र है।''

श्री माताजी ने समझाया, '' यह कोई आत्मसाक्षात्कारी कलाकार का चित्र हो सकता है लेकिन देवी के कक्ष को ऐसी अपवित्र चित्र से नहीं सजाया जा सकता। खजुराहों मन्दिर की मूर्तिकला बहुत आकर्षक है लेकिन तांत्रिकों ने उससे जो सैक्स के प्रति रूझान को जिस तरह उभारा है उससे वहाँ के वाइब्रेशंस बरबाद हो गये।''

इस तरह हममें भी विवेक बढ़ा कि उनके घर में क्या चीजें नहीं लगानी चाहिये, लेकिन यह भी कि हमें अपने घरों में भी क्या नहीं लगाना चाहिये।

चित्रों में, कला से बनी चीज़ों में अच्छे वाइब्रेशन्स हो सकते हैं लेकिन हममें इतना विवेक होना चाहिये कि हम उसके विषय की बारीकी को भी समझे कि कहीं उससे हमारे घरों की पवित्रता पर आँच न आये।

जब मशहूर पेन्टर एम.एफ. हुसैन ने देवी का नग्न चित्र बनाया, तब श्री माताजी बहुत दुखी हुयी। यह ज़रूरी है कि कलाकारों में भी विवेक होना चाहिये, वरना वह बाँये से दाँये रचना करने लगेंगे।

एक कलाकार ने तर्क दिया कि देवताओं की तस्वीरें तो उनकी कल्पना है। उन्होंने कहा, ''भले ही वह कलाकार की कल्पना हो लेकिन हमें भावनाओं का आदर करना चाहिये। निश्चित रूप से तुम्हें देवी-देवता के चित्रों की पूजा नहीं करनी चाहिये।

हुसैन के चित्र के कारण जनता ने बहुत रोष व्यक्त किया, उसकी वजह से उसे देश छोड़ना पड़ा और अपना बाकी जीवन गुमनामी में बिताया।

बहुत से महान् कलाकारों ने श्री माताजी के सम्मुख कला का प्रदर्शन किया। एक सहजयोगी उनमें से एक से संगीत सीखना शुरू किया, श्री माँ ने देख लिया कि वह बाधा की पकड़ में है और पूछताछ की कि उसने किससे सीखा। उसने गुरु का नाम बताया।

श्री माताजी ने कहा कि वह पकड़ से बाधित है। उस संगीतकार ने जवाब दिया, ''लेकिन श्री माताजी उन्होंने आपके सामने भी प्रदर्शन किया था।''

श्री माताजी ने कहा, ''यह सच है कि उसने मेरे सामने प्रदर्शन किया था और मैंने उसे आत्म साक्षात्कार भी दिया था, लेकिन उसने अपने वाइब्रेशंस खो दिये। मैं हर एक को एक मौका देती हूँ जो मेरे सामने कला प्रदर्शन करता है या मेरे साथ ठहरता है। तुम्हें अपना विवेक अवश्य काम में लेना चाहिये उसके वाइब्रेशन्स देखने में। पूरा सहजयोग हंसा चक्र (विवेक) पर आधारित है।

एक पागल बैल भगदड़ मचा रहा था, और पुलिस ने सभी को गली खाली करने के लिये कहा। दो सहजयोगी जो कि गली में थे ने, बाहर जाने से मना कर दिया और उन्हें ज़बर्दस्ती घसीट कर बाहर निकाला गया।

श्री माताजी ने पूछा, ''जब वहाँ इतनी चेतावनी दी जा रही थी पुलिस की ओर से, तब तुमने ध्यान क्यों नहीं दिया ?''

उन्होंने जवाब दिया, ''लेकिन श्री माताजी हमने बंधन लिया था।''

श्री माताजी ने कहा, ''आपको रूढ़िवादिता की सीमा तक नहीं जाना चाहिये। आपका स्वःविवेक कहाँ है ?''

कई बार जब हम विवेक बुद्धि को काम में नहीं लेते, परम चैतन्य हमें चेतावनी देने के कई काम करते हैं। जब हम उस चेतावनी को नहीं समझते तब परेशानी में पड़ जाते हैं। इसी तरह, श्री माताजी हमें अपने चक्रों को साफ़ करने की चेतावनी देती है, फिर भी हम ध्यान नहीं देते, हम निश्चित रूप से परेशानी में फ़ँस जाते हैं।

श्री माताजी ने हज़रत मोहम्मद की बहुत ही प्यारी कहानी सुनायी जो कि विवेक से संबंधित थी। पैगंबर के दो शिष्य अपने ऊँट के साथ शहर में प्रवेश किये। एक ने कहा कि ऊँट को रस्सी से कहीं बाँध देते हैं, जबकि दूसरे ने तर्क दिया कि हम इसे अल्लाह के रहम पर छोड़ देते हैं। जब यह बात पैगम्बर तक पहुँची उन्होंने राय दी, ''पहले रस्सी से बाँधो फिर अल्लाह के भरोसे छोड़ दो।

एक बार सहज संस्था के दो प्रमुखों के बीच गरमा-गरम बहस हो गयी, और तीसरा ट्रस्टी भी उनमें जुड़ गया। श्री माताजी ने कहा ट्रस्टी को किसी की तरफदारी नहीं करनी चाहिये लेकिन अपना विवेक काम में लेते हुये हालात को ठीक करने चाहिये। अविवेक अहंकार से पैदा होता है। उन्होंने एक कहानी मैरी मेग्डेलिन के एपिसोड से लेकर हमें बताई। ''यह क्राइस्ट का विवेक था, उनकी शक्ति थी, जिससे दूसरे भी सद् विवेकी हो जाते हैं। अगर आप विवेकी होंगे, तब ओर लोग भी विवेकी हो जायेंगे।''

यह कहानी मेरे साथ रह गयी। जब मैं शंकित होता हूँ मैं स्वयं को पूछता हूँ कि श्री माताजी को क्या पसंद है, और जवाब हमेशा आता है !

***

अध्याय - 45

वह सिद्धि देने वाली है...

कविता

एक निराश भिखारी खाली हाथ घर लौट रहा था।
श्री आदिशक्ति की आवाज़ ने उसे रोका।
अपनी माँ से मुँह फेरकर मत जाओ मेरे बच्चे।
बार-बार माँगो।
मैं जितनी प्रसन्न होऊँगी, उससे भी अधिक दूँगी।

1973 में यमुना नगर पब्लिक प्रोग्राम में एक युवा लड़के ने एक प्रेरणा दायक भजन गाया। श्री माताजी उनसे बहुत प्रसन्न हुयी और संगीत संध्या में नियंत्रित किया। वह कोई ओर नहीं, सूफ़ी सिंगर 'सिम्पल' थे।

एक दिन श्री माताजी ने उनसे पूछा कि ''तुम शास्त्रीय संगीत क्यों नहीं गाते ?''

उसने अपने कान खींच कर कहा, ''श्री माताजी, मैं शास्त्रीय संगीत नहीं जानता।''

वह मुस्कुराई, ''चिन्ता मत करो, तुम्हें यह आ जाएगा।''

उन्होंने अपनी कुण्डलिनी उठाई, लेकिन थोड़ा समय लग गया, क्योंकि उसकी बांयी नाड़ी जाम थी। उन्होंने उसकी बाँयी नाड़ी पर काफी समय मेहनत की जब तक वह स्वच्छ नहीं हो गयी। वह सफलतापूर्वक मुस्कुराई, ''वाह ! अपनी कुण्डलिनी को बाँध लो। अब तुम मुम्बई जा सकते हो और उस्ताद गुलाम मुस्तुफ़ा साहब से शास्त्रीय संगीत सीखो।''

सिंपल उन महागुरु के पास पहुँचे। उस्ताद ने उसे सिखाने के लिये हामा भरी लेकिन उनकी मासिक फीस 25,000/- थी जो कि सिंपल के बटुअे के बूते की बात नहीं थी। उन्होंने यह बात श्री माताजी को बताई।

श्री माताजी ने कहा (खुशी से), ''क्या बस सिर्फ़ 25,000/- रु. फीस बहुत कम है ऐसे महान् गुरू के लिये। चिन्ता मत करो, तुम्हारी फ़ीस मैं दूँगी। (श्री माताजी ने उस्ताद को एक साल की फीस दे दी)

उसके बाद सिंपल ने बहुत ही सुन्दर सूफ़ी कलामों को गीत में ढ़ालना शुरू किया। यह बहुत ही आश्चर्यजनक था कि इससे पहले कभी भी गीत का संपादन नहीं किया था। सिंपल को शायद ही पता होगा कि यह सब देवी की सिद्धी थी उसके साथ आशीर्वाद के रूप में।

उसका हृदय बोल पड़ा, ''आप ही कला हो, आप ही कलाकार हो.....''

श्री माताजी ने हामी भरी, ''मैं ही कला हूँ, मैं ही कलाकार हूँ।''

अब तुम्हारी रचना की जा चुकी है और अब तुम्हें आनंद की रचना करनी है। कोई भी रचनाकार अपनी रचना को देखकर आनंद से भर जाता है।''

वह हज़ारों सिद्धियों की बौछार कर देती हैं और इस तरह कई सिंपल को परिवर्तित कर देती है और मूर्खों को ज्ञानियों में।

उनकी विशुद्धि को आशीर्वादित करने के अलावा, श्री माताजी निर्जीव चीज़ों को भी भेद कर उनमें सिद्धि भर देती थीं। जैसे कि, उन्होंने बहुत सारे संगीतकारों की विशुद्धि को, उनके संगीत वाद्य यंत्रों को चैतन्यित कर अपनी सिद्धियाँ उन पर लुटाई।

यही नहीं, उन्होंने कई गृहलक्ष्मियों को उपहार में कटलरी व रसोई में बर्तन देकर माँ अन्न पूर्णा के आशीर्वाद से धन्य किया। ताकि गृहलक्ष्मी अपने परिवार व सामूहिकता की नाभि संतोष से भर सकें।

उन्होंने अपनी सिद्धि कलाकारों, चीनी के बर्तन बनाने वालों, लकड़ी पर नक्काशी करने वालों और आर्किटेक्ट्स पर आशीर्वादित कीं; तुम्हें पवित्र कला का निर्माण करना होगा और ईश्वरीय आनंद देने वाली चीज़ों को बनाना होगा।

उन्होंने अपनी सिद्धियाँ, सफ़ेद चमड़ी वाले योगियों, वैज्ञानिकों, डॉक्टरों और उद्यमियों को उपहार में चमड़े के ब्रीफ़केस, पैन, कैलकुलेटर आदि देकर दीं। हर उपहार उनकी सिद्धि रूपी आशीर्वाद से सजा हुआ था और वाइब्रेशन्स ने न केवल संगीत, कला, नृत्य, कविता और साहित्य को भेद दिया था बल्कि वैज्ञानिकों, टेक्लोलोजी और एंटरप्राइज़रों को भी आशीर्वाद दिया। विज्ञान और टेक्नोलोजी के और भी एडवान्समेंट के रास्ते खुलने लगे, जैसे ही योगियों ने विराट के मस्तिष्क से स्वयं को जोड़ा।

और मेडिकल साइंस के बारे में क्या कहा जाय ? उनके द्वारा खोले गये रिसर्च एंड हैल्थ सेन्टर, वाइब्रेशन्स से भरे हुये प्याले बन गये। नहीं, वे तो स्वयंभू है। सहज डॉक्टरों को सिद्धियों का ऐसा आशीर्वाद मिला है कि वे मरीजों के सूक्ष्म शरीरों को स्वच्छ करते हैं, सवेरे से शाम तक यह काम करते हुये भी किसी भी तरह की नकारात्मकता अवशोषित नहीं करते।

जैसे बच्चों का सामूहिक प्रेम एक महासागर का रूप ले लेता है, सिद्धियों की रचनात्मकता भी ऐसे ही बढ़ती है। उनकी रचना का आनंद संगीत, कला, साहित्य, आर्किटेक्चर, साइंस वगैरह।

श्री माताजी ने समझाया कि वाइब्रेशन्स सामूहिकता के प्रति ही नहीं जागरुक होते बल्कि वे रोशनी, आवाज़ व खुशबू भी फैलाते हैं, और इसलिये यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि उनकी खुशबू आत्म साक्षात्कार आत्माओं की रचनाओं में महसूस होती है जैसे- विलियम ब्लैक, तोलस्तोय मोज़ार्ट बीथोवन, बैच, विवाल्डी, रेम्ब्रान्ट् और कई नयी उम्र के कलाकार।

जब मैं सहयोग से जुड़ा था मैं हीलिंग (स्वास्थ्य ठीक करने की टेक्निक) की सिद्धि में रोमाँचित था जो श्री माँ हमें आशीर्वाद में देती थी। मेरा चित्त हीलिंग पर केन्द्रित हो गया और मैं सेन्टर पर मरीज़ों को बुलाने लगा। तब एक उम्रदराज सहजयोगी, चन्दू भाई झवेरी जो कि भारत के उन योगियों में से एक थे जिन्हें सर्वप्रथम आत्म साक्षात्कार मिला था और लाइफ़ इटरनल ट्रस्ट के ट्रस्टी भी थे ने मुझे अपना अनुभव बताया।

वह अक्सर श्री गणेश को पूजा के दौरान श्री माताजी के चारों ओर गोल चक्कर लगाते हुये देखते थे। एक पूजा के दौरान उन्हें स्टेज पर रूकना पड़ा (श्री माँ को तत्त्व समर्पित offer करने के बाद) श्री गणेश ने उनका रास्ता रोका, ''मैं तुमसे प्रसन्न हूँ और तुम्हें एक उपहार healing के रूप में देना चाहता हूँ।''

उन्होंने जवाब दिया, ''मैं करूँ, इससे बेहतर यह है कि आप ही हीलिंग करें।''

''तुम्हें ओर क्या इच्छा है ?'' श्री गणेश ने पूछा।

उनका जवाब था ''मैं श्री आदिशक्ति की कांति से युक्त हूँ।''

श्री गणेश ने ज़िद की, ''लेकिन तुम्हें कोई सिद्धि माँगनी होगी।''

उन्होंने जवाब दिया, ''अगर आप ज़िद करते हैं तो मेरे द्वारा कुछ अच्छा हो तो उसका मुझे पता नहीं चले।''

इसी के अनुसार श्री सिद्धिविनायक ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

इसके बाद जब कभी चंदू भाई की छाया जहाँ गिरती, कृपा श्री गणेश की आशीर्वादित होती, बीमार ठीक हो जाते, और भूत-बाधा भाग जाती। लेकिन चंदू भाई को इसका पता नहीं चलता। ना ही लोगों को पता चलता कि उन पर हुये आशीर्वादों का स्त्रोत वह थे।

***

अध्याय - 46

मेरी एक ही चिंता

मैं श्री माताजी के साथ 35 वर्षों तक बहुत ही नज़दीक रहा, मैंने उनके माथे पर चिंता की लकीरें कभी नहीं देखी। मैंने पूछा, ''श्री माताजी क्या आप कभी परेशान होती हैं ?''

उन्होंने मेरी ओर देखा, फिर कहीं दूर देखते हुये बोलीं, ''सिर्फ एक ही चिन्ता है मेरी, अगर चिन्ता है तो इस बात की मेरे बच्चों को आपस में प्यार करना चाहिये। मैं जानती हूँ कि तुम सब मुझसे बहुत प्रेम करते हो लेकिन मेरी चिन्ता सिर्फ़ वही है कि कब तुम सब एक दूसरे को प्रेम करोगे।''

मैंने डरते हुये कहा, ''हम अपने रिश्तेदारों को प्यार करते हैं।''

लेकिन दूसरे सहजयोगियों से प्रेम का क्या ? तुम्हारे पास कम से कम एक मित्र होना चाहिये जिसके हृदय में तुमने प्रवेश किया हो।''

फ़रवरी 1983 में होली की पूजा सफ़दर जंग मंदिर, दिल्ली में थी। हमें बड़ा आश्चर्य हुआ कि जब श्री माताजी ने पूजा की जगह हमें नृत्य करने को कहा। होली के रंगों से खेलते हुये हम जैसे यमुना नदी के किनारे पहुँच गये जहाँ हम श्री कृष्ण की रास-लीला में खो गये।

हमें आशीर्वाद देने के बाद उन्होंने सबसे पूछा, ''तुम्हारा मित्र कौन है?''

इस प्रश्न ने हम सबके खोखले संबंधों को दर्शाया। इससे मुझे ख़लील गिब्रान के शब्द याद आ गये, ''मित्रता का कोई अर्थ नहीं लेकिन ये आत्माओं का मिलन है।''

उनके इस जाँच की कसौटी पर जब स्वयं को कसा, तब ये पता चला कि मैं दूसरों की आत्माओं को पहचानूँ, इतना भी गहरा नहीं हूँ। मैं कभी किसी मित्र के हृदय में नहीं उतरा।

कविता

दरवाज़े से प्रवेश किये बिना
आप सारी दुनिया को जान सकते है
खिड़की से बाहर झाँके बिना
आप स्वयं को जान सकते हैं।
स्वयं को जानो और तुम जानोगे
पूरे ब्रह्माण्ड को और ईश्वर को।
लेकिन मित्र के हृदय में उतरना मत भूल जाना।
मित्र के हृदय में उतरना, ईश्वर की ओर पहला कदम है।

***

Jai Shri Mata ji
Please bless me with love
& compassion

***

अध्याय - 47

चिद्विलास

श्री माताजी की बेटी की बिटिया यानी धेवती की शादी का मौका था, कई आयोजन हो रहे थे। एक पार्टी में परिवार के सदस्य एवं उनके मित्र एक पंजाबी डिस्कों संगीत पर नाच रहे थे। हम थोड़ी झिझक महसूस कर रहे थे जब श्री माताजी इस बीच वहाँ पधारीं। लेकिन श्री माताजी बहुत ही खुश नजर आ रही थीं व अपनी हँसी नहीं रोक पा रही थी।

मुझे आश्चर्य हुआ कि ज्यादा मनोरंजक क्या था, बाँहों का फूहड़ तरीके से लहराना और शरीरों का मटकना या हमारी अजोबी-गरीब दुनिया? लेकिन उनकी आँखों की मुस्कुराहट ने मेरे हमेशा प्रश्नों में उलझे मस्तिष्क को शांत कर दिया। जैसे ही मैं उन दैवीय पलों में आनन्दित हुआ मैंने पाया कि ये दाँयी तरफ की सामूहिक माया का असर है। ऐसा लगा जैसे ये जोकरों की पार्टी है, अजीब से डिजाइनर्स कपड़ों में एक दूसरे से होड़ करते हुए और उन्हें प्रभावित करने की कोशिश करते हुये। अब ऐसे अवसर पर श्री आदिशक्ति वया करतीं सिवाय उस सर्कस से मनोरंजन करने के।

और हम सब भी क्या करते हैं ? ऐसे मूर्खतापूर्ण तरीके, कल्पनाएँ व भ्रमों को अपना कर अपनी दायी नाड़ीं से दूसरों को प्रभावित करते हैं, और अपनी अन्तरात्मा ? नहीं, नहीं, इसे गंभीरता पूर्वक क्या लेना ?

इन्हें गंभीरतापूर्वक नहीं लेना चाहिये जैसे हम छोटे बच्चों की हरकतों को हल्के रूप में लेते हैं, गंभीरता पूर्वक नहीं। उनकी बचकानी हरकतों का हम न केवल मजा लेते हैं बल्कि हम उनसे धीरज रखना भी सीखते हैं, हमारे शरीर बड़े हो गये हैं लेकिन हमारी दाँयी नाड़ी की अभिव्यक्ति बचकानी हरकतों में लिप्त रहती है। और जैसे हम इसे साक्षी भाव से देखते हैं, हम इसे

रोक तो नहीं पाते पर इस पर हँसते जरूर हैं। हमारे पास और कोई विकल्प नहीं बल्कि धैर्य से इसे ठीक कर सकते हैं इस तरह हम परिपक्व होते हैं। इसके अलावा अगर हमारी दाँयी नाड़ी, दूसरों की दाँयी नाड़ी की ही तरह है, हम मनोरंजन (हँसी) व धैर्य से उसे ठीक कर सकते हैं। इस तरह दूसरों की कमियाँ देखने से तो उन्हें माफ कर देना ज्यादा आसान है।

इसके बाद, जिन्दगी खुद एक बड़ी पार्टी की तरह दिखायी देने लगती है और जैसे ही हँसते हुये मैं आगे बढ़ता हूँ, यह सब एक खेल की तरह लगता है। अब मैं विचार कर सकता हूँ कि कैसे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की जननी उस पार्टी में लुत्फ़ उठा रही है- आपने चिद्विलास से, प्रेम भरे नयनों से अपने बच्चों को निहार रही है जो कि बचकानी हरकतों में मस्त है, व्यस्त है।

एक दूसरे पारिवारिक उत्सव की बात है, जब एक शानदार होटल में श्री माताजी की शादी की वर्षगाँठ मनाई जा रही थी। योगी जन चाहते थे कि श्री माताजी के बैठने की व्यवस्था मंच पर की जाय, लेकिन श्री माताजी ने मना कर दिया, ''मेरे लिये अलग से कोई व्यवस्था नहीं की जाये, मैं अपने मेहमानों से मिलना चाहती हूँ और बाते करना चाहती हूँ।''एक क्षण से भी कम समय में हमने देखा कि श्री आदिशक्ति एक अच्छे मेजबान की तरह अपने मेहमानों का स्वागत कर रही है, बड़ी सहजता से उनसे मेल-मुलाकात कर रही है और उनकी प्लेटों को खाने की चीजों से भरकर खाने का मनुहार कर रही है। इससे हमें फिर यह संदेश मिलता है कि अपने चित्त को 'चिद्विलास' में कैसे बदला जाये।

हमने पाया कि चिद्विलास का हर जगह घुल-मिल जाने की प्रवृत्ति कितनी आनंद देने वाली है। हम किसी भी माहौल में घुल-मिल सकते हैं जैसे मधुमक्खी गुँजन करती हुयी हरएक पुष्प का रस चूस लेती है।

अध्याय - 48

वैधव्य

श्री माताजी ने 1986 की सर्दियों का समय पूजा प्रतिष्ठान में व्यतीत किया। पूजा के कुछ दिन पहले एक योगिनी, जो कि श्री माताजी की सेवा में रहती थी, के पति की मृत्यु हो गयी। वह पूजा में सफेद साड़ी पहन कर आयी। श्री माताजी ने उसकी वेशभूषा को खारिज कर दिया और उसे एक लाल रंग की चमकती हुयी साड़ी पहनने को दी। उन्होंने उसकी आज्ञा पर लाल बिन्दी लगाई ''तुम इस पूजा में आदिशक्ति का गौरव बढ़ाने आई हो। आदिशक्ति पूरे संसार के पतियों से भी अधिक महान् है। इसलिये तुम्हें आदिशक्ति की महिमा मंडन के लिये लाल रंग की साड़ी पहननी चाहिये। वैधव्य एक भ्रान्ति है जिसे ब्राह्माणों ने स्त्रियों को दबाने के लिये समाज पर लादा है।''

उन्होंने स्पष्ट किया, ''मेरे पूर्वजों का ईसाई धर्म स्वीकर करने के पीछे यही कारण था, ब्राह्मणों द्वारा विधवाओं पर अत्याचार। मेरी बड़ी बुआ के पति का देहांत हो गया था, जब वह उम्र में बहुत छोटी थीं। तब हमारे परिवार के लोगों ने उनकी दोबारा शादी करने की सोची, लेकिन ब्राह्मणों ने इसका कड़ा विरोध किया, वे विधवा के पुनर्विवाह को उचित नहीं मानते थे और इसलिये हमारा परिवार ईसाई हो गया व बड़ी बुआ की शादी हो गयी।

उनके शब्दों में उस योगिनी पर जादुई असर किया, जैसे ही उसने अपनी श्वेत साड़ी त्यागी, उस पर से वैधव्य का प्रभाव भी जाता रहा। उसके समर्पण से उसके भीतर पूजा के चैतन्य का प्रवाह शुरू हो गया और विगत का प्रभाव भी समाप्त हो गया। जैसे ही वह अपनी आत्मा से जुड़ी, कबीर का भजन उसके होंठो पर आ गया-

जब वह दिन आया
जिस दिन के लिये मैं जीवित थी
वह दिन किसी भी पंचांग में नहीं था
प्रेम से भरे बादल
मुझ पर भरपूर बरसे
मेरी भीतर की आत्मा तृप्त हो गयी
मेरे आस-पास, यहाँ तक कि मरुभूमि में भी
हरियाली छा गयी।

वैधव्य के श्राप से स्त्रियों को मुक्त करने के लिये श्री माताजी ने कई विधवाओं का सहज विवाह करवाया। उन्होंने नोएडा में एक बहुत सुन्दर भवन बनाया उन परित्यक्त स्त्रियों के सम्मान के साथ जीने के लिये, जिन्हें समाज ने ठुकरा दिया था।

पेरिस में शिया नेता अय्यातुला-रुहानी ने उनसे आशीर्वाद पाया। श्री माताजी ने उनसे काले परिधान का त्याग करने के लिये कहा जिसे शिया लोग इमाम हुसैन की याद में पहन कर मातम मनाते हैं। अगले दिन अय्यातुल्लाह पब्लिक प्रोग्राम में श्वेत रंग का परिधान पहन कर मुस्कुराते हुये आये। श्री माताजी प्रसन्न हुयीं व उन्होंने उसे रूस में होने वाली कांफ्रेंस में बुलाया।

श्री माताजी का विधवाओं के प्रति रूझान देखकर मुझे आश्चर्य हुआ, श्री रामचन्द्रजी ने एक मूर्ख धोबी की बातों में आकर सीताजी का त्याग क्यों किया। जरूर कुछ और भी समाधान किया जा सकता था? मेरे दिमाग में प्रश्नों की घंटिया बजने लगती और मैं श्री माताजी से पूछने लगता जब भी मौका हाथा आता। ज्यादातर वह उत्तर दे देती थीं लेकिन इस प्रश्न

का कोई भी जवाब नहीं दिया। मुझे लगा ''शायद इसका कोई जवाब नहीं हो सकता या शायद इसकी जरूरत नहीं रही होगी।''

मुझे राऊरबाई की बात सही लगी जिससे मेरे दिमाग में शान्ति हुयी, ''चिंता मत करो, श्री माताजी ने तुम्हें उत्तर नहीं दिया, इसका मतलब है समय आने पर तुम्हें जवाब मिल जायेगा।''

धीरे-धीरे मुझे समझ में आया कि अगर मैं उनसे जुड़ता हूँ, तब परम चैतन्य मुझे सभी उत्तर दे देते हैं। हमें अपने जवाब श्री माताजी के लेक्चरों या बातचीत से, या वह कुछ ऐसे हालात बना देती हैं कि हमें सत्य का पता लग जाता है, इस तरह हमें जवाब मिल जाते हैं। निश्चित रूप से मुझे अभी वह ऊँचाई पानी बाकी थी जहाँ कोई प्रश्न नहीं रहता।

एक ओर बात मैंने समझ, परम चैतन्य हमें हमारे उत्थान से जुड़े हुये सभी प्रश्नों के जवाब देता है; लेकिन हमारे सांसारिक मूर्खता पूर्ण प्रश्नों का जैसे मुझे कैसी नौकरी मिलनी चाहिये, पैसा कहाँ लगाऊँ, कौनसा घर खरीदूँ, आदि का जवाब नहीं देता।

यहाँ तक कि परम चैतन्य हमारे मुश्किल समय में हमारी कुण्डलिनी को ख़बर देते हैं, सिग्नल देते हैं। यही नहीं, अगर हम अपने रास्ते से भटकते हैं तब यह हमें सही रास्ता दिखाने का प्रयास करते हैं। लेकिन अगर हम उनकी चेतावनी पर ध्यान नहीं देते तब हम नुकसान उठाते हैं। एक भटके हुये योगी को श्री माताजी ने कहा ''तुम्हें काफ़ी चेतावनी दी गयी लेकिन तुमने ध्यान नहीं दिया। तुमने काफी नुकसान उठाया, जो कि बचाया जा सकता था।''

मेरे प्रश्न का जवाब मुझे बहुत जल्दी ही मिल गया, इतनी जल्दी मिलेगा, उम्मीद नहीं थी कि श्रीरामचन्द्रजी ने सीता मैया का परित्याग क्यों

किया। नब्बे के दशक के मध्य में एक छोटी श्री रामनवमी पूजा रखी गयी, जिसमें सभी ने पुष्पार्पण किया। श्री माताजी अपने नोएडा वाले घर के सिंहासन कक्ष में विराजमान थीं। श्री माताजी ने अचानक मेरी ओर देखा और फिर कहीं देखते हुये कहा-''श्री रामचन्द्रजी ने कभी भी सीता का परित्याग नहीं किया, वह महालक्ष्मी थीं, श्री रामचन्द्रजी स्वयं श्री महाविष्णु थे; दोनों एक ही थे, वे कैसे अलग किये जा सकते थे। यह एक नाटक था।''

मेरी कुण्डलिनी ने श्री आदिशक्ति के श्री चरणों में नमन किया। लेकिन जल्दी ही दूसरा प्रश्न मेरे दिमाग में आ गया कि ''गौतम बुद्ध की पत्नी व पुत्र का क्या हुआ होगा, जब वे उन्हें छोड़ के चले गये।''वह अपनी पत्नी को आधी रात में छोड़कर चले गये, जिस रात उनकी पत्नी ने पुत्र को जन्म दिया था।

जब बुद्ध की पत्नी ने यह समाचार सुना वह स्तंभित रह गयी थी। उनका एक हिस्सा मर गया था। उसके रिश्तेदारों ने कहा कि वह एक गैर जिम्मेदार पति था, और तर्क दिये कि तुम्हें उसे भूलकर दूसरा विवाह कर लेना चाहिये।

लेकिन उन्होंने मना कर दिया, उन्हें अपने बेटे को बड़ा करना था, इस योग्य बनाना था कि वह सभी कार्यों को पूरा कर सके। मैंने पाया कि परम चैतन्य हमसे सीधे ही सम्पर्क स्थापित नहीं करते बल्कि वे कई कहानियों व प्रतीकों में समा जाते हैं। मेरे भीतर का बच्चा उन कहानियों को पसन्द करता था जिसमें उसे कुछ सीखने को मिलता था। हर कहानी का अपना आदर्श होता है लेकिन ये मुझे उसके परे क्या है ? ये जानने के लिये उकसाता था। और इससे मेरे अन्दर इच्छा जागती थी कि इन सबके पीछे क्या रहा होगा, यह मैं जान क्यूँ नहीं पाता था कि इन सबके पीछे जो हैं वही मेरे भीतर हैं।

गौतम बुद्ध की मुलाकात जब उनकी पत्नी से होती है, ये प्रसंग मैंने कई जगह अलग-अलग रूप में पढ़ा लेकिन ये जो प्रसंग है उसने मुझे एक नयी सोच दी-

''अचानक बहुत वर्षों के बाद, एक दो पहर गौतम बुद्ध अपनी पत्नी के सामने प्रकट हुये। वह सिर मुँडाये हुये, हाथ में बड़ा सा कटोरा लिये दहलीज़ पर आकर खड़े हुये, तब उनकी पत्नी ने बड़ी मुश्किल से पहचाना कि यही मेरा पति है जो मुझे मझधार में छोड़ गया था- गौतम जो कि अब बुद्ध बन चुके थे, लेकिन उन्होंने अपने पति के प्रति कोई कटुता नहीं दिखायी और परम्परा के अनुसार उनकी आरती की और नम्रता से उनके चरण स्पर्श किये, ''सब तुम्हें बुद्ध कहकर बुलाते हैं।'' गौतम बुद्ध ने पत्नी की सुन्दरता को निहारा जो अभी भी फीकी नहीं पड़ी थी, ''मुझे पता है, वे मुझे इसी नाम से बुलाते हैं।''

''इस शब्द का अर्थ क्या है ?''

एक हल्की सी मुस्कुराहट उनके होंठो पर नाची, ''मैं समझता हूँ कि इसका अर्थ है एक ऐसा व्यक्ति जिसने अपनी आत्मा को पा लिया हो।''

उसके सामने सुखी दाम्पत्य जीवन का एक-एक पल घूम गया और अचानक समय का पहिया एक मौन पर आकर रूक गया, मौन-आन्तरिक मौन। मौन हर तरफ पसर गया, उसकी देह में, विचारों में, शरीर के उस हिस्से में जिनके अस्तित्व का उसे पता नहीं था। यह बिल्कुल ऐसा था जैसे उस मौन से संगीत की लहरियाँ उठ रही हो, जिसने उनकी जुदाई की सीमा रेखा को कोमल बना दिया हो। समय जैसे ठहर सा गया, ना मालूम यह एक क्षण था या कोई सदियाँ बीत गयी थीं, वह नहीं चाहती थी कि ये क्षण कभी समाप्त हो।

मौन ने वह सब कुछ कह डाला जो कि कहा जाना था, ''मैं सोचता हूँ कि हम दोनों ने कुछ पा लिया है, जो तुमने पाया है वह मानवता के हित में परिलक्षित होगा लेकिन जो एक स्त्री ने पाया है वह एक रहस्य की तरह उसके सीने में रहेगा।

बुद्ध ने अपने दोनों हाथ विनम्रता पूर्वक जोड़ दिये, ''शायद तुम्हारा रहस्य बुद्ध के लिये ऐसा आशीर्वाद हो जिससे वह एक स्त्री हृदय को समझ सके।''

उसने अपने रहस्य को अनावृत करते हुये कहा, ''औरत के सीने में दबा हुआ प्रेम कभी भी नहीं मरता। वह बहुत शक्तिशाली है, जब वह ज्योतित होता है, अपनी आत्मा को भी प्रकाशित कर देता है। इसके बाद उसे किसी की भी आवश्यकता नहीं होती उसे पूर्ण करने के लिये, वह अपनी आत्मा के आनन्द से ही पूर्णता पा लेती है।''

भारत की पुण्यभूमि की गरिमा को कई साहसी विधवाओं और रानियों ने बढ़ाया है, उन्होंने न केवल अपने देश पर शासन किया है बल्कि उसे दुश्मनों के नापाक इरादों से भी बचाया है। उनके कुछ नाम है- रानी चिनम्मा पन्नाबाई, रानी अहिल्याबाई होल्कर, रानी दुर्गावती, रानी झाँसी और रानी ताराबाई जिन्होंने सिर्फ़ सत्रह वर्ष की उम्र में मुगलों को मराठवाड़ा से खदेड़ दिया था।

हम शारीरिक आकर्षण के कारण, लोगों की जुदाई की तकलीफ महसूस करते हैं, लेकिन यदि हमारा चित्त आत्मा पर रहे, यह सम्भव है कि हम अपनों की आत्माओं को अपनी आत्मा के द्वारा महसूस करें। इस तरह हमारे बीच एक बहुत ही शक्तिशाली जुड़ाव बन जाएगा जो समय व दूरी से परे होगा। हमारे बीच की दूरी तो बनी रहेगी लेकिन हम एक दूसरे को अपने

नजदीक पाएँगे श्री माताजी ने जब सहजयोग के प्रसार के लिये लगभग पूरी दुनियां नापी, तह वब अपने पति से शारीरिक रूप से दूर नहीं, लेकिन जब वह फोन पर बात करती थी, तब ऐसा लगता था कि वे कभी दूर थे ही नहीं। अपने अमेरिका, आस्ट्रेलिया के टूर के मध्य से वह अपने रसोइये से बात करतीं, सर सी.पी. के खाने का मेन्यू निर्धारित करती और उनके पूरे आराम के लिये उन्हें हिदायतें देतीं। वह कहती थीं, ''ऐसा नहीं कि हम कितना समय एक साथ गुजारते हैं लेकिन कितनी अंतरंगता से एक दूसरे के साथ होते हैं- ये महत्त्वपूर्ण हैं।''

उनकी राय ने मुझे अपने बेटी की जुदाई को बर्दाश करने का आसान तरीका बनाया, जब वह शादी के बाद अमेरिका चली गयी थी। हम रोज़ फोन करते, स्काइप (Skype) पर बात करते, लेकिन धीरे-धीरे जब हमारा चित्त हमारी आत्मा से जुड़ा, हम अपने स्नेह की गहराई में और भी अधिक बंध गये, भले ही हमारे बीच बहुत दूरी थी। ख़लिल ज़िब्रान के शब्द मुझे याद आ गये, ''दोस्ती का अर्थ सिर्फ इतना है कि हम आत्मा के रूप में एक दूसरे के कितने नज़दीक है ?''

***

अध्याय - 49

डैडी, वह वहाँ मौजूद थीं

अगस्त, 2008 में श्री माताजी ने कनाड़ा का अपना ट्रिप बना लिया। कनाड़ा कलेक्टिविटी बहुत रोमांचित थी और बड़े ही प्रेम से कई बड़े पब्लिक प्रोग्राम की तैयारी में जुटी थी। सारी दुनिया के लोग भी पीछे नहीं रहे और इस शानदार अवसर के लिये अपने टिकिट बुक करा लिये। श्री माताजी की सेहत भी अच्छी थी लेकिन सिर्फ एक दिन पहले जब उन्हें कबैला से निकलना था, उन्होंने यह ट्रिप निरस्त कर दिया।

कनाड़ा के बच्चे बहुत निराश हुये, लेकिन श्री माताजी ने उन्हें ठण्डे-ठण्डे वाइब्रेशन्स से भर दिया।

उनके परम चैतन्य ने उनके सहस्त्रार खोल दिये और श्री माताजी के कहे शब्द याद दिला दिये, ''इस नये युग में तुम बिना ध्यान के तुम ध्यान में रहोगे।

मेरी अनुपस्थिति में भी तुम मेरी उपस्थिति महसूस करोगे। बिना माँगे तुम आशीर्वादित रहोगे।''

काफ़ी सहजयोगियों ने अपने ट्रिप कैंसिल कर दिये, लेकिन मेरी बेटी प्रज्ञा और दामाद अमित प्रधान उस प्रोग्राम में गये। पतझड़ के बावजूद टोरन्टो में बहार आई हुयी थी। प्रोग्राम के हॉल ठसाठस भर गये, लोग सीटों के सेक्शन्स के बीच की खाली जगहों में भी बैठ गये। आत्म साक्षात्कार देने के लिये जब स्क्रीन पर श्री माताजी दिखाई दीं, प्रज्ञा व अमित ने अपने सहस्त्रार पर कुण्डलिनी को नाचते हुये महसूस किया, ठीक उसी तरह जब वह श्री माताजी की उपस्थिति में महसूस करते थे। वे बहुत ही रोमांचित हुये

और बिना साँस लिये फोन पर अत्यन्त प्रसन्नता से भरी आवाज में बोले, ''डैडी, वह वहाँ मौजूद थीं।'' सचमुच वहाँ परम चैतन्य बहुत शक्तिशाली थे, प्रत्येक साधक ने आत्म साक्षात्कार को महसूस किया और बताया कि उन्होंने अपने सिर पर ठण्डी हवा को महसूस किया।''

मेरी कुण्डलिनी खुशी के मारे ऊपर उठी, ''निश्चित रूप से, वह वहाँ थी।'' मुझे एक कहानी याद आ गई, ईश्वर एक भक्त से बड़े खुश थे और उसे वरदान दिया कि वे हमेशा उसके साथ रहेंगे। एक बार वह एक लम्बी यात्रा पर गया, जिसके बीच एक रेगिस्तान भी पड़ता था, भक्त को प्यास लगी और वह थक गया था। आख़िर में वह थक कर नीचे गिर पड़ा। जब वह उठा तब उसने प्रार्थना कि, ''हे ईश्वर, आपने मुझे अकेला क्यों छोड़ दिया ?''

ईश्वर ने जवाब दिया, ''मैंने तुम्हें नहीं छोड़ा, रेत पर देखो, तुम्हें मेरे कदमों के निशान भी दिखेंगे। जब तुम थक गये थे, तब मैंने तुम्हें उठाया था।'' भक्त ने नीचे रेत पर देखा और सचमुच तीसरे कदम का निशान, उसके कदमों से थोड़ी ही दूरी पर मौजूद था।

हम आशीर्वादित हैं कि हमें कहीं ओर कुछ भी देखने की ज़रुरत नहीं, लेकिन हमारे भीतर ही हमारी प्रिय पूजनीया श्री माताजी, कुण्डलिनी के रूप में विराजमान है। वह ना केवल हमें तकलीफ़ों में आराम देती है, बल्कि हमें समस्याओं का समाधान भी देती है और इससे भी अधिक हमें निरानंद का अमृत प्रदान करती है।

अगर तुम समझते हो कि मैं शारीरिक रूप से यहाँ हूँ, मैं तो हर जगह हूँ, यह भी जान लेना चाहिये यह शरीर भी मिथ्या है। इस स्तर तक पहुँचना मुश्किल है लेकिन अगर इस मिथ्या स्वरूप पर से चित्त हटाया जाये, सत्य स्वयं ही स्थापित हो जायेगा और सत्य एवं आनंद की लहरिया तुम्हें स्वयं में लपेट लेंगी।'' (दामले जी को लिखा पत्र 5.5.75)

मेरी मनपसंद कहानी जिसमें श्रीकृष्ण अपने भाई उद्धव को राधा एवं गोपियों को मनाने वृन्दावन भेजते हैं। उद्धव गोपियों से मिलते हैं व उन्हें श्रीकृष्ण के पास मथुरा ले जाने की बात करते हैं।

वे मना करते हुये कहती हैं-''हमारे कृष्ण तो गायों को चराने वाले चरवाहा है, वह बाँसुरी बजाते हैं, पैरों में कुछ नहीं पहनते हैं। उद्धव हमारे उन्हीं कृष्ण को वापिस ला दो।''

उद्धव ने कहा कि वह उनके समाचार को पहुँचा देगा।

उन्होंने तेजी से जवाब दिया, ''समाचार उन्हें दिया जाता है जो दूर हो लेकिन वह जो कि हमारी आत्मा में समा गया हो, उसे क्या समाचार भेजें?''

उद्धव ने कहा, ''अपनी आँखें बंद करो व अपने हृदय में उन का ध्यान करो।''

गोपियाँ कहने लगी (रोते हुये), लेकिन उद्धव, हम अपनी आँखें कैसे बंद कर लें, देखो, वह पेड़ पर हैं, उसकी हर एक पत्तियों पर है, अब वह यमुना में हैं, देखो वह गाय चरा रहे हैं, देखो हर ओर तुम्हें कृष्ण ही दिखायी देंगे। कृष्णा हमारे साथ हँस रहे हैं, हमारा मक्खन भी चुरा रहे हैं।

राधा तब श्रीकृष्ण बन जाती हैं, गोपियों संग नृत्य करती हैं, बाँसुरी बजाती है। श्रीकृष्ण की तरह उन्हें छेड़ती हैं, पेड़ के पीछे छिप जाती है और भाग जाती है।

अभी तक उद्धव भी हृदय में विराजे श्रीकृष्ण का ध्यान करते थे लेकिन अब उन्हें श्रीकृष्ण चारों ओर नज़र आ रहे थे। वह उन्हें चारों ओर प्रणाम भी किये जा रहा था।

''लेकिन मैं चाहती हूँ कि तुम भी सब कुछ जान लो और गोप-गोपियों की तरह वह सब हासिल कर लो जो कि वे श्रीकृष्ण के समय ढूँढ़ा करते थे। वह चीज़ इस युग में तुम्हें अपने भीतर मिलेगी।'' (PP. मुम्बई 1975)।

क्या उन्होंने वादा नहीं किया, 'सहजयोग के इस नये युग में तुम्हें मेरी जरुरत नहीं, मैं सामने रहूँ, ऐसा ज़रुरी नहीं। सहज योग के इस दूसरे युग में आपको यह इच्छा बहुत नहीं रखनी चाहिये कि माँ तुम्हारे साथ रहें। यह सब तुम मुझसे ले लो;

तुम मुझे सड़क पर अपने साथ चलते हुये देख सकते हो,
तुम मुझे अपने बिस्तर पर सिरहाने बैठे देख सकते हो,
जब मेरा हाथ तुम्हारे सिर को सहला रहा होगा,
तुम मुझे ईसा मसीह के रूप में अपने कक्ष में चलते हुये देख सकते हो।
तुम मुझे राम के रूप में देख सकते हो।
ऐसा होना ही है, इसलिये तुम सब तैयार रहो।

बहुत सारे ऐसे कार्य होंगे, जो तुमने सोचे भी नहीं होंगे। तुम प्रज्ञालोक में पहुँच जाओगे, यह क्षितिज क्षेत्र है। प्रश्न समाप्त हो जाएंगे। इस तरह तुम बहुत शक्तिशाली हो जाओगे।''

सहस्त्रार पूजा 84

इसके अलावा श्री माताजी ने यह भी बताया; मार्कण्डेय ने यह सब ध्यान-समाधि से जाना, लेकिन मैं यह सब आपको बता सकती हूँ, इसे ध्यान में सत्यापित करना होगा (1976-1000 UK)

हाँलाकि अपने इस अवतार में श्री माताजी पूर्ण रूप से मानव रूप में

थी और दिखायी देता था कि उनके लिये भी आम इंसान की तरह बंधन थे, कमियाँ थी, लेकिन वास्तव में वह इंसानी शरीर में ही सीमित नहीं थी।

वह चारों ओर फैली हुयी परम पिता के प्रेम की शक्ति थी। तत्त्व उनके छोटे से इशारों से भी कार्यान्वित हो जाते थे; बरसात उनके प्रोग्रामों व पूजाओं में ठहर जाती थी, गर्म हवाएँ उनके आगमन से दब जाती थी, इसी तरह शीत लहरें भी दब जाती थीं। समुद्र भी बड़े सम्मान से शांत हो जाते थे, जब वह उसमें अपने चरण कमल डालती थीं लेकिन किनारों तक आकर उनके चरणों के चारों ओर घूमकर नमस्कार करते थे और कितने ही ऐसे चमत्कार जब सूखे रेगिस्तान हरियाली में बदल जाते थे, जब उनका चित्त वहाँ जाता था। नहीं, नहीं, ये चमत्कार नहीं थे, यह सब तो उनकी वास्तविकता थी।

उन्होंने बताया था, ''जैसे चाँदनी चाँद से अलग नहीं सूर्य की रोशनी सूर्य से अलग नहीं, मैं भी अपने चित्त से अलग नहीं, जहाँ मेरा चित्त है, वहीं मैं भी हूँ।''

वह चित्त जो कि ज्योतिर्मय हो जाता है, परम से एकाकार हो जाता है। यह कार्यान्वित हो जाता है, फलित हो जाता है, वह मदद करता है। यह बहुत ही चमत्कारिक है। तुम्हारा चित्त सामूहिक चेतना से जुड़ जाता है। यह किसी महान् वस्तु का हिस्सा नहीं है, बल्कि ये कार्यान्वित है।

निःसंदेह वह वहाँ मौजूद रहती है, जहाँ उनका चित्त है।

वे सारे स्थान जहाँ उनके चित्त का आशीर्वाद था, वे परम चैतन्य के स्त्रोत बन गये। वे जीवित स्वयंभू हो गये-कबैला, काना जौहरी, प्रतिष्ठान, निर्मल धाम दिल्ली, जन्म स्थान छिंदवाड़ा, बेलापुर हैल्थ सेन्टर, निर्मल प्रेम आश्रम नोएडा, गणपतिपुले, नारगोल, वैतरणा उनके द्वारा स्थापित

स्कूल, वे आश्रम आस्ट्रेलिया, अमेरिका, साउथ अमेरिका, यूरोप, धर्मशाला, पठानकोट व योगियों के घर 1 निश्चित रूप में जिन योगियों ने सहजयोग छोड़ दिया, उनके घरों से परम चैतन्य विदा हो गये।

इसी तरह वाइब्रेशन्स उन फोटोग्राफ से भी चले गये जहाँ प्रोटोकॉल तोड़े गये थे या वे गलत हाथों में चले गये थे। सन् 1977 के दिल्ली के पब्लिक प्रोग्राम में एक स्त्री जिसने आत्मसाक्षात्कार पाने के बाद सेन्टर आना शुरू कर दिया था। किसी को भी यह पता नहीं चला कि वह एक जादू-टोने वाले संघ की लीडर है और उसका उद्देश्य सहज की तकनीकों को सीखकर उसे अपनी गलत विद्या में लगाने का था। लेकिन श्री माताजी के सामने झूठ कब तक टिकता और उस स्त्री का झूठ पकड़ा गया।

श्री माताजी को कोई आश्चर्य नहीं हुआ, 'उसने मेरा फोटोग्राफ वहाँ लगा दिया, लेकिन मैं उस फोटो से बहुत पहले ही निकल गयी थी।''

हमें पता चल गया था कि उनका चित्त पदार्थों को भी भेद लेता है। उदाहरण के तौर पर, उनके उपहार उनके प्रेम को बिखेरते थे। हमारी नकारात्मकता से रक्षा करने के लिये वे कभी हमें अपनी शॉल में लपेट लेती थी या हमें अपना कोई सामान उठाने के लिये दे देती थी। जब हम किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये भेजे जाते थे, तब वह हमें अपना साडियों से भरा सूटकेस किसी को देने के लिये सौंप देती थी। हम जरा भी नहीं समझ पाते थे कि वह ऐसा हमें नकारात्मकता से बचाने के लिये करती थी जो कि हम पर सवार होती थीं। एक्सीडेंट में चमत्कारिक रूप से बच जाना यह बताता था कि हम बचा लिये गये क्योंकि हमारे पास उनका कुछ सामान था। इसलिये, किसी खास कार्य पर जाते वक्त उनकी कोई भी चीज साथ रखना बहुत ही पावन हो जाता था।

श्री माताजी की छोटी से छोटी वस्तु जिस पर उनका चित्त होता था, परम चैतन्य उत्सर्जित करती थी।

श्री आदिशक्ति ने जो कुछ भी बनाया है उसे कोई भी नष्ट नहीं कर सकता। सहजयोग उनकी रचना है। यह ईश्वरीय है, और इसलिये कोई भी उसे नष्ट नहीं कर सकता। हाँ, यह जरूर है कि सहजयोगियों के बीच बँटवारे ने अवश्य श्री कल्कि की चाल को धीमा कर दिया है, लेकिन यह उनके विराट शरीर को तोड़ नहीं सकते- उनका शरीर उनकी कोशिकाओं से अधिक महान् है।

वह कोशिकाएँ जो मर्यादा में रहेंगी, पोषित होंगी उनके प्रेम से और सुरक्षित रहेंगी, उनके विराट शरीर के द्वारा जबकि बाकी कैन्सर की शक्ल ले लेंगी।

मैं तुम्हारे हर क़दम पर साथ हूँ,
हर जगह,
जहाँ तुम हो,
हर उस जगह जहाँ तुम हो
मैं तुम्हारे साथ हूँ, पूर्णरूप से,
व्यक्ति में, मेरी आत्मा के द्वारा
और पूर्ण रूप से मेरे वचन के द्वारा।
यह मेरा वादा है तुमसे,
मैं एकक्षण भी तुमसे दूर नहीं हूँ।
जब कभी भी तुम मुझे याद करोगे
किसी भी जगह बस आँख बंद करके

उसी क्षण मैं अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के साथ आऊँगी,

शंख, चक्र, गदा, पदम, गरुड़, लई सिधारी

(वैसे ही जैसे श्रीकृष्ण द्रौपदी की पुकार पर द्वारिका से अपनी सवारी गरुड़ पर बैठकर पधारे थे)

एक क्षण की भी मैं देरी नहीं करूँगी,

लेकिन तुम्हें मेरा होना होगा।

यह बहुत महत्त्वपूर्ण है।

मैं तुम्हारे सम्मुख होऊँगी।

1976-0527 pp. mumbai

पब्लिक प्रोग्राम, मुम्बई

अध्याय - 50

कौतुक

सहजयोग में बहुत लोगों को जन्म से आत्म साक्षात्कारी बच्चे प्राप्त हुये, यह श्री माँ का आशीर्वाद था। जब वह छः वर्ष के हुये तब उनके माता-पिता ने श्री माताजी से अनुरोध किया कि उन बच्चों के लिये प्राइमरी स्कूल खोला जाय जहाँ वह संतुलित सहजयोगी के रूप में विकसित हों और उनके (श्री माँ) दृष्टिकोण को समझे। उन्होंने उनकी प्रार्थनाओं के जवाब में 1991 में धर्मशाला में इन्टरनेशनल सहज स्कूल की स्थापना की। उच्च गुणवत्ता की शिक्षा के अलावा उनका ध्येय कला, खेलकूद में बच्चों को पारंगत करना भी था। उन्होंने पूरे भारतवर्ष के कला, गायन, संगीत एवं नृत्य एकेडमियों का दौरा किया और अच्छे काबिल अध्यापकों का चयन करने के लिये जो कि भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य में उत्तम थे। अन्त में उन्हें चेन्नई की जानी-मानी कुचीपुड़ी नृत्य एकेडमी की एक अध्यापिका के वाइब्रेशंस पसंद आये।

बच्चों ने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में नये आयाम बताये बल्कि तरह-तरह के सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी सफलता हासिल की। जल्दी ही उन्हें गणपति पुले में श्री माताजी के सम्मुख प्रस्तुति देने का अवसर मिला। जब उनकी बारी आई, श्री माताजी ने अपनी कुर्सी को स्टेज से हटवा कर दर्शकों के साथ रखवाई ताकि वह हरएक बच्चे की प्रस्तुति का आनंद ले सके।

जैसे ही बड़ी लड़कियों ने कुचीपुड़ी नृत्य की प्रस्तुति दी, श्री माताजी आनंद से भर उठी। वह भीतर तक प्रसन्न हो गयी एवं उन लड़कियों को गले से लगा दिया, ''जब एक माँ की सोच, उनकी दृष्टि को बच्चे आत्मसात कर अच्छा प्रदर्शन करते हैं तब उनके (माँ) हृदय में जो भावनाएँ उठती हैं,

वे कौतुक कहलाती है- वह मिठास जो कि तुम अपनी शुष्क भावनाओं से नहीं समझ सकते। कौतुक एक खुशी है, आनंद है जो कि एक माँ अपने बच्चे की आगे बढ़ते हुये देखती है। जब माँ देखती है कि कैसे बच्चे उन्हें प्रेम लौटा रहे हैं, नन्हें-नन्हें तरीकों से।''

उनके आनंद ने समंदर की लहरों को छू लिया,
चन्द्रमा की शीतलता को छू लिया,
ठण्डी समुद्री हवा को,
पान के वृक्षों को,
रेत के कणों को।

इस मधुर आनंद ने, जो कि संगीत से भी मीठा था और हँसी से भी महान् था, मुझे उस दिव्य आनंद से जोड़ दिया जो कि प्रत्येक तत्त्व में रचा बसा था, जिससे सुन्दर धरती, आकाश, प्रकाश एवं ध्वनि बने थे और बनी थी, प्रत्येक वह चीज जो कि गति में थी, विचार में थी, प्रयोजन में थी।

मैंने उनके चरण-कमलों में प्रणाम कर उन्हें धन्यवाद दिया कि उन्होंने हमें अपने स्वर्ग के राज्य में प्रवेश की अनुमति दी। हर आने वाली रात्रि में, जाने माने उस्तादों ने परम चैतन्य रूपी मय को और भी हमारे प्यालों में (दिलों में) छलकाया। वहाँ और भी कई महान् प्रदर्शक (कलाकार) थे लेकिन एक सहजयोगी जो कि हम सबमें बड़ा लोकिप्रय हो गया था, वह हमें क्षणों में हँसा देता था। सभी उसकी ओर आकर्षित थे और मैंने श्री माताजी की अनुमति लेनी चाही कि अगले सेमीनार में उसे आमंत्रित कर लिया जाये। लेकिन श्री माताजी इससे प्रसन्न नहीं हुयी, ''क्या तुमने उसके वाइब्रेशंस देखे?''

जैसे ही मैंने उस पर अपना चित्त डाला, मैं उसके गर्म वाइब्रेशंस से पसीने-पीसने हो गया। उनके संदेश ने मेरे अंधेरों को सवेरे के सूर्य प्रकाश से भर दिया। एक साल के बाद उसने सहजयोग के खिलाफ मुहिम छेड़ दी। इस

घटना से मुझे एक बात समझ में आ गयी- कोई भी कलाकार कितना ही प्रतिभावान या प्रसिद्ध क्यों ना हो, उसे वाइब्रेशन्स से परखना चाहिये। इसके बाद में कलाकारों को आमंत्रित करने से पहले उनके वाइब्रेशन्स देखना और वाइब्रेशन्स को उनकी प्रतिभा या मनोरंजन से ज्यादा अहमियत देना। दायीं नाड़ी वाले या बाँई नाड़ी वाले कलाकार श्रोताओं को भी प्रभावित कर सकते हैं, व उन्हें दाँयी या बाँई ओर का झूला झुला सकते हैं। जबकि, एक संतुलित संगीतज्ञ पूरी सामूहिकता के वाइब्रेशंस को ऊपर उठा सकता है और यहाँ तक कि सहस्त्रार भी खोल सकता है। इसलिये शाम के संगीत के प्रोग्राम हमारे मनोरंजन के लिये न होकर, देवी के चरणों में हमारी भक्ति का समर्पण होना चाहिये। सबसे महत्त्वपूर्ण है देवी माँ को प्रसन्न करना। निश्चित रूप से कोई भी कलाकार अपने आप में पूर्ण नहीं होता, लेकिन उनका समर्पण ही देवी को प्रसन्न कर सकता है। जब श्री माताजी प्रसन्न होती थी, वह हजारों आशीर्वाद हम पर बरसाती थी और हम निरानंद में डूब जाते थे।

जब कीचड़ में कमल खिलता है, उसे ऊपर उठना होता है यह अपना रास्ता मिट्टी की दरारों व रन्ध्रों में से बनाता है लेकिन जब यह बाहर आता है; पूर्णरूप से स्वतंत्र होता है, आज़ाद होता है।

तब वह इधर उधर नहीं जाता बल्कि सिर्फ खिलता है और खूबसूरत ओस की बूँदी से सुसज्जित होता है और वे ओस की बूँदे उसे कमल में खुशबू का संचार करता है स्वतः ही खुशबू चारों ओर फैलने लगती है।

यह एक अलग ही तरीका है
यह अलग ही क्रिया है
यह जीवन का अलग ही रास्ता है
वह है सहज होना।

-श्री माताजी (1977-0127 बॉर्डी 2)

अध्याय - 51

अर्न्तयामी

1987 में राहुरी के पब्लिक प्रोग्राम के बाद मुझे श्री माताजी के संग नंदगाँव शिगवे जाने का आशीर्वाद मिला, जहाँ उनके पूर्वजों का किला (वाड़ा) था। सड़क पर दोनों ओर लगे गन्नों के पेड़ों की सुगन्ध फैली हुयी थी। हरियाली चारों ओर थी और एक नदी थी जिसे हमें पार करना था। श्री माताजी मुझे कहानी सुना रही थी जो कि एक हकीकत थी, कि कैसे उनकी दादी ने अपनी जान बचाने के लिये इस नदी को तैरकर पार किया था। कुछ किलोमीटर दूर एक पत्थर का बना जीर्ण-शीर्ण किला बना हुआ था।

गाँव वालों ने बड़े जोश से श्री माताजी का वाड़ा में स्वागत किया। गाँव के मुखिया ने श्री माताजी को बताया कि उनके (गाँव वालों के) पूर्वजों ने श्री माताजी की पैतृक भूमि पर कब्ज़ा कर लिया था, लेकिन अब हम आपको लौटाना चाहते हैं। श्री माताजी ने कहा कि वह उस जमीन को वापिस पाने के लिये नहीं आई है बल्कि उन्हें आत्म साक्षात्कार देने के लिये आई हैं। हाँलाकि उसके विनम्र आग्रह के कारण श्री माताजी ने हामी भरी और दो एकड़ जमीन का टोकन लेने के लिये तैयार हुयी।

इसके बाद वह श्री माताजी को जुलूस के साथ एक बहुत बड़े पब्लिक प्रोग्राम के लिये सम्मान के साथ ले गया। पूरे रास्ते बड़ी श्रद्धा से लोग नृत्य करते रहे। उसने बड़ी ही अधीरता से एक भाषण दिया और जनता को उद्वेलित कर दिया। जल्दी ही श्री माताजी ने उन्हें आत्म साक्षात्कार का आशीष दिया, सभी के हाथ ठण्डी-ठण्डी चैतन्य लहरियों के संगीत से रोमांचित हो गये।

मैं उस मुखिया, जो कि बहुत ही उदार, क्षमाशील एवं उत्तम व्यवहार करने वाला था, से बहुत ही प्रभावित हुआ और उसकी बहुत तारीफ की। श्री माताजी मुझे देखते हुये आँखों ही आँखों में मुस्कुरा रहा था, और इससे मैं थोड़ा घबरा गया। शायद कोई ओर भी बात इसमें छिपी हुयी थी। जैसे ही मैं इस विषय पर गहराई से सोचने लगा, चार सहज प्रोफ़ेसर, कृषि यूनिवर्सिटी से वहाँ पहुँचे और श्री माताजी को उस मुखिया के लिये आगाह करने लगे।

इससे पहले कि वे कुछ बोलते, श्री माताजी मुस्कुराई और बोलीं, ''मैं इसके बारे में सब कुछ जानती हूँ और उसके ग़लत कार्यों के बारे में विस्तृत रूप से बताने लगी।''

प्रोफ़ेसर्स स्तब्ध रह गये, ''आप सह सब कैसे जानती हैं ?''

श्री माताजी ने जवाब दिया, ''मैं सभी के बारे में जानती हूँ। मैं नहीं बता सकती कैसे ! अगर तुम किसी को प्रेम करते हो, तुम उसके बारे में सब कुछ जानते हो।'' उन्होंने प्रश्न किया ''सब कुछ जानते हुये भी आपने उसे अपने नज़दीक क्यों आने दिया ?''

श्री माताजी की आँखे चमकने लगी, ''क्या तुम ऐसा सोचते हो, कि वह मेरे नज़दीक है ?''

''हाँ।''

उन्होंने स्पष्ट किया, ''मैं प्रसन्न हूँ कि वह मेरे नज़दीक आ गया है, अब मैं उसे सही कर सकती हूँ। सजा देने से क्या ठीक हो जाएगा ? किसी आदमी के दिमाग के ग़लत विचार एवं भ्रमों को हटाकर उसे सही करना ज्यादा अच्छी बात है।''

श्री माताजी का चित्त हमारी काबिलियत पर ज्यादा रहता है बजाय हमारी गलतियों के। उनकी करूणा हमारी आत्मा की रक्षा हमारे ही अहंकार से करती है। वह किसी को भी सज़ा नहीं देती हैं बल्कि अपने महामाया स्वरूप से उस व्यक्ति को इतना योग्य बना देती है कि वह अपने अहंकार को

देख पाता है और फिर से सही रास्ते पर आ जाता है। मेरे अर्न्तमन ने मुझे कई लोगों के ऊपरी दिखावे (mask) को बेधकर उनकी सच्चाई बताई। एक बार को मैं बहुत प्रसन्न भी हुआ और सहम भी गया।

लेकिन इस घटना ने मुझे एक ओर चीज़ समझा दी- श्री आदिशक्ति का दूसरा स्वरूप; वह अन्तर्यामी थी, जो कि अन्दर बाहर सब कुछ जानती थी। जहाँ कहीं भी उनका चित्त जाता था, लेज़र बीम की तरह काम करता था और उस व्यक्ति के बारे में छोटी से छोटी जानकारी भी प्राप्त कर लेता था। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं, वह हमारे भूतकाल व भविष्य काल के अच्छे व बुरे कार्यों के बारे में जानती है, उसमें उनकी कोई रूचि नहीं। उनकी दृष्टि ओर ही थी- कैसे हमारी कुण्डलिनी को भूत के संस्कारों व भविष्य के अहंकार रूपी पंजों से आज़ाद कराये और इसे सामूहिक चेतना से जोड़ दे। जब कभी भी मेरे विचार उनके 'वाडा' (किले) की ओर जाते, उनके शब्द मेरे कानों में गूँजने लगते-

''भूल जाओ कि तुम बाधित हो
या बाधा जैसी कोई चीज़ भी है।
अपने सभी प्रयासों से
मुझ थामे रहो।''

देवी का एक नाम है स्तुति प्रिया : अर्थ है उन्हें स्तुति पसंद है।

श्री माताजी ने बताया :-

जब तुम हृदय से किसी की (देवी माँ की) प्रशंसा करते हो इसका अर्थ है तुम उसे स्वीकार करते हो और यही वह समय होता है जब तुम्हारे चक्र एक ऐसा बल पैदा करते हैं जो तुम्हें परमात्मा के साम्राज्य में पहुँचा देता है। तुम्हें मुझे वोट नहीं देना है बल्कि मैं तुम्हें वोट दे रही हूँ इसलिये कि तुमने मुझे प्रसन्न किया है, खुश किया है। अगर मैं तुमसे अप्रसन्न हूँ तब ईश्वर भी तुमसे अप्रसन्न होंगे व सहजयोग भी तुमसे अप्रसन्न होगा।

अध्याय - 52

तुम्हारे हृदय की दृष्टि

1985 में श्री माताजी प्रतिष्ठान पुणे पहुँची जहाँ उनके फार्म हाउस की फ़िनिर्शिंग चल रही थी। एक स्थानीय सहजयोगी वहाँ के निर्माण कार्य को संचालित कर रहा था। मार्च 1986 में जब श्री माताजी अपनी 64वीं वर्षगाँठ मनाने के लिये मुम्बई गयीं, पुणे कलैक्ट्री के अफ़सर प्रतिष्ठान पहुँचे और सहजयोगी सपरवाइज़र को आदेश दिया कि काम रोक दें क्योंकि यह फार्म हाउस नहीं है और इसे तोड़ा जाएगा।

प्रतिष्ठान के टूटने का भय उसे बायीं तरफ ले गया। घर लौटने पर असुरक्षा की भावना उसके हृदय में घर कर गयी और वह डिप्रेशन में चला गया। उसके माता-पिता सहज योगी नहीं थे, वे उसे मनोचिकित्सक के पास ले गये जिसने उसे एण्टी-डिप्रेशन गोलियाँ काफ़ी भारी मात्रा में दे दी।

श्री माताजी 25 तारीख को लौटी और देखा कि काम रोक दिया गया है। उन्होंने महसूस किया कि पूरी सामूहिकता का मध्य हृदय बाधित है। उन्होंने परम चैतन्य देकर पूरी सामूहिगता को फिर से मध्य नाड़ी पर लाई। ''असुरक्षा ने अपना रंग दिखा दिया।''

एक योगी ने पूछा, ''श्रीमाताजी हम असुरक्षा का सामना कैसे करें?

उन्होंने जवाब दिया, ''असुरक्षा तुम्हारी परिपक्वता में चुनौती है; तुम परिपक्व हो या नहीं।''

उसने सवाल किया, ''हम परिपक्व कैसे बनें ?''

उन्होंने जवाब दिया, ''परिपक्वता तभी आएगी जब तुम फल बनोगे, जब तुम आत्मा बनोगे। ऐसे अवसर, ऐसी गलतियाँ ही तुम्हें परिपक्व बना देगी।''

उसने अपने कान पकड़ लिये, ''श्री माताजी, हम चिन्तित हो गये थे क्योंकि उन्होंने प्रतिष्ठान तोड़ने की धमकी दी थी।''

उन्होंने कहा, ''तुमने कई चमत्कारिक फोटोग्राफ देखे हैं और तुम्हें विश्वास होना चाहिये कि कोई भी उस चीज़ को नहीं तोड़ सकता, जिसे मैंने बनाया हो। तुम यह भी जानते हो कि मैं बहुत ही कानून को मानने वाली व्यक्ति हूँ। प्रतिष्ठान पहले ही बन चुका था, नया महाराष्ट्र लैण्ड रैवेन्यू लॉ जो कि फार्म हाउस के क्षेत्रफल को छोटा बना रहा है, बाद में आया है। डिमोलिशन नोटिस, माफिया-पोलिटिशियन नेक्सस की चाल थी कि वे इस हरी-भरी धरती को स्वयं हथिया ले।

अगली सुबह सहजयोगी सुपरवाइजर, भारी मात्रा में दवाई खाकर आया।

श्री माताजी ने पूछा ''तुम्हें क्या हुआ है ?''

''मनोचिकित्सक ने मुझे एण्टी डिप्रेशन दवाइयाँ दी है।''

वह प्रसन्न नहीं हुयी, ''तुम मनोचिकित्सक के पास गये ही क्यों? वे खुद अंधेरों में है। तुम्हारी बाँई तरफ को उन्होंने बहुत नुकसान पहुँचा दिया है। अब सुनो, अपना चित्त मेरी ओर रखो, अपना ध्यान मुझ पर केन्द्रित करो। तुम्हारी असुरक्षा ने नकारत्मकता को बाँयी तरफ से आने का रास्ता दिया है। अब अपना बाँया हाथ अपने हृदय पर रखो, दायाँ हाथ मेरी ओर करके बार-बार बोलो, ''श्री माताजी, आप मेरी सभी नकारत्मकता का नाश कर रही है।''

''बहुत अच्छा.. अब दोहराओ, 'श्री माताजी, कृपया मेरे हृदय में पधारिये।''

संतोष में आइये।

अबोधिता में आइये,

वैभव में आइये,

सुन्दरता में आइये,

सत्य में आइये,

प्रेम में आइये,

सभी बटन वहाँ हैं।

उस बटन को दबाओ, जो कुछ तुम चाहते हो, तुम्हारे भीतर आने लगेगा।''

जैसे ही उसने एक-एक कर बटन दबाने शुरू किये, हमारे चक्रों ने ठण्डी-ठण्डी परम चैतन्य की लहरियाँ छोड़नी शुरू की। इससे यह समझ में आया कि डिमोलिशन (तोड़ने) नोटिस के पीछे जो शैतानी ताकत थी, उसने हमें बाँयी तरफ धकेल दिया, और जैसे ही श्री माताजी ने उस नकारात्मकता को नष्ट किया, हम उसकी गुलामी से बाहर आ गये और निरानंद का आनंद हमें फिर से सहस्रार पर महसूस हुआ।

हरएक वस्तु में तुम्हारे हृदय की ऐसी अन्तदृष्टि होनी चाहिये।

यह अर्थपूर्ण है।

यह अर्थपूर्णता (गुरुत्व) तुम्हारे भीतर दिखनी चाहिये; हर स्थान पर बहता हुआ दिखे।

तुम्हारे भीतर आकाश की भी विहंगम दृष्टि होनी चाहिये।

जल की सी स्वच्छता तुम्हारे भीतर होनी चाहिये।

तुम्हारे चेहरे से हज़ारों सूर्य की रोशनी चमकती हुई दिखनी चाहिये।

तुम्हारे भीतर से चन्द्रमा की चाँदनी (ठंडक) महसूस होनी चाहिये हर ओर निरन्तर बहती हुयी हवा की तरह तुम्हें होना चाहिये।

तुम्हारी साँसे हर एक की साँसों के साथ धड़कनी चाहिये।

इसे जान लो !

श्री माताजी (1975-0125 मुम्बई)

अध्याय - 53

आल्हाद्दायिनी

श्री माताजी को मराठी नृत्यनाटिका को देखना बहुत अच्छा लगता था जिसका प्रदर्शन कलाकार कीर्ति शेलेधर किया करती थी। जब वह पुणे में रहती थी, ज्यादातर पब्लिक प्रोग्राम में व्यस्त रहती थी, लेकिन जब भी समय मिलता था वह इस नृत्य नाटिका को देखने जाती थी। मैं मराठी नहीं समझ पाता था, इसलिये श्री माताजी मुझे अपने नज़दीक बैठाकर उसका अर्थ समझाती थीं। श्री माताजी मुझ पर इतना ध्यान देती थीं, मुझे थोड़ा संकोच होता था, लेकिन वह कहती, ''मैं आल्हाद्दायिनी हूँ मेरा आनंद अपने बच्चों को आनंद देने में है।''

एक बार, उनको एक हास्य प्रधान मराठी ड्रामा बहुत पसन्द आया, 'कुर्या सदा तिंगलम', इतना कि जब भी कोई विदेशी योगियों का ग्रुप उनके दर्शनों के लिये आता, वह उन्हें यह नाटक दिखाने ले जातीं। तीसरी बार मैंने कहा, ''क्यों नहीं आप कोई अनुवादक भेज देतीं।''

''अरे नहीं ! मैं अपने बच्चो के आनंद के लिये जीती हूँ। दैवीय कार्य कोई अर्थहीन नाटक नहीं बल्कि प्रेम है, आनंद है।''

जब प्रतिष्ठान का निर्माण कार्य चल रहा था, मिलान के सहजयोगी वहाँ करने हेतू आये। हर सुबह 5.00 बजे श्री माताजी होलसेल फल मण्डी से उनके फल लेने जाती। मैंने उनसे कहा कि ये कार्य मैं कर दूँगा। वह हँसी, ''लेकिन तुम्हें नहीं मालूम कि मिलान के लोग कैसे तरबूज (Melon) पसन्द करते हैं, तुम उनका चयन कैसे करोगे ? अपने पास्ता की ही तरह वे तरबूज कितने पके हुये होने चाहिये, इसका भी पूरा ख्याल रखते हैं। इसी वजह से उन्हें मेलन-इज़ कहते हैं।''

अगर उन्हें पता चल जाता कि फलां सहजयोगी को फलां चीज़ पसन्द है, वहर हर हालत में चीज़ खरीद कर लातीं। एक बाहर मास्कों के प्रसिद्ध डिपार्टमेन्टल स्टोर 'गम्प' से खरीददारी कर रहे थे। उन्हें लंदन के लिये अगली सुबह ही हवाई यात्रा करनी थी, और वह लंदन के योगियों के लिये कुछ खरीदना चाहती थी। उन्हें याद आया कि उन लोगों को केविअर (एक खाद्य वस्तु जो मछली का बना होता है) Cavior बहुत पसंद है, दुर्भाग्य से केविअर वहाँ स्टॉक में नहीं था। उन्होंने एक घंटा लगाया, कई स्टोर्स देखे इंगलिश सहजयोगी केविअर देख कर कितना खुश होंगे, यह सोचकर वे अपनी थकान भी भूल गयीं। मेरे सहस्रार से, माँ आदिशक्ति का निरन्तर कार्य करते देखकर ज़बर्दस्त परम चैतन्य बहने लगा।

1992 में भारतीय योगियों का (प्रतिनिधियों का) ग्रुप पहली बार श्री माताजी से मिलने कबैला आया। श्री माताजी ने उन्हें चाय पर बुलाया। मैन्यू बनाते वक्त उन्होंने कहा, ''भारतीयों को चेरी बहुत पसंद है लेकिन भारत में चेरी बहुत कम समय के लिये ही आती है। क्यों नहीं उनके लिये चेरी मँगवाई जाये।''

हाँलाकि यह चेरी का मौसम था लेकिन कबैला में फलों की दुकान पर बड़ी-बड़ी रस से भरी काली चैरी नहीं मिली। इसलिये उन्होंने फैसला किया कि नॉवीलेम्यूर जाकर काली चेरीज़ लायी जाए। जब भारतीय योगियों ने बड़ी-बड़ी काली चैरीज़ देखी, तब उनकी आँखों में भरी खुशी की चमक से माँ आल्हाद्दायिनी के हृदय से प्रेम-धारा बह चली। उन्होंने उनकी प्लेट भर दीं और उनके आनंद ने श्री माँ के हृदय से उठने वाली आल्हाद् की तरंगों को कई गुना बढ़ा दिया।

1994 में कला क्षेत्र, चेन्नई ने श्री माताजी को जात्य-मोक्ष (रामायण की एक कड़ी) के बैले डांस के लिये निमंत्रण दिया। हम सब उस बैले से इतने ज्यादा प्रभावित हुये कि हमने श्री माताजी को उन्हें निमंत्रित करने के

लिये प्रार्थना की, मौका था कलकत्ता में होने वाली जन्म दिन पूजा। सत्तर लोगों के उस ग्रुप का कलकत्ता आने का खर्च, ठहरने की व्यवस्था और बहुत सारा दूसरा खर्चा- ये सब आल्हाद्दायिनी के निरन्तर प्रेम प्रवाह में ठहर नहीं पाये, बह गये।

श्री माताजी मुस्कुराई, ''मेरी कुण्डलिनी गंगा नदी के समान है, अगर तुम चाहो तो अपने घड़े भर सकते हो।''

कलकत्ता के योगियों ने ना केवल अपने आनंद के घड़े भर लिये, बल्कि श्री गंगा के आशीर्वाद को सभी साधकों के साथ बाँटा। गंगा नदी के आनंद की लहरियाँ हज़ार गुना बढ़ गयी।

इन 25 वर्षों के लम्बे सामीप्य में भी मैं यह नहीं जान सका कि वह वास्तव में स्वयं के लिये क्या चाहती थीं। मैंने बहुत कोशिश की लेकिन असफल रहा। उनका हर कार्य दूसरों को प्रसन्न करने के लिये होता था। यहाँ तक कि साड़ियाँ जो वह पहनती थीं, वह भी औरों के लिये पहनती थीं, उदाहरण कै तौर पर सर सी.पी. की उपस्थिति में उनकी पसंद के रंग पहनती थीं। अगर पूजा, पूजा में होती थी, वह महाराष्ट्र का मनपसंद हरा रंग पहनती थीं। यूरोप में होने वाली पूजा उनका मनपसंद गुलाबी रंग था, मैरुन रंग। अमेरिका में होने वाली पूजा में नीला या लाल रंग। यहाँ तक कि पूजाएँ भी सप्ताहन्त में होती थीं, हमारे सुविधा के अनुसार समय भी रखा जाता था। वह अपने आराम व सुविधा के बारे में कभी नहीं सोचती थी। वह कहा करती थीं, उनकी कोई इच्छा नहीं है। मैं निष्परिग्रहा हूँ। मैं स्वयं में पूर्ण हूँ, इसलिये मुझे अपने लिये कुछ भी नहीं चाहती। मैं देने में प्रसन्न होती हूँ, इससे मुझे महानतम् आनंद मिलता है।

माँ आल्हाद्दायिनी के निरन्तर प्रेम प्रवाह से मैंने यह सीखा, कि अगर हम अपने लिये खुशी चाहते हैं; तो हमें दूसरों को खुश करना होगा। उनके अहंकार पर व्यंग्य कस के या चोट करके नहीं, बल्कि उन्हें आनंदमय बनाके।

अध्याय - 54

अमेरिकेश्वरी

1997 के न्यूयार्क पब्लिक प्रोग्राम, जिन्हें श्री माताजी ने संचालित किया था, के बाद मैंने कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में एक सप्ताह तक फ़ोलोअप प्रोग्राम लिये। मैं नये साधकों की चैतन्य लहरियों से उत्साहित था, और उन्हें अब मंत्र बताना चाह रहा था। अमेरिका योगियों ने मुझे थोड़ा धीरे चलने को कहा, 'धोखे में नहीं रहना, हालाँकि साधक अच्छे हैं, वे बहुत दाँयी तरफ के झुकाव वाले भी हैं और किसी भी चीज़ से चिपके नहीं रह सकते जितनी जल्दी आये हैं उनती ही जल्दी गायब भी हो जाएँगे।

मैं असमंजस में था, जब मुझे आत्म साक्षात्कार प्राप्त हुआ था, मुझे श्री माताजी के शब्द याद थे, ''पचास प्रतिशत सहजयोग मंत्रों से है।''

मैंने श्री माताजी से परामर्श लेना उचित समझा।

श्री माताजी तब न्यूजर्सी में थी। जैसे ही मैंने श्री माताजी को प्रणाम किया उन्होंने पूछा, ''क्या तुमने उन्हें मंत्र बताये ?''

मैंने उन्हें सामूहिकता की बतायी हुयी बातें कहीं, ''शायद हमें कुछ नया करना होगा।''

उन्होंने अपना सिर हिलाया, ''सहजयोग को नयी चीज़ों के प्रयोग से कोई परेशानी नहीं है। तुम पूरी तरह से स्वतंत्र हो। मैं तुम्हें कोई आशा नहीं दे सकती। मैं तुम्हें सम्मोहित नहीं कर सकती। मैं कुछ भी नहीं कर सकती; यह सदा तुम पर निर्भर है।''

मैंने पूछा लेकिन, ''कैसे इन दाँयी तरफ के अमेरिकियों को संभालूँ?''

वह हडसन नदी की ओर देखने लगी जो नज़दीक ही बह रही थी और धीरे-धीरे अपनी आँखें बंद कर लीं। मैंने वह प्रश्न विराट के मस्तिष्क तक

पहुँचा दिया था। थोड़ी देर में उन्होंने आँखें खोलीं, ''एक दूसरा रास्ता है जो कि मंत्र बोलने से भी आसान है। अगर तुम श्रीराम के गुणों का अध्ययन करो व उन गुणों को अपने व्यक्तित्व में समा लो, तब श्रीराम को प्रसन्न करना बहुत आसान है।

श्री गणेश के गुण क्या है ? वह अपनी माता के प्रति समर्पित है।

ईसा मसीह के गुण क्या है ? वह क्षमा कर देते हैं।

श्रीकृष्ण के गुण क्या है ? वह हर एक बात को साक्षी स्वरूप देखते हैं।

यह बहुत ही मुश्किल है कि मेरे गुणों को स्थापित किया जा सके, क्योंकि मैं महामाया हूँ, कोशिश करो, माँ के गुण को स्थापित हो सकें।

आपको देवी-देवता के गुणों पर अपना चित्त लगाकर उनके गुण आत्मसात करने होंगे, वरना आप उस देवता के साथ संबंध स्थापित नहीं कर पाएँगे, और तब उनके मंत्रों को बार-बार दोहराने से भी कोई लाभ नहीं होगा।''

मैं परम चैतन्य से नहा गया। वाह ! अमेरिकेश्वरी ने अमरीका को नये मंत्र से आशीर्वादित किया।

अगले ही दिन से मैंने उन्हें (साधकों) को देवताओं की कहानियाँ बतानी शुरू की। अमरीकियों को कहानियाँ पसंद थी और देवी-देवताओं के गुणों की प्रशंसा करते हुये, वे उन्हें स्वीकार भी करते जा रहे थे। सप्ताहान्त के पश्चात् सामूहिक हवन में भी आए, अग्नि में आहूतियाँ दी और खुशी से मंत्र उच्चारण किये।

मैंने एक बात समझ ली थी, हर एक समस्या का एक समाधान भी है। अगर समाधान मेरे दिमाग़ से नहीं मिलता तो कहीं ओर मिलेगा- विराट के मस्तिष्क से। इस ज्ञान से मुझे कई चुनौतियों का सामना करने की मदद

मिली। हरएक मुश्किल घड़ी में मैंने माताजी को अपने हृदय में स्थापित किया और उसी घड़ी उन्होंने समस्या को समाप्त कर दिया।

अगर तुम समर्पित होते हो,

तब तुम आश्चर्यचकित रह जाओगे यह देखकर कि तुम पूर्णरूप से परम चैतन्य से एकाकार हो जाते हो।

यही नहीं बल्कि तुम खुद परम चैतन्य बन जाते हो।

तब तुम्हें सभी तरीके (विचार) मालूम हो जाते हैं;

हरएक चीज जो कि ईश्वरीय है।

यही नहीं, बल्कि ईश्वर की मदद भी मिलती है,

या ईश्वरीय समाधान भी।

(श्री माताजी - सहस्रार पूजा 1999)

अध्याय - 55

श्री योग क्षेम दायिनी

''जब मेरा जन्म हुआ, नकारात्मक शक्तियों ने अपना रुख़ बदला और पाश्चात्य देशों के नैतिक मूल्यों में संदेह जनक स्थिति पैदा कर दी।''

यह संदेह मस्तिष्क में ऐसा समा गया कि सही और गलत का विवेक समाप्त हो गया। संदेहास्पद स्थिति बिना ईश्वरीय दख़ल के हट नहीं सकती थी। 1970 में, ईश्वर ने दख़ल दिया; श्री आदिशक्ति श्री माताजी निर्मला देवी ने शैतानी शक्तियों का सामना किया। उन्होंने यह लड़ाई अकेले ही लड़ी और एक ही हथियार से-प्रेम का हथियार।

''किसी के चक्रों में बाधाएँ हैं। अतः मैं अपने चक्रों से उन्हें ठीक कर देती हूँ, यह इस तरह होता है। लेकिन तुम्हें पता है मुझे कितना संघर्ष करना पड़ता है ? मुझे कितनी कड़ी मेहनत करनी पड़ती है ? यह बहुत मुश्किल कार्य है- किसी को आत्मसाक्षात्कार देना। मेरी कुण्डलिनी को कुछ भी नहीं चाहिये। लेकिन फिर भी उसे तुम लोगों की भारी कुण्डनिली को उठाकर ऊपर पहुँचाना होता है। यह बहुत ही भारी कार्य है; सिर्फ़ एक सच्चा कार्य करने वाला ही यह कर सकता है। इसकी यही कसौटी है। ऐसा इंसान जो किसी से प्यार नहीं करता, वह ये कार्य नहीं कर सकता। यह बहुत बड़ा कार्य है। आसान नहीं है। लेकिन यह घटित होता है सिर्फ़ तुम्हारे और मेरे बीच के प्रेम और करुणा से.....''

इस महान् युद्ध में, समय बीत रहा था, गति बहुत भयानक थी और उन्हें हरपल इन चुनौतियों का सामना करते हुये कार्य करते रहना था। आपके लिये उनके पास समय नहीं था और दूर तक बड़ी यात्रा (मैराथन) करते

जाना था। हाँलाकि उनकी यात्रा बहुत लम्बी और मुश्किलों से भरी थी, फिर भी वह समय निकाल कर अपने नये योगियों को उपहार देना नहीं भूलती थीं। इस मैराथन दौड़ में, यूरोप के टूर समाप्त होते-होते, रूसी बच्चे (योगी) उनका इंतज़ार कर रहे होते थे और वह उनके लिये खरीददारी शुरू कर देतीं।

वह सारी-सारी रात जगकर साधकों के चक्र स्वच्छ कर रही होतीं। हमें इतना आश्चर्य होता था कि प्रातःकाल उनका चेहरा चमकता हुआ दिखाई देता जैसे कई सारे सूर्य एक साथ चमकते हों, ''हमारे मॉस्कों की उड़ान कितने बजे की है ?'' मैं बताता, ''हमें एयरपोर्ट पर छः घंट बाद रिपोर्ट करना है।''

''बहुत अच्छा ! काफ़ी समय है रास्ते में हम रूसी योगियों (बच्चों) के लिये उपहार ख़रीद सकते हैं।''

खरीददारी रिपोर्टिंग टाइम तक चलती रहती। उपहार भी कोई एक या दो दर्ज़न रूसीयों के लिये नहीं खरीदे जाते बल्कि 300 लोगों की सामूहिकता के लिये खरीदे जाते और वह भी एक जैसे। तीन सौ लोगों के लिये एक जैसे उपहार किसी भी दुकान पर एक साथ नहीं मिल पाते लेकिन वह अपने प्रेम में डूबी हुयी कई दुकानें छान लेंतीं जब तक कि वह सबके हिसाब से चीजें नहीं खरीद लेतीं। ''यहा सभी पुरुषों के लिये टाइयाँ नहीं मिल रही, ऐसा करते हैं थोड़े अधिक उम्र वाले पुरुषों के लिये चमड़े के पर्स ले लेते हैं... और कुछ के लिये बेल्ट्स ले लेते हैं वह नवयुवकों के काम आ जाएँगी, क्या तुम इन्हें पहन कर देखोंगे, हाँ, हाँ, ये उन पर अच्छे लगेंगे।

श्री महालक्ष्मी का आशीर्वाद ऐसा था कि जब वह खरीददारी करती, सामान 'सेल' पे आ जाता और इसलिये उपहार आधी ही कीमत में मिल जाते।

लेकिन मेरा ध्यान कहीं ओर था, चेक-इन काउन्टर बंद हो रहा था और बहुत सारे गिफ़्ट्स के बैग्स हो गये थे। श्री माताजी ने मेरी चिंता का पकड़ लिया और अपनी चमकती आँखों से प्रश्न किया, मुझे याद दिलाते हुये, ''कर्ता कौन है ?''

मैंने अपने अपने कान पकड़े, 'श्री माताजी आप ही कर्ता है, चेक इन करने वाली स्त्री ने बैग्स को कन्वीयर बेल्ट पर रखते हुये उनके वज़न को नजरअंदाज़ कर दिया; वह जल्दी में थी क्योंकि उड़ान का समय हो गया था, ''श्री माताजी, आपको धन्यवाद।''

हवाई जहाज़ में बैठने के बाद मैंने उनकी सेहत के लिये चिंता व्यक्त की, ''श्री माताजी कृपया प्रोग्राम के बाद आराम करियेगा। आपकी आज्ञा से हम सामूहिकता में उपहार भी बाँट देंगे।'' उनकी आँखों ने वह बयान किया जो उनके दिल में था, ''हाँ लेकिन जब तुम दूसरों को प्रेम करोगे तब ही जानोगे कि उन्हें क्या पसंद है।''

अपनी आँखों में प्रेम की चमक भर के वह बोली, ''तुम जानते हो ना जब मैं अपने बच्चों के लिये कुछ खरीदती हूँ, हमेशा सही (उनकी पसंद के अनुसार ही ख़रीदती हूँ।''

मैंने स्पष्ट किया, ''इसमें कोई शक नहीं कि जब श्री माताजी बाज़ार के लिये जाती हैं, उन्हें हमेशा अच्छा सामान अच्छी रेट पर मिलता है; या वहाँ सेल लगी होती या दुकान में सामान की छँटाई पर रेट्सम कम मिलते हैं या सरलतापूर्वक उनका आशीर्वाद कार्य करता है।''

मैंने प्रार्थना की, ''श्री माताजी कृपा कर अपने बच्चों को भी खरीददारी का आशीर्वाद दीजिये।''

उन्होंने सच्चाई बताई, ''तुम्हें मुझसे जुड़ना होगा। श्रीकृष्ण ने कहा था योग-क्षेम वहाम्यम्ः जब तुम मुझसे योग प्राप्त हो तब तुम्हारे सभी कार्यों की

जिम्मेदारी मेरी होती है, तुम्हें पहले योग हासिल करना होगा, तब ईश्वर तुम्हारी देखभाल (क्षेम) करेगा। तुम्हें इसके लिये माँगना नहीं पड़ेगा, यह निरन्तर है। उदाहरण स्वरूप जब एक बच्चा जन्म लेता है, तब माँ के भीतर प्राकृतिक रूप से दूध पैदा होने लगता है।''

मेरे लिये यह आश्चर्य था कि 'योग क्षेम वहाम्यम्' ने अपना कार्य जल्दी ही शुरू कर दिया।

मॉस्को के प्रोग्राम के बाद श्री माताजी कबैला के लिये ऊनी गलीचे लेने चाह रही थी। मैंने विनती की, ''श्री माताजी हमें आज्ञा दीजिये कि हम गलीचे ढूँढ़ कर आयें।''

उन्होंने हामी भरी। उनके तरीकों से प्रेरणा लेते हुये हम सीधे ही उसके स्त्रोत पर पहुँचे। कार्पेट फ़ैक्ट्री मॉस्को के बाहरी स्थान पर थी और वे थोड़े नुस्खे वाले (defective) गलीचों को 10 डॉलर कम कर के निकालना चाह रहे थे (ये कार्पेट कबैला स्टेज पर दस वर्षों से ज्याद बिछे रहे।)

बाद के वर्षों में कबैला में शादियाँ भी होने लगीं। श्री माताजी ने मुझे फोन करके शादी सामग्रियाँ भारत से लाने के लिये कहा। हम सिर्फ़ चार ही योगी थे और सामान बहुत अधिक था। हमें एयरपोर्ट पर दो ओर योगी मिले जिन्हें इसी उड़ान से हमारे गन्तव्य पर ही जाना था, उनके हाथ में सिर्फ बैग ही थे। यह भी समस्या सुलझ गई।

इसके बाद जब कभी श्री मताजी हमें सामूहिकता के लिये कुछ लाने को भेजती, हमें तुरन्त जैकपॉट मिल जाता। जब हम कभी सामूहिकता के लिये कार्य करने को तत्पर होते, वह बहुत प्रसन्न हो जातीं, और इस तरह हम योग-क्षेम से जुड़ जाते। वह बहुत प्रसन्न होतीं जब हम दूसरों को प्यार करते;

जब मैं तुम सब को प्रेम करते देखती हूँ,
जब मैं तुम सब को एक दूसरे की तारीफ करते देखती हूँ,
जब मैं तुम सब को एक दूसरे की मदद करते देखती हूँ,
जब मैं तुम सब को एक दूसरे की इज्ज़त करते देखती हूँ,
जब मैं तुम सब को ठहाके लगाकर हँसता हुआ देखती हूँ,
जब मैं तुम सब को एक साथ आनंदित होते देखती हूँ,
मैं अपना पहला आशीर्वाद पहला आनंद पाती हूँ।''

एक बात मैं अच्छी तरह से जान गया हूँ, यह श्री माताजी के साथ हमारा संबंध है जो हमें एक दूसरे से बाँध कर रखता है और कुछ भी नहीं। इस संबंध की चाबी यह थी कि देवी माँ को हमें प्रसन्न करना होता था।

''यह नहीं है कि मैं किसी वस्तु से प्रसन्न होती हूँ, लेकिन उसके सत्त्व से होती है। मैं अपनी माँ से प्रेम करती हूँ, यह सत्त्व है। सब के प्रेम करने के तरीके भिन्न है, लेकिन तत्त्व की बात यह है कि सभी मुझसे प्रेम करते हैं। मेरा प्रेम शान्त है लेकिन जब मैं किसी से मिलती हूँ, यह निकल कर ऊपर आता है।''89

और वह तब बहुत प्रसन्न होती है जब हम एक दूसरे को प्यार करते हैं, दूसरों के लिये कोई कार्य करते हैं, दूसरों की भलाई के लिये कुछ करते हैं।

''जब कभी तुम्हारा चित्त जाता है, यह सामूहिकता में कार्य करता है। जहाँ कहीं भी तुम्हारा चित्त जाता है, कार्यान्वित होता है।''

ब्रह्माण्ड में एक घटना होती है जिसमें वाइब्रेशन्स उत्पन्न होते हैं जो कि वाइब्रेशन्स अन्तरिक्ष से घूमते हुए धरती के किसी हिस्से में समान तरंगों के वाइब्रेशन्स पैदा करते हैं (रेजोनेन्स के द्वारा) उदाहरण के तौर पर, जीवन की योग्यता चन्द्रमा की स्थिति या अदृश्य आयनों के साथ स्पन्दन पैदा करती है। तब उन स्पन्दनों को क्या कहेंगे जो कि आदिशक्ति व उनकी कोशिकाओं

के रेज़ोनेन्स से, आदिब्रह्माण्डीय शक्ति का ब्रह्माण्डों से, आदि चक्रों के सूक्ष्म चक्रों से विराट के मस्तिष्क का इन्सानी दिमाग के रेजोनेन्स से और ब्रह्माण्डीय चेतना का उनके ग्रहण करने वालों (समस्त जीवों से) से उत्पन्न होते हैं?

''ब्रह्माण्डीय या ईश्वरीय चेतना अपनी रचना के माध्यम से और उसके प्रदर्शन के माध्यम से प्रेम करती है। यह प्रेम की शक्ति किसी भी ग्रह के गुरुत्व से अधिक शक्तिशाली है। यहाँ किसी भी तारे, सूर्य, ग्रहों या पृथ्वी के गुरुत्व से भी प्रभावित नहीं हो सकती।''

हाँ, लेकिन निश्चित रूप से श्री आदिशक्ति का अपने बच्चों के प्रेम का गुरुत्व किसी भी ग्रह के गुरुत्व से बहुत अधिक शक्तिशाली है। जब वह प्रसन्न होती है वह हज़ारों आशीर्वादों की झड़ी लगा देती हैं और वे लोग जो उनसे योग की स्थिति में होते हैं, उनके आशीर्वादों को पाकर आनंद विभोर हो जाते हैं। यहाँ तक कि असंभव कार्य भी चमत्कार की तरह हो जाते हैं।

नहीं,.....नहीं चमत्कार कुछ भी नहीं, यह तो वास्तव में उनकी कृपा है। और यह कृपा कोई और नहीं करता बल्कि श्री आदिशक्ति जो कि योग-क्षेमदायिनी है, उनसे हमें मिलती हैं।

श्री योग क्षेमदायिनी हमारी आत्मा को हरा-भरा बना देती हैं और अध्यात्म के अंकुरों को अपने भीतर में रोपने की शक्ति देती है, बिल्कुल उसी तरह जैसे चावल के नन्हें पौधों को खेत में रोपा जाता है प्रेम से, आशा और आनंद से। उनका क्षेम हमें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक संसाधनों से युक्त, आध्यात्मिक व सामाजिक रूप से, हर तरह से संपन्न बनाता है, हमें कोई भी इच्छा करने की या माँगने की आवश्यकता नहीं होती। नाड़ी ग्रंथ के अनुसार आत्म-साक्षात्कारी लोगों को खाने-पीने, कपड़े व रहने के स्थान की चिंता नहीं करनी पड़ती। बीमारियाँ व मानसिक अस्वस्थता पूरी

तरह से समाप्त हो जाएँगी और ऐसे लोगों की अस्पताल जैसी संस्थाओं की आवश्यकता नहीं होगी और उनमें सूक्ष्मरूपी हो जाने की शक्ति होगी और दूसरी शक्तियाँ...

यह आत्मा नहीं बल्कि सहस्त्रार है जिसे बढ़ना है। जितना सहस्त्रार संवेदनशील होगा, उतनी ही अधिक शांति एवं आनंद पाएगा।

दिमाग़ हमारे केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र का, हमारी चेतना का मास्टर (मुख्य अंग) है। आत्म साक्षात्कार के पश्चात् तुम जो इच्छा करते हो, वह परम की इच्छा हो जाती है।

जो भी तुम करते हो ईश्वरीय कार्य का हिस्सा बन जाता है।

***

अध्याय - 56

क्यों परेशान हो ?

एक पब्लिक प्रोग्राम में एक स्त्री ने माताजी से प्रश्न किया कि हम क्यों कष्ट उठाते हैं ? श्री माताजी ने बताया कि ईसामसीह ने हमारे लिये कष्ट उठा लिये, अब हमें कष्ट पाने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन वह स्त्री यह नहीं सुनना चाह रही थी और बहस किये जा रही थी, करीब 15 मिनिट हो गये। श्री माताजी बड़े ही धैर्य से बार-बार उसे समझा रही थीं, लेकिन वह सुनने को तैयार नहीं थी।

मेरा धीरज ख़त्म हो रहा था, मुझे गुस्सा आ रहा था और सोच रहा था कि उस स्त्री को श्री माताजी का अमूल्य समय ख़राब करने से कैसे रोका जाये? लेकिन श्री माताजी के प्रेम भरे व्यवहार में कोई अंतर नहीं आया था, वह हमेशा की तरह से मुस्कुराती हुयी धैर्यवान एवं विनम्र थीं और बीस मिनिट तक उससे बात करते हुये, बड़े प्रेम से निष्कर्ष निकाला, ''अगर तुम चाहती हो तो एक वर्ष तक और कष्ट पा सकती हो और फिर अगले वर्ष आ सकती हो।''

श्री माताजी के इतना समय उसे समझाने के बावजूद भी वह स्त्री बिना आत्मसाक्षात्कार किये वहाँ से चली गयी। श्री माताजी की उपस्थिति में, मैं अपनी प्रतिक्रियाओं को बहुत आसानी से देख लेता था। अपने आत्म धीरज के लिये मुझे भीतर से अलार्म मिलता था। महा शक्ति का धैर्य का महा स्त्रोत मेरे सन्मुख था, लेकिन मेरे दिमाग में धैर्य बिल्कुल नहीं था। हाँलाकि मैं श्री माताजी को अपने जीवन से अधिक प्रेम करता था, मुझमें अभी भी धैर्य की इस छोटी सी शक्ति की भी कमी थी। मेरे अंदर कई तरह के विचार चले, ''ओह ! वह तो आदि शक्ति हैं, उनके गुणों की बराबरी मैं

कैसे कर सकता हूँ।'' मानसिक रूप से मैं यह सब जानता था, लेकिन यह मेरी चेतना में, मेरे केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र में रजिस्टर नहीं हो पाया था।

यह जागृति की पुकार थी। विवेक जो कि हमारे भीतर उत्पन्न ही नहीं हुआ था, हमारी मदद नहीं कर सकता था। मैंने निर्णय लिया कि अब से मैं स्वयं को नियंत्रित करने के लिये चाबुक का प्रयोग नहीं करूँगा, लेकिन एक निरीक्षक की तरह अपने भीतर के अनुशासन को देखूँगा कि मैं ऐसा क्या करूँ कि उनके धीरज की अप्रतिम शक्ति के नज़दीक जा सकूँ और उन सब बातों को छोड दूँ जो मुझे उनसे दूर ले जाते हैं।

मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरा चित्त कितना उलझा हुआ है कि ये मुझे श्री माँ की ओर जाने ही नहीं देता और मैं उनका अनुसरण (वास्तव में) नहीं कर पाता। पिछली रात सामूहिकता ने एक नाटक पेश किया जिसमें देवी माँ दुर्गा किस तरह रक्तबीज राक्षस को समाप्त करती है। हर बार जब वह उसे ख़त्म करती है; हज़ारों और रक्तबीज उसकी रक्त की बूँदों से जनम ले लेते थे जो कि धरती पर गिर रही थीं। उसकी सिद्धि को जानकर देवी माँ ने भयावह काली का रूप धारण किया और उसके शरीर का सारा रक्त पी गयी और उसे समाप्त कर दिया।

मैंने पाया; कि ये बूँदे बिल्कुल मेरे डर व चिन्ताओं के भार की तरह है। जब तक मैं अपनी कमज़ोरियों पर काबू नहीं पा लेता, ये रक्त बीज की बूँदों की तरह बढ़ती चली जाएँगी।

मैंने इस विषय पर श्री माताजी की सलाह ली कि ध्यान से कैसे इस पर काबू पाया जा सकता है।

वह मुस्कुराई ''तुम कहते हो कि तुम ध्यान कर रहे हो; इसका मतलब है परमात्मा के साथ संलग्न होकर तुम बदलते जा रहे हो। लेकिन तुम कुछ भी नहीं कर रहे हो। तुम सिर्फ़ अपना भार कम करते जा रहे हो, उन चीज़ों

से विमुक्त हो रहे हो जो तुम्हें ईश्वर की ओर बढ़ने से रोकती है। मेडिटेशन जैसी कोई कोई चीज़ हो ही नहीं सकती। तुम मेरी तरह विस्तृत होते जाते हो। इसका मतलब है जो विकार तुम्हें भ्रमित करते हैं वे सब तुमसे अलग होते जाते हैं। इन सबके लिये तुम्हें प्रार्थना करनी होगी और माँगना होगा। मैं सांसारिक वस्तुएँ उन मूर्ख लोगों को देती हूँ जो यह माँगते हैं, लेकिन विवेकशील मनुष्यों को मैं परम प्रदान करती हूँ। अपने विवेक में खड़े रहो और आध्यात्मिक जीवन माँगो।''

उसके बाद ध्यान के दौरान मैं उनसे धैर्य माँगने लगा। मैं अपनी बुद्धि को विनम्रतापूर्वक हृदय को समर्पित करने लगा। इससे मैं उनके प्रेम में विलय होने लगा। धीरे-धीरे, मैं उन्हें अपने भीतर प्रेम के भरे कुण्ड की तरह महसूस करने लगा। उनकी अनुकम्पा से जो प्रेम की धारा मेरे भीतर बह रही थी, उससे मैं भी बहने लगा, अपने तमाम बोझों को एक तरफ रख कर। उनके प्रेम का बहाव मुझे आनंद से भर देता। यही नहीं, यह सुगंधित एवं धैर्य से परिपूर्ण था। मैं समझ गया कि धैर्य की शक्ति पाने का एक ही तरीका है वह है प्रेम। उनसे धैर्य की प्रार्थना करने से, मैं स्वतंत्र हो गया, उनके धीरज ने मुझे आज़ाद कर दिया।

दर दर भिक्षा माँगने वाले
नदी की तरह उदार मन के
शिरडी के साँई ने क्या कहा था ?
''धैर्यहीनता हमें मालिक से दूर करती है,
और अधैर्य होकर हम वापिस उस तक नहीं जा पाते
लेकिन एक रास्ता आगे है।
अगर तुम श्रद्धा एवं सबूरी (धैर्य) रखो।''

***

अध्याय - 57

शत्रु को पहचानना

सहजयोग में आने से पहले मैं गीता का कट्टर उपासक था। इसकी गलत व्याख्या के अनुसार मैंने आज्ञा चक्र पर ध्यान केन्द्रित करना शुरू कर दिया। बाद में, सहजयोग से मैंने जाना कि ये गलत व्याख्या है और हमें अगन्या चक्र पर ध्यान केन्द्रित नहीं करना चाहिये। सत्य यह है कि गीता एनलाइटन्ड लिखते समय श्री माताजी ने मुझसे कहा कि यह बात मैं ज़रुर इस पुस्तक में लिखूँ।

मुझे चिंता हुयी कि शायद मेरा आज्ञा चक्र को काफ़ी नुकसान होगा।

उन्होंने कहा, ''अपने चक्रों की तुम्हें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। चिन्ता करना या परेशान होना सहजयोग के विरुद्ध है। तुलसीदास जी ने कहा है, ''जैसा आप मुझे रखना चाहें, मैं वैसे ही रहूँगा।''

मैंने अपनी दाँयी नाड़ी को सहजयोग के तरीकों से ठीक करने की ठानी एवं अपने कार्य में लग गया।

एक दिन श्री माताजी कुछ सहजयोगियों के लिये जो कि पब्लिक प्रोग्राम में बहुत मेहनत करते थे, उपहार लेकर आयीं। मुझे लगा कि गीता के उपदेशों के अनुसार फल की चिंता किये बिना कर्म करना चाहिये, अतः उपहार नहीं लेना चाहिये।

श्री माताजी इससे अप्रसन्न हुयीं, '' मैं तुम्हें ख़ुश नहीं कर सकती क्योंकि तुम्हारा अहंकार तुम्हें मेरा प्यार स्वीकार करने की अनुमति नहीं देता।'' मैंने उन्हें गीता में लिखे उपदेश के बारे में बताया।

उन्होंने समझाया, '' मैं तुम्हें तुम्हारे काम के लिये इनाम नहीं दे रही, ये मेरा प्रेम है। मेरा प्रेम तुम्हें हर चीज़ में आनंद देने की कोशिश करता है और

तुम्हें हर चीज़ देता है। लेकिन मैं तुमसे एक ही चीज़ चाहती हूँ कि मेरे बच्चे स्वयं को जाने। अपनी आत्मा को अपनी शक्ति में स्थापित करे जो कि तुम्हारे ही भीतर है और यही तुम माँगों।''

मैंने उनके चरणों में प्रणाम कर उनसे यही माँगा। लेकिन मैंने ध्यान दिया जब कभी मैं संघीय मामलों में संलग्न होता मेरी आज्ञा फिर से अपनी बाधा का संकेत देती।

श्री माताजी ने समझाया, ''तुम्हें हर समय अपनी मन की स्थिति को देखना होगा। तुम्हें अपना पूरा ध्यान अपनी कमज़ोरियो पर लगाना होगा ना कि अपनी प्राप्तियों पर। अगर हमें पता चल जाय कि हमारी कमज़ोरी क्या है? ये बहुत ही अच्छी बात है और फिर हम उससे पार पा सकते हैं। कल्पना करो कि एक जहाज़ है, और उसमें छेद है, और पानी उसी छेद से अंदर प्रवेश कर रहा है; जहाज़ के सभी कर्मचारियों और कप्तान का चित्त उसी छेद पर है जहाँ से पानी आ रहा है और किसी और जगह नहीं। इसी तरह तुम भी स्वयं पर निगरानी रख सकते हो।''

मेरे जहाज़ में छेद मेरी भविष्य की योजनाओं और सोच-विचार की वजह से था। अतः मैंने इस छेद को ठीक करने की सोची और स्वयं का निरीक्षण करने लगा। मुझे पूरब की एक कहावत याद आई;

''कहा जाता है कि अगर तुम अपने दुश्मनों को जानते हो और स्वयं को भी जानते हो, तुम सैकड़ों युद्ध करके भी कमज़ोर नहीं होओगे।

अगर तुम अपने दुश्मनों को नहीं जानते लेकिन स्वयं को जानते हो, तुम एक जीतोगे और एक हार जाओगे।

अगर तुम ना तो स्वयं को जानते हो ना ही अपने दुश्मनों को, तब तुम हर युद्ध हार जाओगे।''

श्री माताजी की असीम कृपा से मैंने स्वयं को जाना, और दुश्मनों को भी पहचानने लगा और सबसे बड़ी बात है उनसे मुकाबला करना। इसलिये

मैंने पिछली सीट ली, अपने चक्रों पर कार्य किया और संघीय मामलों से स्वयं को दूर रखा।

अस्सी के दशक की शुरूआत में श्री माताजी ने मुझे लाइफ़ इटरनल ट्रस्ट का ट्रस्टी बनाया मेरा अहंकार जागृत न हो जाए, मैं स्वयं को बहस, मीटिंग्स और संघीय (Organizational) मामलों में अलग रखने लगा। श्री माताजी ने मेरी अनुपस्थिति को महसूस किया और बोलीं, ''अपने अहंकार को भूल जाओ। भूल जाओ कि तुम कुछ कर रहे हो।''

जब तुम अपने भीतर होते हो, तुम निर्विचार स्थिति में होते हो, तब तुम सिर्फ़ वहाँ ही नहीं होते बल्कि सब तरफ़ होते हो- क्योंकि यही वह जगह है,

यही वह बिन्दू है जहाँ तुम सब जगह होते हो।
यहीं से तुम उस असीम के साथ जुड़े होते हो
शक्ति के साथ
उस ऊर्जा के साथ जो कि सभी पदार्थों में विद्यमान है।
हर उस सोच में है जो कि भावना है।
संसार के सभी विचारों एवं योजनाओं में है
तुम हर उस तत्त्व के भीतर हो जिससे कि यह सुन्दर पृथ्वी बनी है।
तुम नभ में भी हो
तुम प्रकाश में भी हो
तुम ध्वनि में भी हो।''

उनका प्रत्येक शब्द एक मंत्र था और मैं स्वयं की भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस करने लगा। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि मेरे किये हुये कार्य का फल किसी ओर के नाम हो, अन्ततः प्रत्येक कार्य तो श्री आदिशक्ति का है जो कि सभी जीवित कार्य करती हैं। इस सच्चाई ने मुझे साक्षी बना दिया।

***

अध्याय - 58

ईश्वरीय प्रेम की कला को कौन जानता है ?

सन् 1992 में साधकों का रैला हमारी प्रेममयी माँ के प्रेम सागर में बह कर आया। नन्हें-मुन्ने साधकों की पूजा से पहले मंच सांस्कृतिक प्रोग्राम के लिये बुलाया गया। एक प्रोग्राम के दौरान नयी-नयी रूमानिया कलेक्टिविटी ने हमारी माँ को प्रसन्न करने के लिये एक अपरिपक्व प्रोग्राम दिया। उनके प्रदर्शन की दिशा बाँई तरफ़ मुड़ी, तब हम सबको नींद आने लगी। वहाँ कोई गर्म जोशी नहीं थी, ठण्डापन था, सबको देर भी हो रही थी, इसलिये हममें से कुछ बीच में ही उठकर ले गये।

हमारा उठके चले जाना, श्री माताजी के चित्त से छुपा नहीं रह सका। वह खुश नहीं थी, ''अगर कोई प्रोग्राम स्तर से नीचे भी हो, तब भी किसी को उठकर नहीं जाना चाहिये। तुमने इस मनोरंजन के लिये टिकिट नहीं खरीदे थे, बल्कि मुझे सहारा देने आये थे; उन्हें कौन ठीक करेगा ? उनकी देखभाल कौन करेगा? ईश्वरीय प्रेम की कला कौन जानता है ? उनके प्रोग्राम के दौरान मेरा चित्त उनकी सामूहिक समस्याओं पर था। तुम्हें मेरा साथ देना चाहिये था, नये लोगों को समस्याओं से निकालने में मदद करनी चाहिये थी, उत्साहित करना चाहिये था।''

उनकी बातों से हमें कलेक्टिविटी (सामूहिकता) को समझने की गहराई आई, हमें श्री माताजी के साथ रहना था, एक दूसरे के साथ खड़े होना था और सामूहिक कुण्डलिनी को उठाकर समस्या को समाप्त करना चाहिये था। जैसे ही सामूहिक कुण्डलिनी उठी, विजया श्री आदिशक्ति ने अपना आशीर्वाद दिया व हम सब आनंद से सरोबार हो गये।

एक वर्ष के पश्चात् एक कव्वाली के संध्या प्रोग्राम में मैं आनंद विभोर हो गया। मैं स्टेज के पीछे कलाकारों को धन्यवाद करने गया। मुझे वे कुछ जाने-पहचाने से लगे। मैं उनके सूफ़ी परिधानों व काली टोपियों के पीछे कुछ ढूँढने लगा; क्या मेरी आँखें मुझसे ही खेल खेल रही है। नहीं, ये वो रूमानिया के कलाकार नहीं हो सकते जिनका प्रोग्राम हम बीच में ही छोड़कर चले गये थे। वे मेरी कल्पना से परे बिल्कुल बदल गये थे।

वह सब समझती है
वह सब जानती है
वह सब कुछ व्यवस्थित करती है
वह सारी खूबसूरती जो कि हममें छिपी हुयी है,
बाहर निकाल लाती है
हे इंसान ! स्वयं को जगाओ
उस ज्ञान के महोत्सव के लिये !
ईश्वरी शक्ति तुम्हारी अच्छाईयों से जो कि
छिपी हुयी है, तुम्हें सजाने के लिये आतुर है।
(जन्म दिन पूजा 1977, मुम्बई)

श्री माताजी ने नये साधकों को संध्यकालीन प्रोग्राम हिस्सा लेने के लिये निमंत्रण दिया, बिना उनके गुणों (Talent) को परखे। जैसे, वे लोग जो ठीक से गा नहीं पाते उन्हें कोरस में शामिल होने के लिये कहा या उन्हें तालियाँ बजाकर ताल बनाने को कहा। उनका दैवीय चित्त उन्हें ताक़त दे गया और उनके द्वारा उनकी सामूहिकता ताक़तवर हो गयी।

मुझे यह तथ्य पता चला कि हम लोग मूल रूप से सामूहिक है, और इसलिये हमारे चक्रों की बाधा भी सामूहिक है। उनका चित्त व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों स्तरों पर साथ-साथ काम करता है। जैसे ही वह सामूहिक

बाधाओं को हटाती है, हमारी व्यक्तिगत परेशानियाँ भी उसी समय दूर हो जाती हैं।

एक संगीत संध्या प्रोग्राम में उन्होंने कलाकारों पर चित्त रखकर, उनके देश की मूल समस्या को देखा और उसका समाधान उन्हें बनाया।

वह किसी भी देश के लोगों के सुन्दर चक्रों को देखतीं, तब प्रशंसा भी करती, लेनिन एक आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति थे, रूस के लोग बहुत सामूहिक है।''

''सहजयोग टर्की में अच्छे से स्थापित हो सका, इसका कारण है अतातुर्क कमाल पाशा की दूरदृष्टि, उनकी सोच।''

''जब मैं चीन गयी, उन लोगों ने बहुत जल्दी अपना आत्मसाक्षात्कार पा लिया क्योंकि संत लाओत्से और कंफ्यूशियस ने पहले ही ज़मीन तैयार कर दी थी?'' और रूमानिया के लोगों का क्या ?

''वे गंधर्व है।'' उन्होंने सिर हिलाते हुये कहा। सहजयोग की सुन्दरता यही ही है कि वह बड़ी बारीक़ी से कार्य करता है और तुम्हारे भीतर के सभी खूबसूरत गुणों को बाहर निकाल कर तुम्हें सौन्दर्यमंडित कर देता है।''

तुम ही यंत्र हो
तुम ही दवा हो
तुम ही इलाज हो
तुम ही डॉक्टर हो
तुम ही कम्प्यूटर हो
तुम सब कुछ हो
लेकिन तुम्हें आत्मस्वरूप होना होगा।

***

अध्याय - 59

निर्विचारिता ही तुम्हारा किला है !

सोवियत रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय ने जैसे ही सहजयोग के साथ एक करार किया, श्री माताजी को क्रेमलिन बुलाया गया जहाँ उन्होंने राजनीतिज्ञों को आत्म साक्षात्कार दिया। उन्होंने पूछा, ''शासन के दौरान हमें कई कठोर निर्णय भी लेने पड़ते हैं और अक्सर हमें यह ठोस रूप से पता नहीं होता है कि वे निर्णय ठीक भी है या नहीं। श्री माताजी, कृपया हमें बताइये कि हम क्या करें ?''

श्री माताजी मुस्कुराई, ''ये प्रश्न प्रशासन के दौरान कई बार सामने आता है। प्रश्न उठता है कि हमें क्या करना चाहिये ? यह सही है या नहीं?''

''लेकिन यह बहुत आसान है। इतना आसान है कि कोई भी फ़ैसला लेने से पहले निर्विचार अवस्था में चले जाओ। जो भी फैसला सामने आये उसे ही मंजूर करो वह कभी गलत नहीं होगा। लेकिन निर्विचार अवस्था में फ़ैसला जो तत्क्षण आये वही ठीक है। अगर तुम सोच विचार कर फैसला लोगे तब वह दिमागी जमा खर्च होगा, उस पर तुम्हारे अहंकार व प्रति अहंकार का असर रहेगा। लेकिन अगर तुम यह निर्विचारिता में करोगे तब यह गतिशील होगा, एकदम गतिशील। निर्विचारिता ही तुम्हारी सुरक्षा है (मजबूत किला है)

निर्विचारिता में रहने से तुम्हारे भीतर एक महान् परिवर्तन होगा- अन्तर्मन में अन्दरूनी बदलाव निर्विचारिता में ज्ञान प्राप्त करो और तुम सब कुछ जान लोगे।

यह तुम्हारा स्थान है

तुम्हारी दौलत

तुम्हारी शक्ति
यह तुम्हारी अवस्था है।
यह तुम्हारी सुन्दरता है।
यही तुम्हारा जीवन है।
निर्विचारिता !

(1975-0125)

सोवियत यूनियन में सहजयोग के प्रचार-प्रसार ने कई नये सेंट्र्स खोल दिये। श्री माताजी ने उन सेंट्र्स को संभालने के लिये कॉआर्डिनेर्टस नियुक्त किये। जब श्री माताजी ने सेंट पीटरबर्ग में लीडरशिप, एक सहजयोगी को दी, तब उसे आश्चर्य हुआ, ''लेकिन मैं एक बहुत ही साधारण व्यक्ति हूँ, मेरा चुनाव एक लीडर रूप में कैसे हो सकता है?'' श्री माताजी मुस्कुराई, ''साधारण में ही असाधारण छुपा होता है। वही खिलता है। और ये बड़े महान् व्यक्ति जो इस संसार में सम्मानित है, ये सब उत्क्राँति के दौरान बड़े जानवर (मेमॉथ) जिस तरह ग़ायब हो गये, ये भी ग़ायब हो जाएँगे।''

जैसे ही लीडर्स ने श्री माताजी के प्रोग्रामों के लिये जगह देखनी शुरू की, उन्हें लगा कि हॉल मिलना असंभव है। खुशकिस्मती से, हैल्थ मिनिस्ट्री से जान-पहचान हो जाने से रास्ते खुल गये। लेकिन वहाँ यह ज़रूरी था कि ऐसे प्रोग्रामों के टिकिट बिकने चाहिये। पहली बार ऐसा हुआ कि सहजयोग के प्रोग्राम के लिये टिकिट बेचे गये। हॉल खचाखच भर गया लेकिन अभी भी पाँच हज़ार लोग बाहर खड़े थे। करूणामयी माँ ने दो सामानान्तर प्रोग्राम किये, एक अन्दर हॉल में, एक बाहर खुले में। वह सीढ़ियों पर खड़ी हो गयी और उन पाँच हज़ार लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने लगी जो कि बहुत सर्दी में भी बाहर खुले में खड़े थे। वह साधकों की क्वालिटी से बहुत प्रसन्न हुयीं और मज़ाक में लीडर की तारीफ़ करते हुये बोलीं, ''इतने बुरे समय में तुम इतने अच्छे कैसे हो सकते हो।''

इसके पश्चात् अगले वर्ष जब श्री माताजी सेंटपीटर्सवर्ग लौटी, हॉल आधा खाली था। लीडर ने, बड़ी उम्र के सहजयोगियों की प्रोग्राम के चुनाव एवं जगह को लेकर जो सलाह थी, उसे नकार दिया था। श्री माताजी द्वारा की गयी प्रशंसा शायद उसकी खोपड़ी में गलत बैठ गयी थी; उसने सामूहिकता की राय लेना बंद कर दिया था व स्वयंभू हो गया था।

श्री माताजी ने समझाया, 'हाँलाकि एक लीडर में इतनी योग्यता होती है कि वह सभी निर्णय ले सकें, अपने बड़ों की सलाह उसके अहंकार को नियंत्रित करती है और उसे जिद्दी बनने से रोकती है।''

उन्होंने उसके माथे पर कुमकुम की बिंदी लगाई ''रूस समूचे विश्व का अगन्या चक्र है और इसलिये तुम अहंकार की माया में फंस गये। अगन्या रात्रि में कार्यान्वित होती है इसलिये सोते वक्त माथे पर कुमकुम की बिंदी लगानी चाहिये जिससे आज्ञा ठंडी रहे। तब बंधन लेना चाहिये। लेकिन कुण्डलिनी उठाते समय तुम्हारे अंदर इतना समर्पण हो कि तुम कुण्डलिनी या श्री माँ से प्रार्थना कर रहे हो, इस अवस्था के प्रति बहुत सम्मान होना चाहिये, बहुत विचार होना चाहिये। हर चीज़ में, तुम्हारे व्यवहार में, तुम्हारी बातों में तुम्हारे बातचीत के तरीकों में, तुम्हारे स्पर्श में, तुम्हारी हँसी में और तुम्हारे आँसूओं में।''

इसके बाद श्री माताजी ने राय दी कि हर एक सेंटर की गतिविधियों के लिये बड़े लोगों की कौंसिल बनानी चाहिये।

तुम्हें एक सम्पूर्ण बाँसुरी बनाना होगा, ईश्वर जिसे बजा सकें यह तुम पर है कि बाँसुरी को खोखला कैसे बनाओ, और अपने भीतर सम्पूर्ण होना होगा।

वह अपना कार्य जानते हैं। वह कलाकार है लेकिन तुम यंत्र हो।

कृष्ण पूजा, मुम्बई 73

अध्याय - 60

108 चाइना प्लेट

ईस्टर पूजा इस्तनाबूल टर्की में होनी थी, और हम श्री माताजी के संग खरीददारी के लिये इस्तनाबूल के मशहूर बाजार में थे। जैसे ही हम एक चाँदी की दुकान में पहुँचे, मेरी आँखे एक खूबसूरत मोमबत्ती स्टेण्ड पर ठहर गयी, जिसके निचले हिस्से को मेरमेड्स (Merm aids) सहारा दे रही थी। (मेरमेड्-एक आकृति जिसके धड़ का ऊपरी सिरा स्त्री का व निचला हिस्सा मछली का था।)

मैं श्री माताजी की अनुमति चाहता था कि उसे हम सामूहिक उपहार के रूप में उन्हें भेंट करें। उनकी आँखें नम हो गई, ''मैं बहुत ही खुश होऊँगी अगर तुम अपने मित्र के लिये कुछ तोहफ़ा लाते बजाय कि मेरे लिये लाते, सौ गुना ज्यादा प्रसन्नता होती। क्योंकि ये मेरे लिये बहुत अच्छा होता। यही मेरी ऊर्जा है, मेरा भोजन है। यह सोच कि मेरे बच्चे कितने अधिक उदार है।''

उनके ये शब्द मुझे याद रहे, और सालों बाद जब धर्मशाला में सहस्रार व नवरात्रि पूजा सेमीनार हुये। हमने उनकी सलाह के अनुसार हर योगी, जो वहाँ मौजूद था, उन्हें उपहार दिये। योगी बेहद प्रसन्न हुये, लेकिन हम उनसे भी अधिक प्रसन्न हुये क्योंकि हम उन कोमल हाथों को महसूस कर रहे थे जो कि अपने प्रत्येक बच्चे को आशीर्वाद दे रहे थे।

तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा अगर तुम उस आभार को महसूस करते हो जब कोई बहुत ही सुन्दरता से तुम्हारे लिये कुछ करता है। अगर तुम इसे याद रखोगे, तब उसे ओर बढ़ाते जाओगे। जितना तुम इसे बढ़ाओगे, किसी भी वक्त जब ये सब याद करोगे, एक खूबसूरत आनंद तुम्हारे भीतर उतरने लगेगा।

- श्री माताजी

कई वर्षों में निरन्तर योगियों की संख्या बढ़ने लगी और उपहार हमारे बजट से बाहर हो गये, मैं नुकसान की तरफ़ था, क्या करूँ ?

फिर भी, मुझ पर श्री माताजी की उपहार देने की इच्छा बलवती होती गयी। श्री माताजी की तस्वीर में अंकित प्लेट जिसके किनारे सुनहरे थे, देने की सोची लेकिन बात नहीं बनी।

सेमीनार से एक सप्ताह पहले मेरी भतीजी (सहजयोगी नहीं थी) मुझसे मिलने आई। रात्रिभोज पर मैंने उसे बताया कि मैं सुनहरी किनारे वाली चाइना प्लेट ढूँढ रहा हूँ लेकिन नहीं मिल पा रही ही।

उसने बताया, ''वे मेरे स्टोर में पिछले दस वर्षों से रखी है। मैं उन्हें चीन से लाई थी, मेरी प्रदर्शनी के लिये, लेकिन क्योंकि मैंने अब वह काम बंद कर दिया है, आप उन्हें ले सकते हैं।

''उसकी क़ीमत ?''

''ओह कुछ भी नहीं ! वे मेरे किसी काम की नहीं।''

खाने के बाद हम उसके छत के ऊपर वाले कमरे (Attic) में गये। थोड़ा समय उन्हें ढूँढने में लगा क्योंकि वे बहुत सारे थैलों के नीचे दबी हुयी थीं।

हमने आखिर उन्हें एक संदूक में ढूँढ निकाला लेकिन वह काफी नहीं थी। तब उसे याद आया कि एक संदूक में भी ओर होनी चाहिये। अपने युवा भतीजों की मदद से हम उन्हें हासिल करने में कामयाब हो गये। लेकिन अभी भी हमारी ज़रूरत से वे एक चौथाई कम थी।

वह थोड़ी देर ख़ामोश रही लेकिन फिर उसे याद आया कि कुछ उसने मेज़पोशों के साथ एक संदूक में रखी है। लेकिन संदूक नहीं मिला। उसने दूसरी (Attic) की ओर इशारा किया, ''वहाँ देखते हैं।'' आखिर वे मिल गयीं। प्लेटें हमारी ज़रूरत के बिल्कुल बराबर थी।

मैंने श्री माताजी को हज़ारों धन्यवाद कहे।

लेकिन मैं उस रात को सो नहीं सका। मैं सवालों के चक्रव्यूह में घिरा हुआ था। ईश्वर ये सब कार्य कैसे करते हैं ? हम हाथ फ़ैलाये उससे पहले ही वह सब कुछ ठीक कर देते हैं ? ऋतम्भरा प्रज्ञा किस तरह कार्य करती है ? तब मुझे अपने अवचेतन से एक हल्की सी बुदबुदाहट सुनाई दी, एक बहुत ही प्राचीन भाषा में, जिसे मैं जानता था, मैं भूल गया था।

धीरे-धीरे मैं चेतन व अवचेतन के बीच की रोशनी में प्रवेश करने लगा। (यह रोशनी ऐसी थी जैसे हम क्षितिज में डूबते सूर्य या उगते सूर्य के समय देखते हैं) जहाँ हम निद्रा व अनिद्रा के बीच होते हैं। मैंने अपनी कुण्डलिनी को सहस्रार पर महसूस किया जो कि मेरी दाँयी नाड़ी को शांत करने की कोशिश कर रही थी। अन्ततः में निर्विचारित में प्रवेश कर गया, और वही प्राचीन भाषा मुझे ओर भी साफ़ सुनाई देने लगी। वे श्री माताजी के वो शब्द थे जो उन्होंने मुझे पहली मुलाकात में कहे थे। मैंने उनसे तब कई सवाल किये थे, 'वाइब्रेशन्स कहाँ से आते हैं ? सहजयोग किस तरह कार्य करता है ? आदि ''उन्होंने बताया था, ''मैंने तुम्हारे सामने एक शानदार दावत रख दी है ? तुम खाना खाने की जगह पकाने की विधि क्यों जानना चाहते हो ? बस आनंद लो उसका।''

सवेरे मैंने अपनी बेटी प्रज्ञा को सारी बातें बताईं और वह बोली, ''अगर हम दूसरों के लिये जब कुछ करने की इच्छा करते हैं तब श्री माताजी बहुत प्रसन्न होती हैं।''

उसे एक कविता लिखने की प्रेरणा मिली :

वह रत्न ढूँढने के लिये धरती पर घूमी
उनके स्पर्श से कंकड़ रत्न में बदल गये
जो बेकार बन गये थे, भ्रान्ति में थे, ऊर्जाहीन थे
लेकिन हम सब उनकी कृपादृष्टि पाकर नये हो गये
उन्होंने हमारे अंतर में एक बल रख दिया जो हमें

बार-बार ऊर्जावान बनाने लगा।

उन्होंने हमें जो प्यार दिखाया ताकि कोई हृदय ना रोये

किसी ने हमें कभी इस तरह नहीं बताया था।

एक पैगम्बर आये, आकर चले गये

लेकिन माँ ने आख़िर हमें एक सूत्र में बाँध दिया

अपने संदेश में विवेक की रोशनी लेकर आयी

एक विश्व निर्मल धर्म

उन्होंने हमें पाठ पढ़ाया ताकि हम उत्थान की ओर बढ़े

और प्रेम स्थापित किया-घृणा का इलाज उनका नाम है

श्री माताजी निर्मला देवी

ईश्वर करे, उनके बच्चे उनके सुखदायी प्रभाव (विचार) को आगे बढ़ाये।

ऐसे दूसरे मौके पर श्री माताजी ने मुझे एक डिनर सेट दिया। मैंने कहा, ''श्री माताजी, आप पहले ही मुझे एक डिनर सेट दे चुकी हो।''

वह मुस्कुराई, ''तुम्हें एक ओर डिनरसेट की आवश्यकता होगी, बहुत सारे मेहमानों के लिये जो तुमसे मिलने आएँगे।''

उस समय मैं बहुत शर्मिन्दा हुआ जिसका अनुमान भी लगाना मुश्किल था।

अगले महीने वियतनाम की सामूहिकता भारत आ रही थी, और उन्होंने पूछा कि क्या वे मेरे घर में ठहर सकते हैं ?

दोनों डिनर सेट साथ में रखे गये और इतने लोगों के भोजन के लिये काफी थे।

(इनमें से एक अब धर्मशाला म्यूज़ियम में रखा हुआ है इस अवसर की यादगार के रूप में-

अध्याय - 61

रक्षाबंधन

श्री कृष्ण पूजा से पहले की संगीत संध्या का असर जादूई थी, श्री माताजी का व्यक्तित्व, हज़ार सूर्यों की रोशनी सा दमक रहा था। धीरे-धीरे उन्होंने हमसे हमारे ध्यान की स्थिति के बार में पूछना शुरू किया।

एक योगी ने कहा, ''ध्यान के दौरान मेरी कुण्डलिनी उठती है और मेरी निर्विचारिता कुछ समय के लिये रहती है लेकिन तभी मेरा चित्त इधर-उधर भटक जाता है, और मैं फिर से विचारों में उलझ जाता हूँ।

श्री माताजी ने बताया, ''पहली बार में कुण्डलिनी तुम्हारी समस्या को पकड़ लेती है। वह तुम्हारा विगत भूल जाती है और तुम्हें आत्म साक्षात्कार देती है। जब वह उठती है वह मस्तिष्क में जाती है और हृदय में नहीं जाती। अतः समाधि की स्थिति बन जाती है।

आत्मा की पीठ सिर के ऊपर है। कुण्डलिनी को आत्मा से मिलने के लिये उसकी पीठ पर जाना होता है। पीठ सिर पर है लेकिन आत्मा हृदय में है यह सच्चाई है। कुण्डलिनी के उत्थान की ख़बर आत्मा को हो जाती है तब आत्मा वाइब्रेशंस को प्रसारित करना शुरू करती है।

इसके बाद, इसे अपने मस्तिष्क में रखना आवश्यक है, लेकिन जैसे ही तुम सोचना शुरू कर देते हो, कुण्डलिनी नीचे चली जाती है।''

योगी ने कहा, ''लेकिन मेरा चित्त अक्सर बिखर जाता है।''

श्री माताजी ने समझाया, ''अगर आपकी कुण्डलिनी वहाँ नहीं है तो आपको सहजयोग की कोई भी फ़ीलिंग (महसूस करना) नहीं आ सकती। यह बहुत बड़ी समस्या है, यह तुम्हारे हालातों से, तुम्हारे वातावरण से,

तुम्हारे सोच-विचार के तरीकों से आती है। तुम्हारा लिवर ठीक कैसे रहेगा, अगर तुम्हारा चित्त भटकता है, इधर-इधर घूमता है?''

दूसरे योगी ने शिकायत की, ''मेरा चित्त अक्सर औरतों को (Opposite sex) देखकर भटक जाता है।''

श्री माताजी ने कहा, ''इस तरह का आकर्षण कुण्डलिनी को नीचे खींच लेता है। आपको वह नहीं देखना चाहिये। जो आपका दिमाग हर वक्त आपको दिखाना चाहता है। हो सकता है कोई भूत बाधा (possession) आदि हो।

उन्होंने कहा, ''आपने भावनात्मक जीवन में आपमें शुद्ध समझ होनी चाहिये, बहन के प्रेम की पावनता, भाई के प्रेम की पावनता। जितना शीघ्र तुम यह समझ जाओगे कि ये सभी तुम्हारे भाई-बहिन है तुम्हारी अबोधिता जागृत होनी शुरू हो जाएगी॥''

उन्होंने राय दी कि श्रीकृष्ण पूजा के बाद हमें राखी का कार्यक्रम रखना चाहिये।

प्रातःकाल कृष्ण पूजा के दौरान हमने उनसे राखी भेंट करने की अनुमति माँगी।

वह प्रसन्न हुयी, ''मेरे बाँये हाथ पर बाँध दो।''

देवी ने हज़ारों वरदानों की वर्षा की। उन्होंने हमें बाँयी विशुद्धि की रक्षा के लिये एक बहुत ही शक्तिशाली मंत्र दिया, ''त्वमेव साक्षात् श्री द्रौपदी रक्षा कर्ता साक्षात्।''

जैसे ही हमारा चित्त हमारी आत्मा की पवित्रता को अवशोषित करता है। अचानक अबोधिता की सुन्दर सी अनुभूति हमें घेर लेती है।

श्री माताजी मुस्कुराई, '' यह पवित्र अनुभूति तुम तक तुम्हारे ही भीतर से आई है बाहर से नहीं। यह तुलनात्मक नहीं है। यह तुम्हारे ही अवचेतन (unconscious) से आई है।''

1980 में कृष्ण पूजा लंदन में मनाई गई। हमने अत्यन्त विनीत प्रार्थना तीन चाँदी की राखियाँ भारत से भेजी।

सर सी.पी. ने पूछा, ''वे तुम्हें क्यों राखी भेज रहे हैं ?'' उन्होंने ऊँची आवाज़ में हमारी प्रार्थना पढ़ी।

श्री कृष्ण पूजा के अवसर पर आप हमारी विनम्र विनती को, नमस्कार को स्वीकार करें।

सभी सहजयोगी बहनों की ओर से सभी सहजयोगी भाइयों को बाँधी जाने वाली राखियाँ जो कि आप ही की कलाई में है, स्वीकार करें, श्री माताजी !''

प्रार्थना है कि उन सभी को आप अपने प्रेम बंधन में सदा रखें।

''परमात्मा अपने बच्चों की अबोधिता से प्रसन्न होते हैं, ना उनकी चतुराई से।''

-हिन्दी पत्र 1978

अध्याय - 62

तुम तत्त्वों में व्याप्त हो जाते हो।

Geeta Enlightened लिखने के दौरान क्षी माताजी ने श्री कृष्ण की बतायी हुयी उच्च आध्यात्मिक स्थिति के बारे में जानकारी दी।'' यह चौथा आयाम है। जब तुम परम चैतन्य से जुड़ जाते हो, चौथे आयाम में प्रवेश कर जाते हो। इसके बाद, परम चैतन्य आपकी देखभाल करता है; यह आपकी रक्षा करता है, ये सभी कुछ प्रबंध करता है और शीघ्रता से आपकी जरुरतों को पूरा करता है।''

उन्होंने प्रेम से हमें देखा और मुस्कुराई, ''लेकिन श्री कृष्ण ने एक शर्त रख दी थी; समर्पण पूर्ण होना चाहिये-अनन्य भक्ति।''

मैंने पूछा, 'अनन्य भक्ति क्या ?''

उन्होंने समझाया, ''अनन्त भक्ति को वर्णन करके नहीं समझाया जा सकता। भक्ति का रास्ता उस पर चल के ही जाना जा सकता है।''

जब गोर्बाचेव सोवियत यूनियन के प्रेसिडेंट थे, उन्होंने प्राचीन राजतंत्र लोहे की दीवार को तोड़ा था, और प्रजातंत्र का रास्ता खोल दिया था। लेकिन पुराने गार्ड उसके विरोध में थे। 19 अगस्त 1991 में रूस में एक क्रान्ति हुयी थी, और गोर्बाचेन को घर में नज़रबंद कर दिया गया था। मॉस्को डर के मारे काँप रहा था, और रूसी सहजयोगी भी श्री माताजी से लगातार प्रार्थना में थे। और लीजिये, उसी सुबह श्री माताजी वहाँ पहुँच गयी।

वहाँ आपातकाल की स्थिति थी; यातायात व सड़कें बंद थी। फिर भी, प्रत्येक सहजयोगी अपने रक्षक का स्वागत करने को एयरपोर्ट पहुँच गया। जबकि, मॉस्को डर से काँप रहा था, उनके बच्चे अपनी माँ के प्रेम की आभा में स्वयं को सुरक्षित महसूस कर रहे थे।

उन्होंने जानकारी ली, ''क्या तुम सब परेशान नहीं हुये ?'' बच्चों ने जवाब दिया, ''परेशान होने की क्या ज़रुरत है, हम तो परमात्मा के साम्राज्य में है। हम इस देश के बन्दे नहीं है।''

उनके विश्वास को देख श्री माताजी की आँखें भर आईं, ''तुम्हारा विश्वास ही रूस को बचाएगा। मैं हर कदम तुम लोगों के साथ हूँ। हर उस जगह, जहाँ तुम सब हो। मैं तुम सबके साथ हूँ, पूर्ण रूप से, अपनी आत्मा की गहराई से, अपने वचन के साथ पूर्ण रूप से। यह मेरा तुम से वादा है। एक क्षण के लिये मैं आपे दूर नहीं।''

''जब भी तुम कहीं भी आँखें बंद कर मुझे याद करोगे उसी क्षण मैं पहुँचुँगी अपनी सम्पूर्ण शक्तियों के साथ; शंख, चक्र, गदा, पद्म, गरूड़ लाई सिधारी।'' (बिल्कुल वैसे ही जैसे श्री कृष्ण द्वारका से अपरना रथ चलाते हुये आये थे अपने सभी दैवीय हथियारों के साथ, जब उन्हें द्रौपदी ने पुकारा था।'' एक क्षण के लिये भी मैं देर नहीं करूँगी, लेकिन तुम्हें मेरा होना होगा। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। मैं तुम्हारे सम्मुख होऊँगी।''

मॉस्को उस रात सोया नहीं। न ही श्री माताजी सोयी एक महायुद्ध हुआ, और देवी माँ सभी नकारात्मक शक्तियों से लड़ीं, जो कि रूस पर आक्रमण कर रही थी। दोपहर के काफ़ी देर बाद विजेता की तरह जगी और बोली, ''गोर्बाचेव बचा लिये गये।''

कर्फ़्यू की वजह से सभी पब्लिक समारोह स्थगित कर दिये गये। एक बार फिर परम चैतन्य ने चौथे आयाम में कार्य किया- उस शाम को सहजयोग का प्रोग्राम ही सम्पन्न हुआ, उसी को आज्ञा मिली (सरकार की ओर से)। कर्फ़्यू के बावजूद 4000 साधक उमड़ पड़े, श्री माँ के प्रेम की शक्ति ने उनके दिलों को शक्ति प्रदान की और उनका डर दूर किया।

रूस के योगियों ने प्रार्थना की, ''श्री माँ इस देश के चुनावों में अच्छे व्यक्ति ही चुने जाएँ।''

श्री माताजी ने कहा, ''जह तक वाइब्रेशंस का सवाल, उन्हें उस हद तक जाने दो कि वे आपसी समझ का वातावरण निर्मित कर सके, लेकिन वाइब्रेशन्स को स्वच्छ बनाने का काम तुम्हारा है। अगर किसी देश के नागरिक नकारात्मक है तो उन्हें वैसे ही नकारात्मक शासक मिलेंगे।''

उनकी राय को आत्मसात कर, उन्होंने एक क़दम आगे बढ़ाया, और श्री माताजी ने उन्हें सौ कदम आगे बढ़ा दिया। कुछ ही मिनिटों में उन्होंने उनके बेजान मन को अवसाद से निकाल आनंद में मगन कर दिया। वे बड़े बुझे मन से प्रोग्राम में आये थे लेकिन जब गये तब उनकी आँखें चमक रही थी और मुस्कुराहट से उनके चेहरों पर रौनक थी।

प्रोग्राम के बाद डॉ. बॉहडॉन श्री माताजी को कर्फ़्यू से पहले घर पहुँचाने के लिये परेशान थे। जैसे ही वह तेज़ी से लेनिन ग्रेडस्काया स्ट्रीट से निकले, उनकी कार का टायर फ्लैट हो गया। उसी वक़्त sixty T.82 टैंक गाड़ी की तरफ बढ़ने लगे। हमने टायर बदलने की हर संभव कोशिश की लेकिन उसके नट जाम हो गये। हम निराश हो गये और सोचा कि जिसका डर था वही हुआ।

अन्त में, हमने श्री माताजी को समर्पण किया, ''श्री माताजी कृपया इस पंक्चर हुये टायर को आप ठीक कर दीजिये जैसे आपने रूस को बचाया।

श्री माताजी अपने पति सर सी.पी. से पीछे की सीट पर बैठे बातचीत कर रही थी, ''रूस में काफ़ी आराम मिला।''

सर सी.पी. ने प्रश्न किया, ''रूस में आराम मिलने जैसा क्या है ?''

मुझे आराम मिला क्योंकि मैं आसमान में तारों को देख सकती हूँ। यह

सुन्दरता लंदन में कोहरे के कारण नहीं दिखता। देखो, कैसे सारा आकाश इनकी चमक से जगमगा रहा है।''

सर सी.पी. ने नज़दीक आते हुये टैंकों की ओर इशारा किया। उन टैंकों को विद्रोही आर्मी कमांडर नियंत्रित कर रहा था। श्री माताजी ने टैंकों को मौन होकर निहारा। श्री माताजी का चेहरा गाड़ी के शीशे से दिखायी दे रहा था और हम उनकी आँखों की गहराई में ब्रह्माण्ड के मौन को देख पा रहे थे। ब्रह्माण्ड के मौन में आर्मी कमाण्डरों की दाँयी तरफ़ कौ मौन कर दिया, और वे वापिस मुड़ गये।

हमारी बोलती बंद हो गयी। दुनिया जैसे ख़त्म हो गयी। दुनिया जैसी कि हम जानते थे। अब हम चीज़ के मायने बदल गये थे- हमारा जीवन, हमारी मृत्यु, इन दोनों के बीच हमने क्या किया। पब्लिक प्रोग्राम में बताये गये श्री माताजी के शब्द हमारे सहस्त्रार से निकले, ''निर्विचार अवस्था वह बिन्दू है जहाँ आप ईश्वरीय शक्ति से जुड़ जाते हैं।''

उस शक्ति के साथ जो कि पदार्थ के कण-कण में व्याप्त है।

जो कि संसार के विचार एवं योजनाओं में व्याप्त है।

हर उस वस्तु में गतिशील है।

तुम उन सब तत्त्वों में व्याप्त हो जाते हो जिससे कि ये सुन्दर पृथ्वी बनी है।

तुम पृथ्वी में व्याप्त हो जाते हो।

तुम आकाश में व्याप्त हो जाते हो।

तुम प्रकाश में व्याप्त हो, ध्वनि में।

तभी टायर के जाम हुये पेच चमत्कारिक तरीके से ठीक हो गये।

हम जान गये कि ब्रह्माण्ड के मौन ने हमारा काम भी कर दिया।

***

अध्याय - 63

कबूतरों की सामूहिकता

श्री माताजी ने हमें सामूहिकता का महत्त्व बताया। एक बातचीत के दौरान उन्होंने एक मराठी कहानी का ज़िक्र किया कि कैसे कबूतर शिकारी के जाल में फँस गये।

''एक चिड़िया पकड़ने वाले ने एक जाल में बहुत सारा चुग्गा (अनाज के दाने) कबूतरों को पकड़ने के लिये डाल रखा रखा था। कबूतरों ने जाल को नहीं देखा और नीचे आकर अनाज के दाने खाने लगे। इस तरह वे जाल में फ़ँस गये। उन्होंने एक हल निकाला, ''अगर हम सब समान तेज़ी से उड़े, हम सारा जाल अपने साथ लेकर उड़ सकते हैं, और तब वह हमें पकड़ नहीं पाएगा।'' अतः वे जाल लेकर उड़ गये, चूहों के पास पहुँचे व उनसे जाल कटवा दिया और सब स्वतंत्र हो गये।''

2001 में टर्की में ईस्टर पूजा होने वाली थी। श्री माताजी अपनी वर्षगाँठ के लिये दिल्ली में थी, और जब टर्की की वीसा के लिये उन्होंने अप्लाई किया तो मालूम हुआ कि उनका पासपोर्ट एक्सपायर हो गया है। पासपोर्ट ऑफ़िस ने बताया कि कम से कम एक रात का समय नये पासपोर्ट के बनने में लगेगा। हमने पुरज़ोर कोशिश की कि ये कार्यवाही जल्दी हो जाय लेकिन क्योंकि ये एक Diplomatic Passport (राजनयिक पासपोर्ट) था और इसमें ज्यादा समय लगना तय था। इस कारण श्री माताजी ने अपनी टर्की की यादा रद्द कर दी।

टर्की के योगी बहुत मायूस हो गये, लेकिन उनकी शुद्ध इच्छा इतनी बलवती थी कि उन्होंने हार नहीं मानी, उन्हें कबूतरों वाली कहानी याद थी, और उड़ान से दिल्ली पहुँच गये।

श्री माताजी का हृदय उनके इस सामूहिक प्रेम से गद्‌गद्‌ हो गया,

''तुम्हारे प्यार (सामूहिक) की शक्ति बिल्कुल पृथ्वी की axis की तरह है, यह किसी को भी हिला सकती है। चिन्ता की कोई बात नहीं। तुम यह सब छोड़ दो। तुम्हारी सभी समस्याओं को सुलझाने के लिये बड़ी कमेटी (देवताओं) बैठी हुयी है। तुम्हें जरूरत है यह सब उन पर छोड़ने की।''

जैसे ही उन्होंने यह सब उस बड़ी कमेटी (देवताओं) पर छोड़ा, सूई घूम गयी। फोन की घंटी बजी : एक फ़रिश्ते जैसी आवाज़ बोली, ''कृपया आप अपना नया पासपोर्ट मिनिस्ट्री ऑफ़ एक्सर्टनल अफ़ेयर्स से प्राप्त कर लीजिये।''

शाम को माताजी ने अपने टर्की के बच्चों को रात्रिभोज पर बुलाया और उन्हें श्री कृष्ण लीला के कथानकों को मजेदार तरीके से सुनाने लगी :''जब श्री कृष्ण बाँसुरी बजाते, गोपियाँ सब कुछ छोड़ देतीं। वह क्या था ? वह नहीं बोलते थे : बस एक मुरली बजायी जाती थी और वे सभी उसे सुनते थे। वह क्या था ?

आनंद जिसे कि वे सब अपने भीतर महसूस करते थे, मुरली उनके भीतर आनंद भर देती थी- बस वे खड़े-खड़े सुनते रहते थे; बस यही। वह क्या था?

वह उस आनंद की सूक्ष्मता थी। इसी तरह तुम्हारा चित्त और दिमाग सहज पर होना चाहिये, स्वयं पर, ईश्वर के साथ एकाकार हो जाना चाहिये। अपना पूरा ध्यान ईश्वर पर रखो और तुम्हारे सब कार्य यंत्रवत हो जायेंगे। यंत्रों की तरह, सभी चीज़े कार्यान्वित हो जाएँगी।''

जैसे कि धरती माँ फूलों से आच्छादित होकर सुन्दर लगती है और अपनी खुशबू फैलाती है;

मैं तुम सब को इसी तरह फूलते-फूलते देखना चाहती और तुम्हारी खुशबू सभी देशों में फैले और पूरे संसार में,

सारा संसार एक नये संसार में बदल जाए

जिसमें ईश्वर का गौरव एवं आनंद हो।

***

अध्याय - 64

पीली पत्रकारिता

सन् 1985 में मर्व ग्रिफ़िन शो, लॉस एंजिल्स ने श्री माताजी को लाइव इन्टरव्यू के लिये बुलाया। तयशुदा समय पर मर्व ग्रिफ़िन ने उनसे स्टूडियो के बाहर इंतज़ार करवाया। उसने उन्हें लाइव इन्टरव्यू के समय भी अंदर नहीं बुलाया और कहा कि समय समाप्त हो गया है। बाद में पता चला कि किसी तांत्रिक गुरू के बहकावे में आकर उसने श्री माताजी को अनदेखा कर दिया।

श्री माताजी ने बताया, ''करूणा में तुम जो कुछ गलत है उसका पता लगा लेते हो। जब तुम्हें नकारात्मकता का पता चल जाता है तुम उससे दूर हट जाते हो, नहीं तो यह बहुत नुकसानदायक हो सकता है। अगर बहुत थोड़ी भी नकारत्मकता बिना जाने भीतर ही रह जाए, तो यह भीतर ही भीतर बढ़ने लगती है और बस से बाहर हो जाती है, और एक बड़ा पेड़ बन जाती है। अगर थोड़ा कुछ भी भीतर रह जाए तो तुम्हारे वाइब्रेशंस भी चले जा सकते है। बहुत ही सूक्ष्म चीज़ भी अन्तरआत्मा को प्रभावित कर सकती है, अतः प्रत्येक को इन सबसे सचेत रहना चाहिये।''

अतः इन नकारात्मकता से निपटने के लिये उन्होंने मर्व ग्रिफ़िन के खिलाफ़ कोर्ट में केस कर दिया। निश्चित रूप से परमचैतन्य भी पीछे नहीं रहा; कोर्ट के फैसला करने से पहली ही मर्व ग्रिफ़िन की कम्पनी दिवालिया हो गयी।

श्री माताजी ने बताया, ''मीडिया को कभी भी बदमाशों के हाथों और ज़मीन माफ़िया की कठपुतली नहीं बनने देना चाहिये, नहीं तो ये जनता के दिमाग को भी भ्रष्ट कर देंगे। अतः इनको स्वच्छ करना चाहिये।''

इससे भी बहुत पहले में भी ऐसी सफ़ाई की गयी थी। श्री माताजी 1987 में अपना फार्म हाउस 'प्रतिष्ठान' पूना में बना रही थी। बिना जाँच पड़ताल किये पूना के कलेक्टर ने उनके फार्म हाऊस के विरुद्ध नोटिस ज़ारी कर दिया। उसे यह पता नहीं था कि श्री माताजी ने वहाँ की ग्राम पंचायत से अनुमति ले ली थी। लेकिन एक शरारती संगठन ने प्रेस को अपने प्रभाव में लिया, और प्रेस ने श्री माताजी पर सामने से वार करना शुरू किया। उसने बहुत ही गलत ढंग से ख़बर छापी कि श्री माताजी का फार्म हाऊस अवैध है एवं अनाधिकारिक तरीके से बनाया गया है, और प्रतिष्ठान एक ट्रस्ट है ना कि प्राइवेट फार्म हाऊस।

श्री माताजी ने कहा, ''जो लोग आत्म साक्षात्कारी नहीं है वह सत्य को स्वीकार नहीं कर पाते। इस तरह के इल्ज़ाम जो मुझ पर लगाये गये हैं, वे न केवल मेरी प्रतिष्ठा बल्कि जो कार्य में कर रही हूँ उसे भी ख़राब कर रहे हैं। इन सबसे सहजयोगियों की भावनाओं को भी ठेस पहुँची हैं।''

उन्होंने तत्काल एक प्रेस कॉफ्रेंस बुलायी और सही तर्क उनके सामने रखे और फॉर्म हाऊस बनाने के अनुमति पत्र दिखाये। उन्होंने कहा, ''प्रतिष्ठान के बारे में सत्य जाने बिना तुमने मुझ पर इल्ज़ाम लगाए व जनता की नज़र में मेरी छवि बिगाड़ी। मैंने अपने फॉर्म हाऊस का नाम 'प्रतिष्ठान' रखा क्योंकि मेरे पूर्वज पैंठन से आये थे जिसे कि पहले प्रतिष्ठान कहा जाता था।

अगले ही दिन सभी अख़बार वालों ने सही समाचार छापे, सिवाय एक मराठी अख़बार 'सकल' के।

श्री माताजी ने सकल को लिखा, लेकिन क्योंकि वह एक शरारती संगठन अंध श्रद्धा निर्मूलन (महाराष्ट्र) के प्रभाव में था, उसने उनके सही तथ्य को छापने से मना कर दिया।

श्री माताजी बोलीं, ''प्रेस का कार्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण है लेकिन उन्हें दुष्ट दुश्मनों के हाथों का हथियार नहीं बनने देना चाहिये, जो कि देवी का सामना करने चले हैं।

इस तरह उन्होंने सकल के विरुद्ध प्रेस काँउसिल आफ़ इंडिया में केस दायर किया मानहानि का।

8 दिसम्बर 1987 में प्रेस काँउसिल ऑफ़ इंडिया ने श्री माताजी को सही ठहराया और सकल को ऑर्डर दिया कि सही तथ्य छापे।

देवी प्रसन्न हुयीं, ''सत्य दो नहीं हो सकते, इसे सिर्फ़ अन्तिम समझना चाहिये। हर एक वस्तु के दो रूप होने का विचार एक खतरनाक असंतुलन है। किसी भी दिन यह ग़ायब हो जाएगा, सहनशीलता भी लुप्त हो जाएगी। इस सहनशीलता के चलते हम उन लोगों को सहन करते हैं जो राक्षस वृत्ति के हैं। हम ऐसे समाज में रहते हैं, जहाँ पता नहीं चलता कि कौन सही है व कौन गलत है। इसलिये यह आधुनिक समय असमंजस से भरा है लेकिन जब तक झूठ का पर्दाफ़ाश नहीं होता, असमंजस (confusion) दूर नहीं हो सकता।

***

अध्याय - 65

गाड़ी खरीदी गयी

सन् 1995 में तुग़लियाती रूप में एक पब्लिक प्रोग्राम हुआ, तब रूस के बच्चों ने श्री माताजी के चरणों में एक कार बनाने वाली फ़ैक्ट्री का केटलॉग रखा, जिसमें वे काम करते थे। उस कैटलॉग में कुछ गाड़ियों के फोटो थे जो कि उनकी बनायी हुई थी। वे चाहते थे कि श्री माताजी उन्हें आशीर्वाद दें। श्री माताजी ने उसके पन्ने पलटे और मुस्कुराई, ''यह एक अच्छा विचार है कि मैं तुम्हारी फ़ैक्ट्री से कार खरीद लेती हूँ, इससे रूस की मैन्यूफ़ेक्चरिंग (Manufacturing) इंडस्ट्री को भी आशीर्वाद मिल जाएगा।

बच्चे खुशी से झूम उठे, और अगले ही दिन गाड़ी खरीद ली गयी। उन्होंने श्री माताजी का फोटो डैशबोर्ड पर रखा और फूलों से सजा दिया। जैसी ही वे फ़ैक्ट्री से बाहर निकले, कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर उन्हें रूस के माफ़िया गिरोह ने रोक दिया। उनेहंने कार को आगे बढ़ाने के लिये शुल्क (premium) माँगा।

योगियों को बुरा लगा, ''यह कार हमारी देवा माँ की है, तुम रिश्वत कैसे माँग सकते हो ?''

माफ़िया का बॉस उनके वाइब्रेशन्स की पवित्रता से नरम पड़ गया, ''तुम्हारी देवी माँ कौन है ?''

उन्होने डैशबोर्ड पर रखे फोटोग्राफ की ओर इशारा किया, ''श्री माताजी निर्मला देवी''।

उसने ध्यान से फोटोग्राफ की ओर देखा, उसका चेहरे के भाव बदलने लगे, ''मैं उनसे मिलना चाहूँगा।''

''ठीक है, हमारे साथ चलो।''

जब माफ़िया सरगना पहुँचा, श्री माताजी होटल के अपने कमरे में आराम कर रही थीं। योगियों ने सारा किस्सा मुझे बताया। उसके वाइब्रेशंस बहुत गर्म थे और मेरा सहस्रार एक बार घूम सा गया। मैंने जवाब दिया, ''मुझे अपराधियों से कोई सहानुभूति नहीं है। उनकी कुण्डलिनी किस तरह उठायी जा सकती है।''

योगी बोले, ''इस डॉन से हम अपनी कार किस तरह छुड़ा सकेंगे ?''

मैं बड़े असमंजसल में था। जब श्री माताजी जगीं, मैंने उन्हें सारी बात बताई, ''क्या यह संभव है कि कुछ लोग कुण्डलिनी जागृति के योग्य नहीं होते।''

उनकी आँखें करूणा से भरी हुयी थीं, ''तुम थोड़ा धैर्य रखो। अगर वे साधक हैं तो तुम क्या सोचते हो कि ईश्वर की करूणा और उन्हें आत्मसाक्षात्कार नहीं देगी? ईश्वर करूणा का सागर है। तुम करूणा के महासागर से मुख़ातिब हो। ये छोटी-छोटी बातें क्या महत्त्व रखती है ? क्या गलतियाँ तुम कर सकते हो ? क्या पाप कर सकते हो इस महासागर के सामने?

''अगले दिन एक स्त्री मुझसे मिलने आई। वह बोली, ''मैं एक वेश्या हूँ।''

मैंने कहा, ''ठीक है, कोई बात नहीं। मेरे साथ आओ हम कोशिश करते हैं।''

मैंने बताया, ''मैं वेश्याओ से दूर भागता हूँ।''

उन्होंने कहा, ''जब कोई वेश्या तुम्हारे पास आए, तुम उसे क्षमा कर सकते हो, और बताओ कि उसे क्या करना चाहिये, लेकिन स्वयं को उसमें लिप्त नहीं करो। वह खुद जान जाएगी कि उसे स्वयं ही सब समझना होगा।''

तब श्री माताजी ने मेरी ओर देखा और फिर दूर देखते हुये बोली, ''तुम परेशान मत हो, इसे मुझ पर छोड़ दो और बेहतर यही है कि उसे आत्म-साक्षात्कार दे दो।

उन्होंने बड़े धैर्य से डॉन की विशुद्धि पर घंटा भर काम किया। जैसे ही उसकी कुण्डलिनी उसके विशुद्धि चक्र को खोलने का प्रयत्न करती, वह अपने जुर्म कुबूल करने लगता, ''श्री माताजी, मैंने बहुत पाप किये हैं, क्या मैं क्षमा पा सकूँगा।''

श्री माताजी ने उसे धीरज बँधाते हुये कहा, ''मैं तुमसे तुम्हारे जुर्म मनवाना नहीं चाहती। तुम क्षमा किये गये हो ! ख़त्म ! वे सब गुज़रे हुये कल की बात थी; आज, मैं तुमसे वर्तमान की बात कर रही हूँ। क्या महत्वपूर्ण है वर्तमान - जिसमें तुम सहयजोगी बन गये हो, यह तुम्हारे आध्यात्मिक उत्थान का कमाल है जिस तरह तुमने यह सब हासिल किया है।''

मैं तुम में वह सुन्दरता देखती हूँ
तुम उस सुन्दरता को नहीं देखते इसीलिए मैं धैर्य रखती हूँ
लेकिन तुम्हें धैर्य रखना होगा।
अगर तुम स्वयं के साथ धीरज नहीं रखते,
तब मेरे धैर्य रखने से भी क्या फायदा ?

श्री माताजी
(1980-1128)

अगले दिन डॉन फ़्लावर्स बुके के साथ आया, ''अब मुझमें शान्ति है, मुझमें आनंद है और अब मैं सब के साथ वह बाँटना चाहता हूँ। मैंने अपना धन किसी के साथ नहीं बाँटा; मैं दूसरों का धन छीनता था।''

श्री माताजी मुस्कुराई, ''अब तुम सहजयोगी बन गये हो, क्या करोगे अब तुम ?''

डॉन, ''मैं भारत में प्याज भेजूँगा।''

''क्यों ?''

''क्योंकि भारत में प्याज़ की कमी है।''

श्री माताजी हँस पड़ीं, ''यहाँ इस विचार के साथ मत आना कि तुम ईश्वर को कुछ देने जा रहे हो ! नहीं ! तुम्हें लेना है। तुम उन्हें कुछ भी नहीं दे सकते। लेकिन विनम्रता पूर्वक अगर तुम स्वयं को प्रस्तुत करो, तो वह पसंद करेंगे।''

उसने विनम्रता पूर्वक अपनी माँग रखी, ''कृपया मुझे म्युनिसिपल चुनाव के लिये आशीर्वाद दीजिये।''

श्री माताजी : तुम घबराओ नहीं; अगर तुम नहीं भी चुने जाते तब भी कोई बात नहीं।''

बाद में शाम को श्री माताजी ने इस उदाहरण को सामूहिकता के सामने रखा, ''इस आदमी को देखो, कितना विनम्र बन चुका है वह, कितना संवेदनशील ! यही आदमी जो कि बड़ा माफ़िया था, कितना महान् व इज्ज़त के योग्य बन चुका है। यह माफ़िया डॉन इतना कैसे बदल गया ? उसे कोई भाषण नहीं दिया गया, नहीं उसे कुछ समझाया गया। यह एक घटना है, और इस घटना को कलियुग में ही घटित होना था, क्योंकि काले युग में ही लोग बदल (transform) जायेंगे। परिवर्तन के बाद, कोई भी बहुत ही सुन्दर और शुद्ध हो जाता है। तुम्हें ओरों को बदलने के लिये ज्यादा परेशान नहीं होना है या कोई त्याग करना है। जब तुम आत्म साक्षात्कार प्राप्त कर लेते हो तब तुम्हारा चित्त ज्योर्तिमय हो जाता है, और तुम अपनी संहारक आदतों को छोड़ते जाते हो, विनाशक विचार और क्रिया कलापों को भी छोड़ते जाते हो। ऐसा व्यक्ति समस्त संसार की भलाई के लिये काम करता है। अगर इंसान ही बदल जाय तो संसार की सभी समस्या समाप्त हो जाये।''

मैं बादलों की ओर नहीं देखती।
मैं सूर्य को देखती हूँ।
मैं सूर्य को मनुष्य में उदय होते देखती हूँ।
जब तुम्हारा सूर्य उग जाता है,
और तुम स्वयं को हर जगह देखते हो,
और तब परिवर्तित होते जाते हो।
तुम आश्चर्य से स्वयं का परिवर्तन देखते हो।

श्री माताजी
(1980-1124)

अध्याय - 66

माताश्री

सन् 2000 में सहज स्कूल के बच्चे श्री माताजी के पोस्टर धर्मशाला बाज़ार के चौराहों पर लगा रहे थे। नज़दीक की चाय की दुकान पर बैठा एक पत्रकार (Journalist) चाय पीते हुये उन्हें देख रहा था। वह उनके पीछे बस स्टेण्ड तक गया जहाँ वे खेलते हुये पोस्टर्स लगा रहे थे।

वह उनकी चमकती हुयी आँखों और आनंदित चेहरों से अपनी दृष्टि नहीं हटा पा रहा था। उनके पक्के इरादे और तरीके, सैनिकों की तरह अनुशासित थे, लेकिन जो सबसे ज्यादा उसे प्रभावित कर गया वह थी उनकी शांति और आनंद भरी मस्ती। वह बहुत देर तक श्री माताजी के चेहरे को देखता रहा, ''कौन है यह स्त्री ?'' अपनी चमकीली आँखों के साथ जवाब दिया, ''जरा अपने हाथों को फोटो की ओर फ़ैलाओ और तुम जान जाओगे।''

वह ठण्डे वाइब्रेशन्स से भर गया। उसे ऐसी प्रेरणा मिली कि उसने एक मशहूर अख़बार के पहले पन्ने पर श्री माताजी के बारे में एक आर्टिकल लिखा। उस आर्टिकल से साधकों का समंदर सा उमड़ पड़ा। लेकिन थोड़ा इंतज़ार; परम चैत्य यहीं तक नहीं रूका। इस आर्टिकल में इंडियन काउंसिल ऑफ मैनेजमेण्ट एक्सिक्यूटिव का ध्यान भी खींचा। उन्होंने पूछताछ की और श्री माताजी के मानवता में परिवर्तन लाने के कार्य से बड़े प्रभावित हुये। 23 फरवरी 2001 में उन्होंने श्री माताजी को अत्यन्त सम्मानित पुरस्कार 'मानव रत्न' से सुशोभित किया। इससे उन्हें ''माताश्री' - अत्यन्त पावन माँ का टाइटल मिला।

ब्रह्माण्ड का सम्पूर्ण विवेक हमारे अन्दर है।
वाइब्रेशन्स जो सोचते हैं, वे भी हमारे अन्दर है।
उन्हें हमें संगठित करने दें।
आओ, उन्हें हम अपने हाथों में खेले
हम उनसे बँधे हुये नहीं है लेकिन उन्हें
हमारी मदद करने का मौका दे।

-श्री माताजी

जय श्री माताजी

मेरे बचपन के सपने बहुत ही मज़ेदार थे और मुझे अचरज था कि वे कभी सच भी होंगे। मैं पत्थरों को इकट्ठा करती और कहती कि क्या ऐसे लोग भी होंगे जो पत्थर नहीं बल्कि सहृदय होंगे ?

ईश्वर कृपा से मैं आप लोगों से मिली।

आप सभी का सहजयोग अपनाने के लिये मैं धन्यवाद देती हूँ।

- श्री माताजी
दिवाली पूजा, टिवोली
1985

"I have disclosed all my secrets today
And found my soul by giving it away."
- Yunus Emre

Books by Author :

The Ascent
New Millenium
Gita Enlightened
Great Women of India
Realized Saints
Education Enlightened
Let oour Spirits Run Free
The Master's Trick
Resurrection
The Game Changer
The End Game

More about Sahaja Yoga Meditation of :
www.sahajayoga.org